कला शिक्षा

बालभारती हीरक महोत्सव

चौथी कक्षा

नि:शुल्क
वितरण के लिए

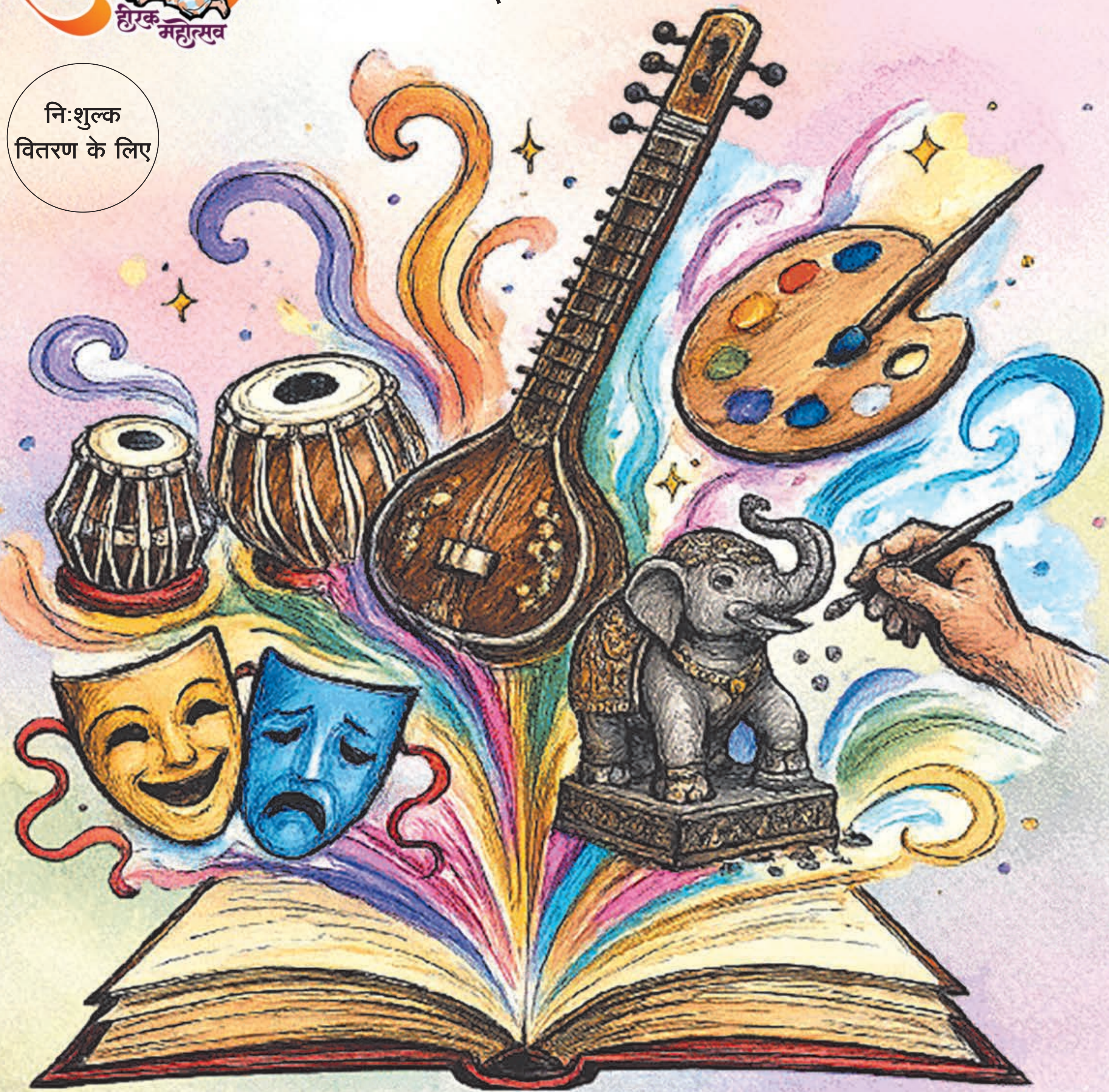

Tele MANAS
National Tele Mental Health Programme
14416

टेली मानस हेल्पलाइन

Tele MANAS (Tele Mental Health Assistance and Networking Across States)

(१४४१६/१८००-८९-१४४१६)

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्र द्वारा प्रायोजित योजना `टेली मानस` महाराष्ट्र राज्य में अक्तूबर २०२२ से कार्यान्वित की गई है। 'टेली मानस' कार्यक्रम के अंतर्गत हेल्पलाइन नंबर १४४१६ द्वारा निःशुल्क एकात्मिक और सर्वसमावेशक मानसिक स्वास्थ्य सेवा २४x७ प्रदान की जाती है। इसमें विविध मानसिक समस्याओं के लिए विशेषज्ञों द्वारा उपचार और समुपदेशन किया जाता है। 'टेली मानस' हेल्पलाइन पर आपके द्वारा दी गई जानकारी को पूर्णतः गोपनीय रखा जाता है। इस कारण विद्यार्थी अपनी समस्याएँ हेल्प लाइन नंबर पर कॉल करके निःसंकोच बताएँ तथा मन में उत्पन्न किसी भी शंका के संबंध में पूछकर उसके निराकरण और अपनी समस्या से संबंधित मार्गदर्शन प्राप्त करें और अन्य लोगों को भी इस सुविधा का लाभ उठाने हेतु प्रोत्साहित करें।

मनोदर्पण

शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद के अंतर्गत जुलाई २०२० से मनोदर्पण (८४४८४४०६३२) हेल्पलाइन की निःशुल्क दूरध्वनि सेवा आरंभ की गई है। यह सुविधा विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शन तथा सहायता प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रातः ८ बजे से संध्या ८ बजे की कालावधि में उपलब्ध कराई गई है। विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षक हेल्पलाइन पर संपर्क करके मार्गदर्शन एवं समुपदेशन प्राप्त कर सकते हैं।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास–२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी–४ दिनांक २५.०४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. ०९.०६.२०२६ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक शैक्षणिक वर्ष २०२६–२०२७ से निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई है।

समग्र शिक्षा

कला शिक्षा

चौथी कक्षा

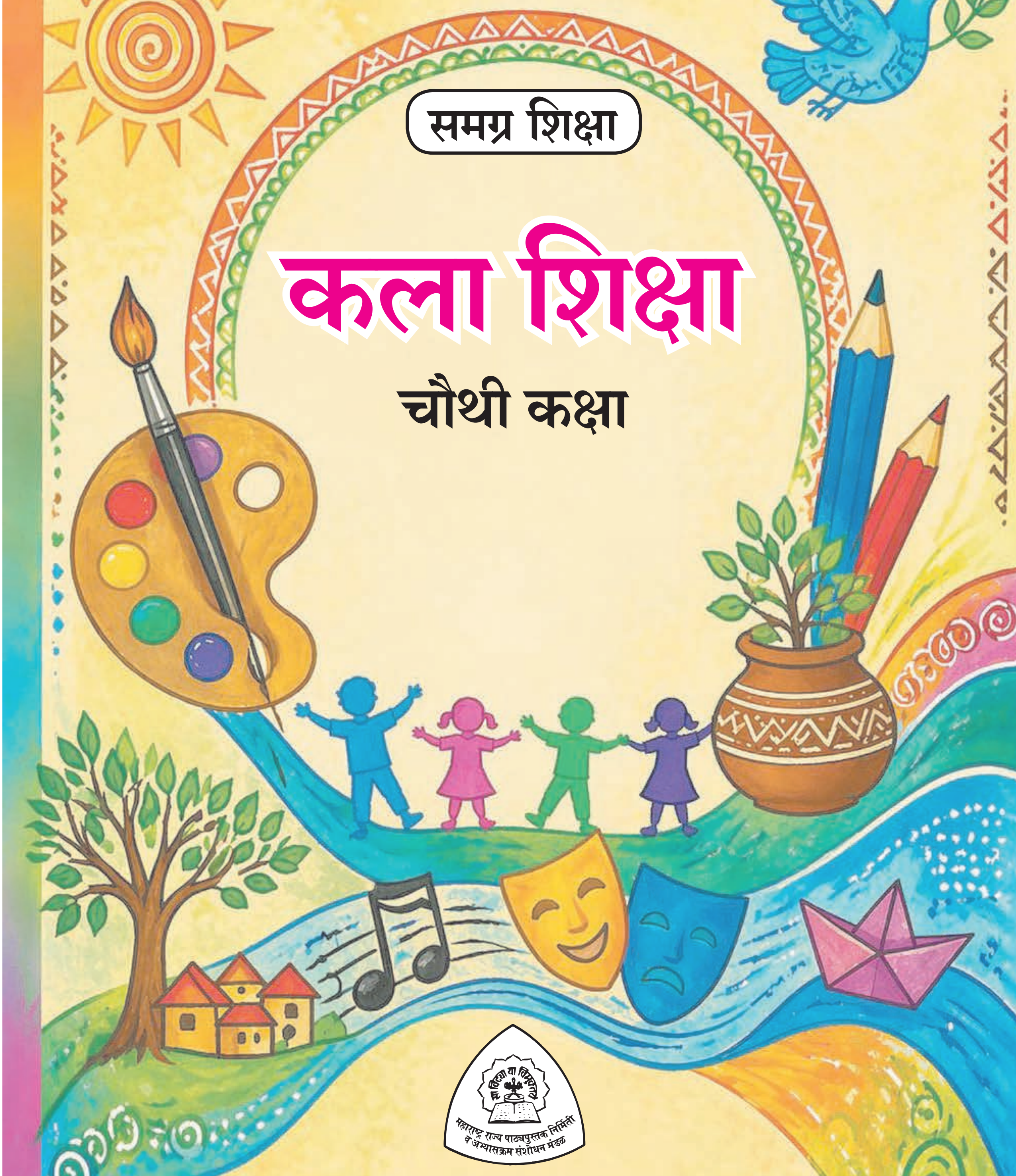

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे–४११००४

चौखट में दिए गए Q.R.Code को स्मार्ट फोन द्वारा स्कैन करने पर तुम्हें डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यपुस्तक में दिए घटकों से संबंधित दृक, श्रव्य एवं दृक–श्रव्य रूप में अध्ययन–अध्यापन सामग्री भी उपलब्ध होगी।

प्रथमावृत्ति : २०२६

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

'कला शिक्षा' विषय समिति

श्री शशिकांत देशमुख, (अध्यक्ष)
श्री शिवाजी हांडे (सदस्य)
श्री गोरक्षनाथ आबुज (सदस्य)
श्री श्रीकांत ढालकर (सदस्य)
श्रीमती पुनम भोपळे (सदस्य)
श्रीमती छाया माळवाळ (सदस्य)
श्रीमती स्नेहा गाडे (सदस्य)
डॉ. सुमेधा ठाकुर (निमंत्रित)
श्री नंदकिशोर नगरकर (निमंत्रित)
श्रीमती मृगया मोरे (निमंत्रित)
श्री अमोल जाधव (निमंत्रित)
श्री नितिन महामुनी (निमंत्रित)
श्रीमती वृषाली लेले (निमंत्रित)
श्रीमती निताली हरगुडे (निमंत्रित)
श्री ओंकार वैरागकर (निमंत्रित)
श्री अमोल बोधे (निमंत्रित)
श्रीमती जुई देशिंगकर (निमंत्रित)
श्रीमती रश्मी जोशी (निमंत्रित)
डॉ. गीतांजली बोरूडे (अभ्यासक्रम समन्वयक)
डॉ. अजयकुमार लोळगे (सदस्य सचिव)

समीक्षक

डॉ. दयानंद घोटकर (गुणवत्ता परीक्षक)
ॲड. संदेश साखरे (विधि तज्ञ)
प्रा. विलास पंडीत (CWSN तज्ञ)

संयोजक

डॉ. अजयकुमार लोळगे
विशेषाधिकारी कार्यानुभव (वि. का.)
प्र. विशेषाधिकारी कला (वि. का.)

हिंदी भाषांतर संयोजन

डॉ. अलका पोतदार
विशेषाधिकारी हिंदी (वि. का.)

हिंदी भाषांतर विषय तज्ञ

डॉ. प्रमोद शुक्ल — श्री महेश खैरनार
प्रा. मैनोद्दीन मुल्ला — सौ. रंजना पिंगळे

मुखपृष्ठ एवं अंतर्गत चित्राकृति :
श्री लक्ष्मीकांत काळे, श्रीमती प्राजक्ता केरकर, श्री मनोहर बावीस्कर, श्रीमती प्राची पोतदार, श्री सोहम ओतारी, श्री अजय पराडकर

अक्षरांकन : मुद्रा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जी.एस.एम.क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2026-27/Qty3,800
मुद्रक : M/s Shree Printers, Pune

निर्मिति

श्रीमती मिताली शितप
प्र. मुख्य निर्मिति अधिकारी

श्री संदीप आजगांवकर
निर्मिति अधिकारी

प्रकाशक

श्री हेमंत बाबर
प्र. नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई - २५

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, **भारत के लोग,** भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

भारत का संविधान

भाग ४ क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद ५१ क

मूल कर्तव्य- भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;
(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;
(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;
(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;
(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;
(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;
(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक हैं, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयुवाले अपने, यथास्थिति बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

राष्ट्रगान

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

बालमित्रो!

चौथी कक्षा में तुम सभी का स्वागत है। 'कला शिक्षा' (चौथी कक्षा) की यह पाठ्यपुस्तक तुम्हारे हाथों में सौंपते हुए बहुत आनंद हो रहा है।

तुम्हारे हाथों में आई 'कला शिक्षा' की यह पाठ्यपुस्तक सीखते हुए तुम्हें आनंद देने वाली और तुम्हारी कलाओं को बल देने वाली है। चित्र बनाना, रंग भरना, गीत गाना, अभिनय करना, नृत्य करना या विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से भावना व्यक्त करना आदि ये सभी कृतियाँ ही, कला है। अपने विचारों और भावनाओं को सुंदर ढंग से व्यक्त करने में कला सहायक होती है।

दृश्यकला, रंगमंच, संगीत, नृत्य एवं हावभाव, कला के ये चारों प्रकार इस पाठ्यपुस्तक में समाविष्ट हैं। दृश्यकला में तुम रेखांकन, स्मृतिचित्र, वस्तुचित्र, नक्काशीकाम, शिल्पकला, अक्षरलेखन और कला संस्कृति जैसी अनेक बातें सीखोगे। रंगमंच से अभिनय का अनुभव प्राप्त करोगे। संगीत में गायन एवं वादन सीखोगे तो नृत्य एवं हावभाव के माध्यम से शाररिक लय और ताल का तुम्हें अनुभव प्राप्त होगा।

इस पाठ्यपुस्तक के विविध उपक्रम तुम्हें स्वयं सोचने, कल्पना करने और नई बातें तैयार करने में तुम्हारी मदद करेंगे। कुछ उपक्रम तुम अकेले करोगे तो कुछ उपक्रम अपने मित्रों के साथ समूह में करोगे, इससे सीखना अधिक मजेदार और आनंददायी होगा।

इस पाठ्यपुस्तक में चित्र बनाते या कलाकृति की निर्मिति करते समय विभिन्न साधन-सामग्रियों के उपयोग करने के अवसर प्रदान किए गए हैं। यथासंभव पर्यावरणपूरक सामग्रियों का ही उपयोग करो। अपने परिसर में उपलब्ध वस्तुओं से ही सुंदर कलाकृति तैयार की जा सकती है, इस बात का तुम्हें अनुभव प्राप्त होगा।

तुम्हारे आस-पास की स्थानीय कला, कलाकार और संस्कृति की पहचान कराने के लिए कई उपक्रम और क्षेत्र भ्रमण भी पुस्तक में सुझाए गए हैं। इससे परंपरा से चले आ रहे कला वैभव भी तुम करीब से देख सकोगे। प्रत्येक विद्‍यार्थी अलग होता है और प्रत्येक विद्‍यार्थी में कुछ न कुछ विशेष गुण होते हैं। अत: इस पाठ्यपुस्तक के उपक्रम करते समय अपने विचार एवं कल्पना को मुक्त रूप से व्यक्त करो। गलती होने का डर मन में मत पालो। प्रयत्न करते रहो और कला सीखने का आनंद उठाते रहो। यह पाठ्यपुस्तक तुम्हारे अंदर के कलाकार को जागृत करेगी और तुम्हारे सीखने की यात्रा सुखद-सुंदर बनाएगी, इसका हमे पूरा विश्वास है।

चलो, आनंदित होकर कला सीखें और अपनी कल्पनाओं में रंग भरें।

(अनुराधा ओक)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.४

पुणे.

दिनांक : १९ अप्रैल २०२६
भारतीय सौर : वैशाख शु. २, १९४८
अक्षय तृतीया

शिक्षकों के लिए

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के मार्गदर्शक तत्वों के अनुसार कला शिक्षा विषय विद्‍यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। विद्‍यार्थियों की सर्जनशीलता को बढ़ावा देना, कल्पनाशीलता की क्षमता बढ़ाना, अभिव्यक्ति हेतु प्रोत्साहन देना और सीखने की प्रक्रिया को आनंददायक बनाना, यही कला शिक्षा पाठ्‍यक्रम का ध्येय है।

इस पाठ्‍यपुस्तक में दृश्य कला, रंगमंच, संगीत, नृत्य और हलचल इन चार कला प्रकारों का समावेश है। प्रत्येक कला प्रकार में विद्‍यार्थियों को निरीक्षण करने, प्रस्तुतीकरण, नवनिर्माण हेतु तथा स्वयं की कल्पना व्यक्त करने हेतु बढ़ावा मिलेगा।

कृतियुक्त उपक्रम, समूह कार्य, चर्चा, भूमिकाभिनय, कलाध्यापन पद्‍धति का उपयोग करके अध्ययन का अनुभव देना चाहिए। प्रत्येक उपक्रम में आनंददायी शिक्षा प्रक्रिया पर बल दिया जाना चाहिए। दृश्यकला, रंगमंच, संगीत, नृत्य और गतिविधि के माध्यम से विद्‍यार्थी अपने विचार, भावना और कल्पना सहज व्यक्त कर पाएँगे। इस पाठ्‍यपुस्तक में अधिक जानकारी दी गई है। अतः उस जानकारी पर प्रश्न या स्वाध्याय न कराते हुए प्रात्यक्षिकों पर अधिक बल देना अपेक्षित है।

यद्‍यपि इस पुस्तक को चार विभागों दृश्य कला, रंगमंच, संगीत, नृत्य और हलचल में विभक्त किया गया है तथापि वार्षिक नियोजन में इन चारों विभागों के घटक समान अनुपात में लिए जाएँ ताकि विद्‍यार्थियों को वर्ष भर चारों कला प्रकारों का आस्वाद एवं अनुभव मिलता रहे। क्यू आर कोड का उचित उपयोग करें। प्रत्येक विभाग के नीचे कुछ सूचनाएँ दी गई हैं।

शिक्षकों के लिए सूचना :

दृश्य कला

- विविध प्रकार की रेखा एवं आकार, उसी प्रकार सुंदर अक्षर लेखन के लिए विविध अक्षर अवयवों का अभ्यास करवा लें।
- प्राकृतिक घटक और मानव निर्मित घटक का अंतर समझाकर बताएँ और उनके उदाहरण दें।
- स्मरण चित्र बनाने के सोपान समझाकर बताएँ किंतु चित्र बनाते समय विद्‍यार्थी औरों की नकल न करें, इसका ध्यान रखें। इसी प्रकार प्रसंग का वर्णन करके स्मरण चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें।
- स्मरण चित्र और कल्पना चित्र के नमूने दिखाकर दोनों का अंतर स्पष्ट करवाएँ। उनकी कल्पना को बढ़ावा मिले ऐसी कहानी सुनाकर वातावरण निर्मिति करें।
- विविध प्रकार के चित्रों के नमूने, छायाचित्र, शिल्प कला के नमूनों का संग्रह करें और संग्रह का शैक्षणिक साहित्य के रूप में उपयोग करें।
- सभी विद्‍यार्थी दृश्य कला के चित्र रुचि से ही बनाएँगे ऐसा नहीं है। अतः उनमें इसके प्रति रुचि निर्माण करने के लिए प्रात्य-क्षिक के माध्यम से प्रेरक अध्ययन अनुभव देना आवश्यक हो जाता है। इस दृष्टि से कोई विद्‍यार्थी नये सिरे से कुछ दृश्य कला प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहा हो तो उसे प्रोत्साहित करें और उसका मार्गदर्शन करें।
- स्थानीय कला के प्रकार तथा कलाकार का परिचय करवाएँ। संभव हो तो स्थानीय कलाकारों की कार्यशाला में क्षेत्र भ्रमण का आयोजन करें।

रंगमंच

- कक्षा में आनंददायी वातावरण की निर्मिति करके स्वाभाविक, प्राकृतिक कृति, गतिविधियाँ एवं मूक अभिनय करवा लें। छोटे-छोटे समूह बनाकर प्रसंग प्रस्तुत करने के लिए कहें।
- प्राणी, पक्षी, प्रकृति के विविध घटकों की भूमिका देकर अभिनय करवा लें।
- स्वयं के संवाद एवं गतिविधि प्रस्तुत करने के अवसर दें। चित्र दिखाकर प्रश्न पूछें। जैसे- 'तुम्हें इस चित्र में क्या दिखाई देता है?'

- प्रत्येक विद्यार्थी को भूमिका देकर प्रस्तुतीकरण में सहभागी बनाएँ। दैनिक अनुभव वाले सहज प्रसंग चुनें।
- प्रस्तुतीकरण में गतिविधियाँ करते समय सुरक्षा पर ध्यान दें। उपलब्ध साधनों का उपयोग विविध प्रकार से करने की आदत डालें।
- एक समूह के प्रस्तुतीकरण का अन्य समूहों के विद्यार्थियों को निरीक्षण करने के अवसर दें। निरीक्षणात्मक अभिप्राय देने के लिए प्रेरित करें। नाट्यगृह कक्ष की संकल्पना अमल में लाएँ।

संगीत

- कक्षा में आनंददायी तथा उत्साही वातावरण निर्माण करके विद्यार्थियों का सक्रिय सहभाग लें।
- गाने सिखाते समय स्वयं गीत सुनकर प्रस्तुतीकरण करें। गाना सिखाते समय गीत के छोटे-छोटे भाग करके सिखाएँ।
- ताल, लय और सुर की पहचान सरल उदाहरण द्‌वारा करवा लें। ताल के लिए ताली का उपयोग करके गाने को अधिक रंजक बनाएँ। एकल और युगल गानों के लिए प्रोत्साहित करें।
- लोक संगीत जैसे वासुदेव गीत, पोवाड़ा, भारूड़, भजन, चक्की के गीत, इनकी पहचान करा दें और प्रात्यक्षिक के साथ अभ्यास करवाएँ।
- उपलब्ध वाद्‌यों का (ढोल, मंजीरा, झाँझ, हार्मोनियम, तबला आदि) उपयोग करके ताल की समझ उनमें निर्माण करवा दें। छोटे-छोटे समूह में विभाजित करके गीत प्रस्तुत करवा लें।
- प्रत्येक विद्‌यार्थी को गाने अथवा वादन में सहभागी होने का अवसर दें और उनके आत्मविश्वास को बढ़ावा दें।
- उपलब्ध साधनों या वीडियो के माध्यम से स्वर तथा अलंकारों का सुर-ताल में अभ्यास करवा लें।
- **प्रथम पृष्ठ के क्यू आर कोड का उपयोग करके गाने सुनवाएँ और सिखाएँ। समूह एवं वैयक्तिक प्रस्तुतीकरण के द्‌वारा मूल्यांकन करें।**

नृत्य एवं गतिविधियाँ

- कक्षा में आनंदित और उत्साहित वातावरण की निर्मिति कर प्रत्येक विद्‌यार्थी को नृत्य में सहभागी होने के लिए प्रेरित करें।
- स्वाभाविक, प्राकृतिक गतिविधियों से नृत्य की पहचान करा दें।
- दैनिक गतिविधियाँ (जैसे- चलना, कूदना, घूमना) को नृत्य में रूपांतरित करने के लिए कहें।
- ताल, लय एवं गति की जानकारी खेल-खेल में करवा लें ।
- विविध भाव (आनंद, दुख, आश्चर्य) चेहरे के हावभाव व्यक्त करने में मार्गदर्शन करें।
- छोटे-छोटे समूहों में साधारण नृत्य प्रयोग प्रस्तुत करने हेतु प्रोत्साहन दें। प्रत्येक विद्‌यार्थी को नृत्य में स्वयं अपनी शैली में अभिव्यक्त होने का अवसर दें।
- नृत्य करते हुए शारीरिक सुरक्षा, योग्य अंतर रखना तथा योग्य पोशाक परिधान करने संबंधी सूचना दें।
- उपलब्ध साधन-सामग्री (संगीत, जगह) का योग्य उपयोग करके विविध प्रकार के नृत्य अनुभव देने का प्रयत्न करें ।
- नृत्य के अंत में उन्होंने क्या अनुभव पाया, क्या सीखा, इसपर संक्षेप में चर्चा कराएँ। सर्जनशीलता और आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देने वाला सकारात्मक अभिप्राय दें।

सभी प्रकार के विद्‌यार्थियों का सर्वसमावेशी विचार करके पाठ्‌यपुस्तक तैयार की गई है। प्रत्येक विद्‌यार्थी को अपनी क्षमता के अनुसार सहभागिता का अवसर मिले, उनकी कलाओं और गुणों को प्रोत्साहन मिले, इसके लिए पाठ्‌यपुस्तक में उपक्रमों की रचना संवेदनशील दृष्टि से रखें।

प्रत्येक कला समूह के लिए दिए गए पाठ्यक्रम उद्देश्य और क्षमता, उसी प्रकार अध्ययन निष्पत्ति का आधार लेकर अधिक प्रभावशाली अध्यापन करेंगे यही अपेक्षा है। इससे कला विषयों की ओर समग्र दृष्टि से देखने वाला कौशलपूर्ण विद्‌यार्थी तैयार हो और वह आनंददायी जीवन जी सके, यही उद्‌देश्य है। आओ, इसके लिए हम सब मिलकर प्रयत्न करें।

कला शिक्षा विषय समिति
पाठ्‌यपुस्तक मंडळ, पुणे

४ थी कक्षा

विषय : दृश्य कला

पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 1 : कला के माध्यम से मानवी भावनाओं का अन्वेषण, चित्र और अभिव्यक्ति करने का आत्मविश्वास विकसित करना।

क्षमता : C – 1.1 : दैनिक जीवन के भाव, भावना और कल्पना चित्रित करनेवाली प्रतिमा उत्साह से तैयार करता है।

क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति
04AE01	परिसर के छोटे घटकों पर आधारित स्मरण से चित्रण करता है।
04AE02	विविध काल्पनिक कथाओं के प्रसंग स्वयं की कल्पकता से चित्र में प्रस्तुत करता है।
04AE03	प्राकृतिक घटकों के विविध आकारों की नक्काशी में कल्पकता का उपयोग करता है।
04AE04	परिसर के छोटे घटकों के स्मरण चित्र बनाता है / निकालता है।

क्षमता : C – 1.2 : दृश्य कला में परस्पर समन्वय साधकर काम करते हुए विविध कल्पनाओं और प्रतिसादों की चर्चा करता है।

क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति
04AE05	अंक/अक्षरों के अवयव का अभ्यास करता है और उनपर उँगली फिराता है।
04AE06	अंक / अक्षरों के अनुपात को समझकर लेखन करता है।
04AE07	आविष्कार के विविध माध्यमों का उपयोग करके अंक / अक्षरों की रचना करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 2 : कला के अभ्यास के लिए अपनी कल्पनाशक्ति और सर्जनशीलता का मुक्त उपयोग करना।

क्षमता : C – 2.1 : दैनिक निरीक्षण, वैयक्तिक अनुभव, और भावनाओं को चित्रित करते हुए दृश्य घटकों के विविध संयोजनों का (रेखा, आकार, रंग, अवकाश, पोत) सर्जनशीलता से उपयोग करता है।

क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति
04AE08	विविध प्रकारों के अनुसार रेखाओं का रेखांकन करता है।
04AE09	उपकरणों के बिना विविध आकारों का सरल पद्धति से रेखाटन करता है।
04AE10	दैनिक उपयोग के परिचित घटक वस्तुओं का सरल पद्धति से चित्रण करता है।

क्षमता : C – 2.2 : कक्षा में समाहित की गई कलाकृति के दृश्य घटक, संकल्पना और विरोधाभास स्पष्ट करता है।

क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति
04AE11	भौमितिक आकारों का, परिसर की अन्य वस्तुओं के आकारों से संबंध जोड़कर साम्यभेद स्पष्ट करता है।
04AE12	निरीक्षण से अनुभूत घटक वस्तुओं का वर्गीकरण करके चित्रण करता है।
04AE13	चित्र में मुक्त रूप से स्वयं की कल्पना प्रस्तुत करके वर्णन करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 3 : कला की मूलभूत प्रक्रिया, साहित्य और तकनीक का आविष्कार करना।

क्षमता : C – 3.1 : दृश्य कला में काम करते हुए उपयोग में लाई जाने वाली सामग्री, साधन और तकनीक का चयन करता है।

क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति
04AE14	मुद्रा लेने हेतु विविध रंग माध्यमों का उपयोग करता है।
04AE15	विविध प्रकार की पोत(Texture) निर्माण करता है।

क्षमता : C – 3.2 : वैयक्तिक और सामूहिक दृश्य कलाकृति तैयार करते हुए नियोजन, कार्यान्वयन तथा प्रस्तुतीकरण के सोपानों का पालन करता है।

क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति
04AE16	उपलब्ध साधन / सामग्री का रचनात्मकता से उपयोग करके सजावट करता है।
04AE17	परिसर में उपलब्ध पर्यावरणपूरक सामग्री से त्रिविमीय रचना करता है।
04AE18	मिट्टी का उपयोग करके त्रिमित आकारों के प्रतीकात्मक चिह्न साकार करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 4 : आस–पास के प्राकृतिक सौंदर्य की खोज करना एवं विविध स्थानीय कलाप्रकार और सांस्कृतिक रीति–रिवाजों की रुचि निर्माण करना।

क्षमता : C – 4.1 : प्रकृति के दृश्य घटक पहचानता है और उनके कलात्मक गुणों का वर्णन करता है।

क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति
04AE19	प्रकृति के विविध घटकों की कलात्मक विशेषताओं का वर्णन करता है।

क्षमता : C – 4.2 : स्थानीय कला प्रकार और संस्कृति के संबंध में उत्सुकता दर्शाता है।

क्रमांक	अध्ययन निष्पत्ति
04AE20	स्थानीय कला प्रकार में से मनपसंद कला प्रकार के घटकों के चित्र, फोटो, कतरनें जमा करके प्रकल्प तैयार करता है।
04AE21	विविध कला प्रकारों में से स्थानीय कला संस्कृति के साथ संबंध जोड़कर जानकारी विशद करता है।

विषय : रंगमंच	
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 1 : कला के माध्यम से मानवी भावनाओं का आत्मपरीक्षण, प्रस्तुतीकरण और अभिव्यक्ति करने का आत्मविश्वास अनुभव से विकसित करना।	
क्षमता : C – 1.1: नाट्यकला के प्रसंग और अनुभव उसी प्रकार से विविध घटकों और पात्रों का उत्साह से प्रस्तुतीकरण करता है।	
04AE22	परिसर के दैनिक प्रसंग का निरीक्षण करके प्रस्तुतीकरण करता है।
क्षमता : C – 1.2 : नाट्यकला में परस्पर समन्वय साधकर काम करते हुए स्वयं के विचारों और प्रतिसाद की चर्चा करता है।	
04AE23	परिसर के परिचित व्यवसायी व्यक्तियों की आवाजों की ज्यों की त्यों नकल करता है।
04AE24	सहपाठियों के प्रस्तुतीकरण का निरीक्षण करके प्रतिक्रिया देने के लिए कहें।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 2 : कला के अभ्यास के लिए अपनी कल्पनाशक्ति और सर्जनशीलता का मुक्त उपयोग करना।	
क्षमता : C – 2.1 : दैनिक निरीक्षण, वैयक्तिक अनुभव और भावनाओं का चित्रण करते हुए सर्जनशीलता के साथ दृश्य घटकों के विविध संयोजनों का उपयोग करता है।	
04AE25	नाट्य प्रस्तुतीकरण हेतु आवश्यक सामग्री जुटाकर एकत्रित करता है।
04AE26	नाट्य प्रस्तुतीकरण की पूर्व तैयारी के लिए सामग्री जमा करके योग्य स्थान पर रखता है।
04AE27	परिसर में उपलब्ध ध्वनि निर्माण करने वाली वस्तुओं को जमा करके नाटक का पार्श्वसंगीत निर्माण करता है।
क्षमता : C – 2.1 : विविध पात्र, भूमिका, प्रसंग, अवधि और रंगभूमि का सामान इकट्ठा करके प्रतिदिन की गतिविधियों पर आधारित नाटक तैयार करके कक्षा में प्रस्तुत करता है।	
04AE28	प्रस्तुतीकरण के बाद चर्चा के अंतर्गत आई सूचनाओं का विचार करके पुनः प्रस्तुतीकरण करता है।
04AE29	अन्य लोगों के प्रस्तुतीकरण पर व्यक्तिगत एवं समूह में प्रतिक्रिया देता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 3 : कला की मूलभूत प्रक्रिया, सामग्री एवं तकनीकों का आविष्कार करना।	
क्षमता : C – 3.1 : नाट्य कला में काम करते हुए उपयोग में लाई जानेवाली सामग्री, साधन एवं तकनीकों का चयन करता है।	
04AE30	विविध प्रस्तुतीकरणों में आवश्यक सामग्री की जानकारी लेकर पर्यायी सामग्री की निर्मिति करता है।
04AE31	प्रस्तुतीकरण के लिए पात्र के अनुसार वेशभूषा के लिए आवश्यक सामग्री का चयन करता है और प्रस्तुतीकरण करता है।
04AE32	नाटक की भूमिका के अनुसार पात्रों के लिए कागज के मुखौटे तैयार करता है।
क्षमता : C – 3.2 : वैयक्तिक और सामूहिक नाटक प्रस्तुत करते समय नियोजन, कार्यान्वयन और प्रस्तुतीकरण के सोपानों का पालन करता है।	
04AE33	वैयक्तिक अथवा सामूहिक प्रस्तुतीकरण का सहपाठियों के साथ अभ्यास करता है।
04AE34	तकनीकी साधनों की सहायता से प्रस्तुतीकरण का अभ्यास करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 4 : आस–पास का प्राकृतिक सौंदर्य खोजकर तथा विविध स्थानीय कला प्रकार एवं सांस्कृतिक रीति–रिवाजों की रुचि निर्माण करना।	
क्षमता : C – 4.1 : प्रकृति के नाट्य और हलचलों के घटक पहचानता है तथा उनके कलात्मक गुणों का वर्णन करता है।	
04AE35	प्रकृति के विविध पहर दिखाने के लिए प्रस्तुतीकरण में प्राकृतिक प्रकाश का उपयोग करता है।
04AE36	पाठ्यपुस्तक के पाठों या कविताओं के प्रस्तुतीकरण में प्राकृतिक सामाग्रियों का उपयोग करता है।
04AE37	मानवी शरीर कृति से प्रस्तुतीकरण में प्राकृतिक साधनों के घटकों का आकार तैयार करता है।
क्षमता : C – 4.2 : स्थानीय कलाकार और संस्कृति के विषय में उत्सुकता दर्शाता है।	
04AE38	परिसर में मनाए जाने वाले त्योहार– समारोह का निरीक्षण करके आनंद लेता है।
04AE39	स्थानीय लोक कलाकारों और उनकी कला के संबंध में जानकारी जानकर कला को योग्य प्रतिसाद देता है।

विषय : संगीत	
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 1 : कला के माध्यम से मानवी भावनाओं का अन्वेषण, प्रस्तुतीकरण और अभिव्यक्ति करने का आत्मविश्वास अनुभव से विकसित करना।	
क्षमता : C – 1.1 : परिचित संगीत कला का अभ्यास, प्रस्तुतीकरण उत्साह से करता है।	
04AE40	संगीत ध्यान से सुनकर प्रस्तुतीकरण करता है।
04AE41	गीतों का अभ्यास करते समय हाथों की गतिविधि, तालियाँ उसी प्रकार चुटकियों का उपयोग करता है।
क्षमता : C – 1.2 : संगीत कला में सामूहिक काम करते हुए स्वयं के विचारों और प्रतिसादों की चर्चा करता है।	
04AE42	देशभक्तिपरक गीतों में राष्ट्रीय एकात्मकता का महत्त्व पहचानता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 2 : कला के अभ्यास के लिए अपनी कल्पनाशक्ति और सर्जनशीलता का मुक्त उपयोग करना।	
क्षमता : C – 2.1 : विविध प्रकार के गायन, वादन (एकल, युगल और समूह) संगीत संयोजन के गाने और ताल का अभ्यास और प्रस्तुतीकरण का संयोजन करता है।	
04AE43	गायन वादन की लय और ताल समझकर एकल गीत प्रस्तुत करता है।
04AE44	गायन एवं वादन के युगल तथा समूह संगीत प्रकार का अभ्यास करके प्रस्तुतीकरण करता है।
क्षमता : C – 2.2 : गीत और अभिव्यक्ति के द्‌वारा कक्षा में प्रस्तुत की गई विविध संगीत शैली में संगीत कला के घटकों की तुलना एवं विरोधाभास (लय, ताल, सुर, भाव) दिखाता है।	
04AE45	भिन्न गीत प्रकार सुनकर उनके अंतर पहचानता है।
04AE46	शास्त्रीय संगीत के स्वर एवं अलंकार की संक्षेप में जानकारी बताता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 3 : कला की मूलभूत प्रक्रिया सामग्री और तकनीक का आविष्कार करना।	
क्षमता : C – 3.1 : संगीत संगीत कला का प्रस्तुतीकरण करते समय ध्वनि, वाद्‌य संयोजन के साथ उनका चयन करता है।	
04AE47	परिसर की संगीतोपयोगी ध्वनि सुनकर उसका अनुकरण करता है।
04AE48	उपलब्ध सामग्री का उपयोग करके वादन का प्रस्तुतीकरण करता है।
क्षमता : C – 3.2 : प्रस्तुतीकरण और अभ्यास में सहभागी होने के लिए संगीत का चयन करते समय विविध कल्पना सुझाता है।	
04AE49	अभंग एवं पोवाड़ा प्रस्तुतीकरण में उपयुक्त वाद्‌यों का चयन करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 4 : प्रादेशिक कला एवं सांस्कृतिक परंपरा की सौंदर्य संबंधी संवेदनशीलता के विस्तार से स्वयं को परिचित कराना।	
क्षमता : C – 4.1 : प्रकृति के संगीत घटक पहचानता है एवं उनके कलात्मक गुणों का वर्णन करता है।	
04AE50	प्रकृति की विविध ध्वनियों का निरीक्षण करके अनुकरण करता है।
04AE51	स्थानीय त्योहार उत्सव से संबंधित संगीत की जानकारी बताता है।
क्षमता : C – 4.2 : स्थानीय कला प्रकार और संस्कृति के विषय में उत्सुकता दर्शाता है।	
04AE52	स्थानीय पारंपरिक कला प्रकारों की जानकारी बताता है।
04AE53	स्थानीय पारंपरिक संगीत से लोकजीवन और संस्कृति की पहचान स्पष्ट करता है।

विषय : नृत्य एवं गतिविधियाँ	
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 1 : कला के माध्यम से मानवीय भावनाओं का अन्वेषण, प्रस्तुत करने एवं अभिव्यक्ति करने का आत्मविश्वास अनुभव के माध्यम से विकसित करना।	
क्षमता : C – 1.1 : परिचित नृत्य गतिविधियों का अभ्यास एवं प्रदर्शन उत्साहपूर्वक प्रस्तुत करता है।	
04AE54	परिचित नृत्य की शारीरिक गतिविधियों का क्रमबद्ध एवं लयबद्ध प्रस्तुतीकरण करता है।
क्षमता : C – 1.2 : नृत्य एवं गतिविधियों के सामूहिक प्रस्तुतीकरण के समय कल्पनाओं एवं प्रतिक्रियाओं पर चर्चा करता है।	
04AE55	नृत्य एवं गतिविधियों के सामूहिक प्रस्तुतीकरण में सहभाग लेना।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 2 : कला के अभ्यास के लिए अपनी कल्पनाशक्ति और सर्जनशीलता का मुक्त रूप से उपयोग करना।	
क्षमता : C – 2.1 : दैनिक गतिविधियों एवं व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर नृत्य एवं गतिविधियों का क्रम तैयार कर प्रस्तुत करता है।	
04AE56	दैनिक जीवन में की जाने वाली शारीरिक गतिविधियों को नृत्य के माध्यम से, लयबद्ध ढंग से मंच पर प्रस्तुत करता है।
क्षमता : C – 2.2 : कक्षा में परिचित कराई गई विभिन्न नृत्य एवं गतिविधि शैलियों की अभिव्यक्ति, ताल, मुद्रा तथा विषय में समानताओं एवं भिन्नताओं के आधार पर तुलना करता है।	
04AE57	नृत्यात्मक गतिविधियों के माध्यम से दो तालों को समझकर उनकी तुलना करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 3 : कला की मूलभूत प्रक्रियाओं, सामग्री एवं तकनीकों का प्रदर्शन करना।	
क्षमता : C – 3.1 : नृत्य में प्रयुक्त वाद्य, वेशभूषा, नृत्य–रचना तथा अन्य व्यवस्थाओं का चयन करता है।	
04AE58	नृत्य की प्रस्तुति के लिए गीत एवं वाद्यों का चयन करता है।
04AE59	नृत्य में उपयोग हेतु विषयानुसार विभिन्न शारीरिक गतिविधियों का चयन करता है।
क्षमता : C – 3.2 : नृत्य एवं गतिविधियों का क्रम चुनते समय प्रस्तुतीकरण एवं अभ्यास में भाग लेते हुए अपने विचारों का योगदान देता है।	
04AE60	अपनी कल्पना के अनुसार कथानक पर आधारित नृत्य एवं गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुतीकरण करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 4 : प्रादेशिक कला एवं सांस्कृतिक परंपराओं में निहित सौंदर्यबोध के विस्तार से स्वयं को परिचित कराना।	
क्षमता : C – 4.1 : प्रकृति में विद्यमान संगीत के तत्त्वों को पहचानकर उनके कलात्मक गुणों का वर्णन करता है।	
04AE61	नृत्य की गतिविधियों एवं प्रकृति की गतिविधियों की तुलना कर उनका कलात्मक वर्णन करता है।
क्षमता : C – 4.2 : स्थानीय कला–प्रकारों एवं संस्कृति के प्रति उत्सुकता प्रदर्शित करता है।	
04AE62	संस्कृति के महत्व को बताने वाले स्थानीय कला प्रकारों का उत्साहपूर्वक प्रस्तुत करता है।

राज्यगीत

जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ।।धृ।।

भिती न आम्हा तुझी मुळी ही गडगडणाऱ्या नभा
अस्मानाच्या सुलतानीला जबाब देती जिभा
सह्याद्रीचा सिंह गर्जतो शिव शंभू राजा
दरी दरीतून नाद गुंजला महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ।।१।।

काळ्या छातीवरी कोरली, अभिमानाची लेणी
पोलादी मनगटे खेळती, खेळ जीवघेणी
दारिद्र्याच्या उन्हात शिजला
निढळाच्या घामाने भिजला
देश गौरवासाठी झिजला
दिल्लीचे ही तख्त राखितो, महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा ।।२।।

विषय सूची

दृश्य कला

घटक	पृष्ठ
१. नक्काशी का आनंद	०१
२. अक्षरों की दुनिया में	१०
३. वस्तुओं की दुनिया में	१४
४. मेरे चित्र, मेरी कल्पना	१७
५. त्रिविमीय कलाकृति	२१

नाट्य

घटक	पृष्ठ
६. चलो, अभिनय करें	२६
७. आओ, नाटक की तैयारी करें!	३१
८. चलो, रंगमंच पर	३८

संगीत

घटक	पृष्ठ
९. आओ, सब मिलकर गाएँ !	४५
१०. एकल, युगल एवं समूह गीत	५१
११. गीत परंपरा के	५७
१२. स्वरों की लता	६४
१३. आओ, ताल मिलाएँ	६७

नृत्य

घटक	पृष्ठ
१४. नृत्य करो आनंद से	७३
१५. नृत्यमय जीवन	७८
१६. नृत्य के साथी	८३
१७. पारंपरिक नृत्य	८७
१८. कला संस्कृति	९१

दृश्य कला

१. नक्काशी का आनंद...

रेखांकन से तात्पर्य है-रेखाओं की विविध रचनाओं से किया गया रेखाटन। चित्रकला में रेखांकन को अत्यधिक महत्व प्राप्त है। रेखाओं का उपयोग करके हम विविध आकार, चित्र और वस्तु तैयार कर सकते हैं। रेखांकन के कारण चित्र रेखाटन का आत्मविश्वास बढ़ता है।

नक्काशी का काम करते समय रेखाओं का उपयोग बहुत महत्वपूर्ण होता है। भिन्न-भिन्न रेखाओं के उपयोग से सुंदर नक्काशी तैयार की जा सकती है। फूल, पत्ते, भौमितिक एवं आलंकारिक आकारों में आकर्षक नक्काशी काम तैयार होता है। रेखांकन का अभ्यास करने पर अधिक सुंदर और आकर्षक नक्काशी तैयार की जा सकती है। रेखांकन करने आना नक्काशी करने का मूलभूत साधन है।

नक्काशी काम में भिन्न-भिन्न रेखा, आकार, रंग, पोत (सतह) और ठप्पों का उपयोग करके आकर्षक और सुंदर चित्र तैयार किया जा सकता है।

प्रकृति के विविध घटकों का उपयोग करके भी सुंदर कलाकृति तैयार की जा सकती है। इसके फलस्वरूप हमारी कल्पनाशीलता और सौंदर्य दृष्टि में वृद्धि होती है।

रेखाओं के प्रकार एवं उनके नमूनों की उचित जोड़ियाँ मिलाओ।

अ गुट **रेखाओं के प्रकार**	**ब गुट** **रेखाओं के नमूने**	
१. सर्पाकार रेखा-	अ)	\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\
२. खड़ी रेखा -	ब)	---------------------
३. आड़ी रेखा-	क)	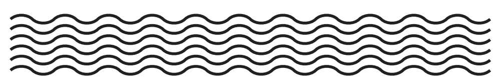
४. तिरछी रेखा-	ड)	|||||||||||||||||||||||||||||||||||||
५. खंडित रेखा-	इ)	________________________

- विद्यार्थियों को आसान रेखाओं से शुरुआत करके धीरे-धीरे आकृति और नमूने तैयार करने में मार्गदर्शन करें।
- पेन्सिल/पेन के अतिरिक्त अन्य किन्हीं भी साधनों का उपयोग करके रेखा के प्रकारों का अभ्यास करवा लें।

CG -2
C- 2.1
LO-04AE08

- चित्र के विविध घटक/वस्तु देखकर उनमें रेखाओं के प्रकार खोजो और लिखो।

१) चकली

....

२) पानी की लहरें

....

३) ऊँची इमारत

....

४) चींटियों की कतार

....

- आओ रेखाओं का उपयोग करके चित्रकृति पूर्ण करें।

साथ में दिए गए 'अ' चित्र का निरीक्षण करो। विविध रेखाओं का उपयोग करके 'ब' चित्रकृति पूर्ण करो।

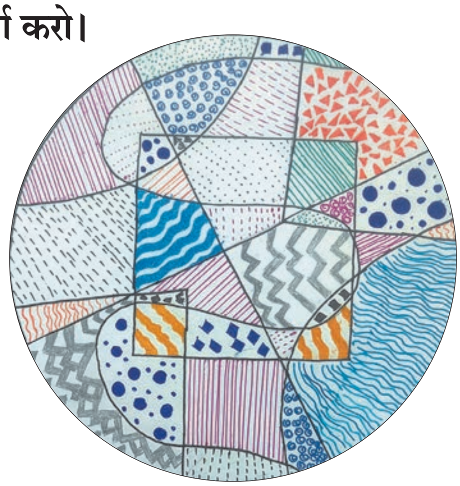

अ

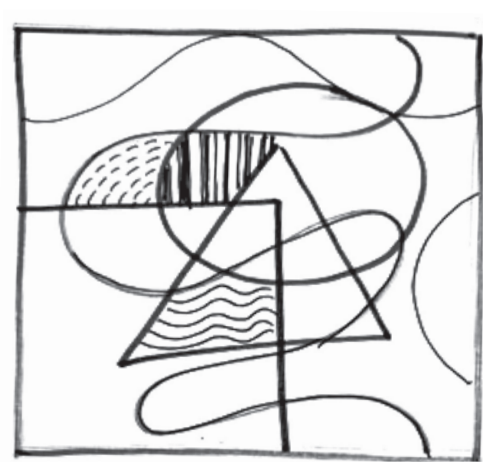

ब

- नक्काशी काम करते समय उनकी स्व-कल्पनाओं को जागृत कराएँ। संदर्भ के लिए संग्रहीत नमूना, चित्र, चित्रफीति दिखाएँ।

CG -2
C- 2.1
LO-04AE08

- **साथ के बड़े चौकोर के छोटे चौकोनों में विविध रेखा प्रकारों का उपयोग करके चित्र पूर्ण करो।**

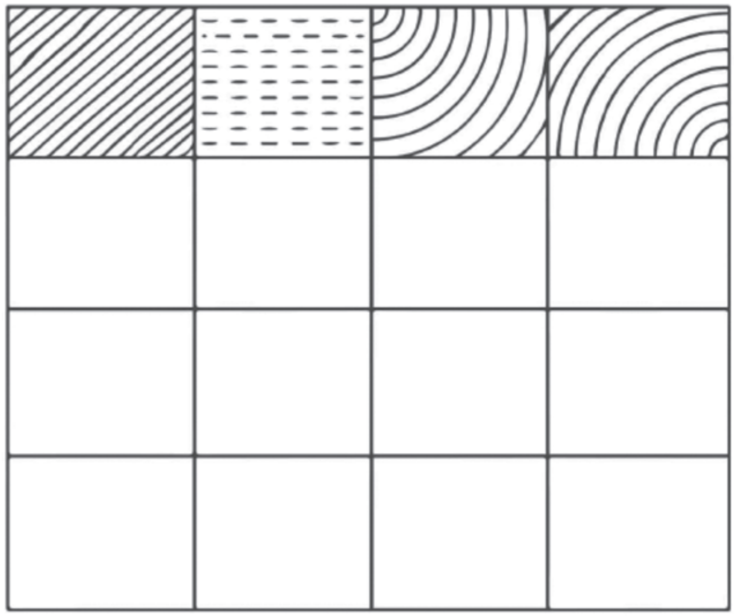

- **आकृतिबंध पूर्ण करो।**

अंक और अक्षर से रेखा के बायीं ओर रचना दी गई है। उसी तरह दायीं ओर प्रतिबिंबित रचना बनाओ।

निम्नलिखित आकृतिबंध पूर्ण करके उसमें अपनी पसंद का रंग भरो।

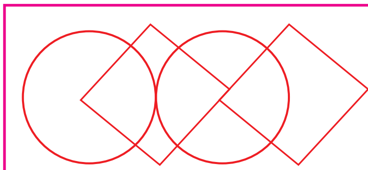

- रेखाओं का अभ्यास करके नक्काशी काम करने हेतु प्रवृत्त करें।

CG -1/2
C- 1.2/2.1
LO-04AE07
/08

आओ, प्राकृतिक आकारों का आकृतिबंध तैयार करें।

पत्ते, फूल अथवा भिन्न-भिन्न प्राकृतिक आकारों का उपयोग करके आकृतिबंध पूर्ण करो। अपनी पसंद के अनुसार गहरे या उजले रंग में रँगो।

ध्यान में रखो :

एक या दो आकार पुनः पुनः बनाकर उनमें रंग भरने पर सुंदर नक्काशी तैयार होती है।

आओ आकृतिबंध से नक्काशी तैयार करें।

१. साथ में कुछ आकृतिबंध दिखाए गए हैं। उनमें से योग्य आकृतिबंध का उपयोग करके निम्नांकित चित्र पूर्ण करो।

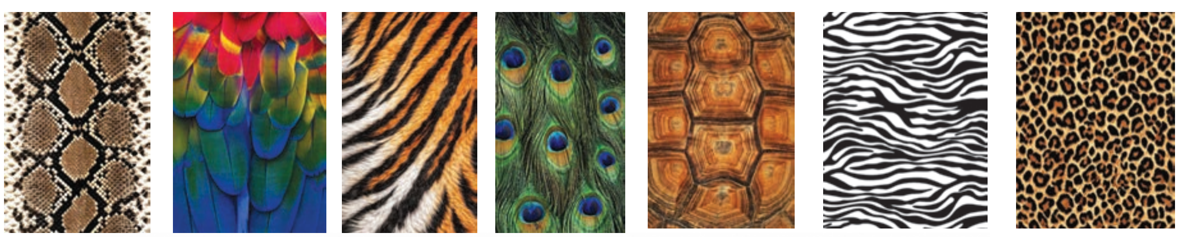

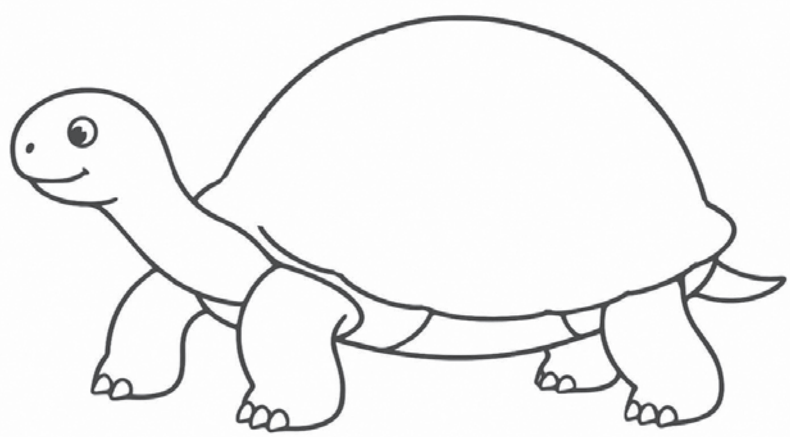

२. चित्रकला की कॉपी में साड़ी की किनारी के लिए नक्काशी तैयार करके उसमें आकर्षक रंग भरो।

- कृति करते समय विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करें।

CG -1
C- 1.1
LO-04AE03

पृष्ठभाग (सरफेस) और नक्काशी काम

- **वस्तुओं को प्रत्यक्ष स्पर्श करके वे कैसी हैं, इसका वर्णन करो।**
  उदाहरणार्थ– काँच, कपास, कपड़ा, पत्थर और पत्ता। इन्हें तथा इन जैसी वस्तुओं को स्पर्श करके उनका वर्णन करो। बालमित्रो, तुमने स्पर्श की अनुभूति ली और उससे तुमने क्या सीखा, तो इस महसूस होने वाले स्पर्श को चित्रों की भाषा में सतह या '**पोत**' कहते हैं।
- उस पृष्ठभाग की सतह को स्पर्श करने पर हमें खुरदुरा, चिकना, काँटेदार, नरम आभास होता है, इसे '**स्पर्शजन्य पोत**' कहते हैं।
- स्पर्श के अलावा केवल आँखों से भी पृष्ठभाग का खुरदुरापन, चिकनापन, कँटीलापन, महसूस होता है, उसे '**दृश्यजन्य पोत**' कहा जाता है। कभी–कभी हम नक्काशी काम में पोत के रूप में अंकित किए गए छापों या ठप्पों का भी उपयोग कर सकते हैं। तो चलो फिर हम छापों का आनंद अनुभव करें।

छापे पहचानो

नीचे दिए गए चित्रों में छापे किस चीज के हैं, निरीक्षण करके पहचानो और चित्र के नीचे लिखो।

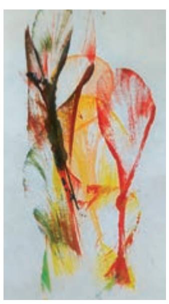
______

______

______

______

- इस तरह विविध छापा काम से नक्काशी की जा सकती है। विविध वस्तुओं के छापे कागज पर लिए जा सकते हैं। उदाहरणार्थ– जूट, आलू, हाथ की उँगलियों आदि के छापे।
- और किन वस्तुओं के छापे कागज पर लिए जा सकते हैं, उनकी सूची बनाओ।

ध्यान में रखो :

छापाकाम के लिए जलरंगों का उपयोग करना पड़ेगा। उसे छापते समय रंग बहुत तरल न हो, इसकी सावधानी रखो।

- विविध पोतों का उपयोग करके नक्काशी का काम करवा लें।

CG –3
C– 3.1
LO–04AE14
LO–04AE15

छापा से नक्काशी

अपनी कॉपी में अपनी पसंद का कोई एक बड़ा आकार बनाओ। उसमें उपलब्ध सामग्री का उपयोग करके विविध प्रकार के छापे लेकर सुंदर छापा तैयार करो।

पृष्ठभाग और कोलाज

आओ, विविध प्रकार के पोत लेकर उनसे कोलाज चित्र तैयार करें।

घर की अनेक वस्तुओं का उपयोग हम पोत प्राप्त करने के लिए कर सकते हैं। उदाहरणार्थ– घर की खिड़कियों के काँच, सिक्के, पेड़ की छाल आदि।

विविध वस्तुओं पर कागज रखकर उसपर रंगीन पेन्सिल घिसकर उनकी सतह तैयार करो। उनके विविध आकार काटकर कागज पर चिपकाओ और अपनी कल्पनाशीलता से इनका उपयोग नक्काशी चित्र में करो। अब नीचे दिए नमूना चित्र देखो। केवल पृष्ठभाग (सरफेस) निर्माण से चित्र का आनंद खूब बढ़ जाएगा।

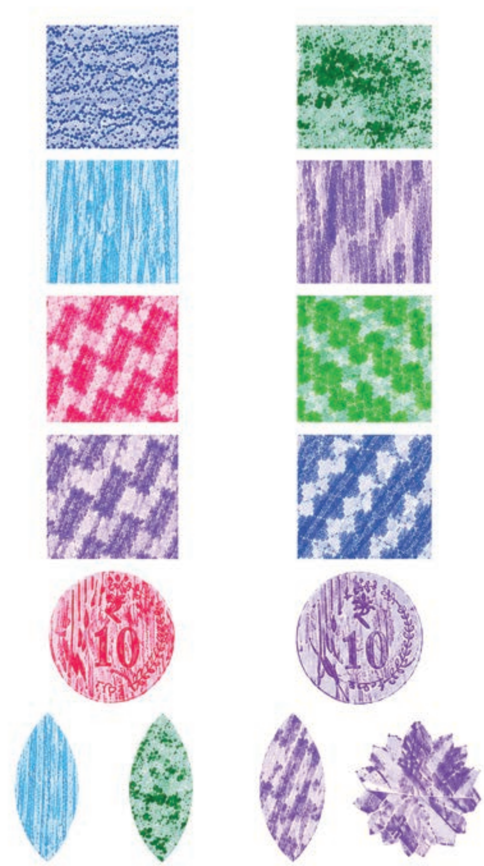

- सतह निर्माण हेतु समूह में चर्चा करवाएँ और विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता को बढ़ावा दें।

CG –3
C–3.1
LO–04AE14
LO–04AE15

आओ, कृति करके देखें!

बड़े तने के पेड़ का चित्र बनाओ। पेड़ के पत्ते, फली के छिलके, रंगोली, मिट्टी, बालू, लकड़ियाँ, इनमें से किसी भी वस्तु का उपयोग किया तो पेड़ के तने का स्पर्श महसूस होगा। यह कृति अपनी चित्रकला की कॉपी में करो।

आओ, प्राकृतिक घटकों का उपयोग करके नक्काशी तैयार करें।

प्राकृतिक घटकों का उपयोग करके उन्मुक्त नक्काशी तैयार करो। उदाहरणार्थ- शंख, सीप, पत्ते-फूल, पत्थर आदि।

अपने परिसर के प्राकृतिक घटकों का उपयोग करके तुम भी एक नक्काशी तैयार करो और अपने शिक्षक को दिखाओ।

आओ, शुभकामना पत्र बनाएँ।

बाजार से शुभकामना पत्र खरीदने के बजाय स्वयं बनाया हुआ कार्ड अपने मित्रों/सहेलियों को दिया तो उन्हें अधिक आनंद होता है।

- प्रकृति से मिलने वाले घटकों से सुशोभित करने हेतु प्रवृत्त करें।
- त्रुटियाँ निकालने के बजाय नये प्रयोग करने हेतु प्रोत्साहित करें।

CG -3
C- 3.2
LO-04AE16
LO-04AE17

आओ हम प्राकृतिक वस्तुओं का उपयोग करके अपने मित्रों/सहेलियों को शुभकामना देने हेतु नक्काशी (भेंट कार्ड) तैयार करें।

इसके लिए पेड़ के पत्ते, बारीक लकड़ियाँ, उँगलियों के छापे, कागज के टुकड़े आदि घटक नमूना चित्र में दिखाए अनुसार कागज पर चिपकाकर सुंदर शुभकामना पत्र तैयार करो।

ध्यान में रखो : कृति करते समय पेड़ के भिन्न-भिन्न रंगों के गिरे हुए पत्तों का उपयोग करो।

- विद्यार्थियों को उपलब्ध साधन-सामग्री का उपयोग करने की आदत लगाएँ।
- विशिष्ट सामग्री ही चाहिए ऐसा आग्रह ना करें।

CG -1/3
C- 1.1/3.2
LO-04AE03
LO-04AE16

चलो, रंगों से खेलो!

आज हम रंगों का एक जादू देखने वाले हैं। यह कृति करके तुम बहुत ही सुंदर और आकर्षक नक्काशी तैयार कर सकते हो।

- सबसे पहले एक कोरा कागज लो और उसे बीचोंबीच मोड़कर तह करो। अब कागज की तह खोलकर एक तरफ अपनी पसंद के रंग की छोटी-बड़ी बूँदें डालो। इसके बाद कागज को पुनः मोड़ लो और हल्के हाथ से उसे दबाओ। बहुत धीरे-से कागज को खोलकर देखो। अहा! कितना मजेदार! दोनों ओर बिल्कुल एक जैसी और सुंदर नक्काशी दिखाई देगी।
- इसी प्रकार से तुम भिन्न-भिन्न रंगों के उपयोग द्वारा नये-नये प्रयोग करके देखो। इससे तुम्हें रंगों का एक अलग ही पृष्ठभाग (सरफेस) मिलेगा इस सुंदर नक्काशी के उपयोग से तुम अपने मित्रों/सहेलियों के लिए बढ़िया भेंट कार्ड तैयार कर सकते हो।

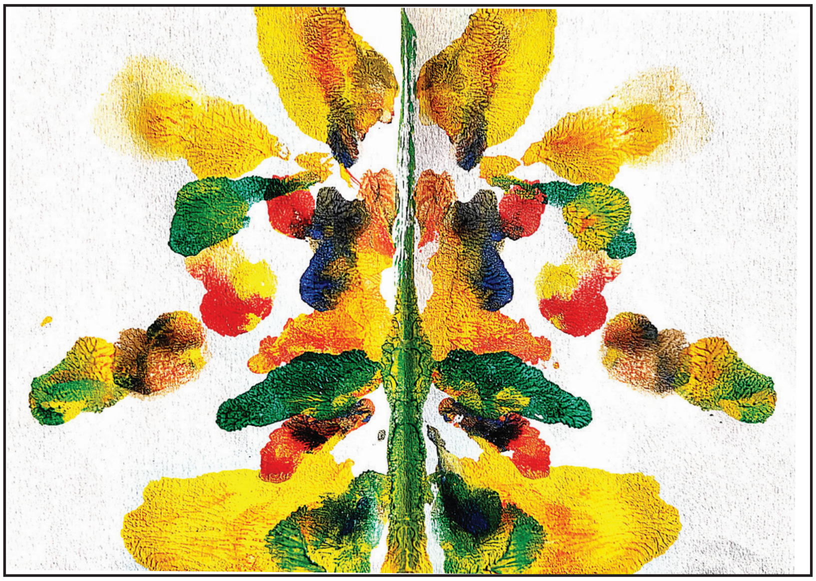

मेरी कृति

१) कागज की थैली तैयार करके उसपर सीखी हुई तकनीक, छापों का उपयोग करके सजावट करो।

२) विविध प्राकृतिक घटकों का, उसी प्रकार मानव निर्मित घटकों का उपयोग करके सुंदर बुकमार्क/भेंट कार्ड तैयार करो।

३) फूल-पत्तों के उपयोग से सजावट के लिए रंगोली तैयार करो।

- कागज पर विविध रंगों की बिंदु गिराकर ऐसी ही कलाकृति बनवा लें।

CG -3
C-3.1
LO-04AE14
LO-04AE15

२ . अक्षरों की दुनिया में...

बाल मित्रो, चित्र के अनुसार ही हमारे अक्षर भी सुंदर होना बहुत महत्त्वपूर्ण है। अक्षर लेखन से तात्पर्य है स्वच्छ, स्पष्ट, सुवाच्य लिखने की कला किंतु उसके लिए अभ्यास बहुत महत्त्वपूर्ण है।

मुक्त हस्त रेखा बनाने से तुम्हारे हाथ का नियंत्रण बढ़ता है और अक्षर लिखने में सहायता मिलती है।

'आओ, रेखा एवं अक्षरों का अभ्यास करें।'

दी गई विविध रेखाएँ द्‌विरेखीय कॉपी में खींचने का अभ्यास करो।

चार रेखीय कॉपी में अंग्रेजी वर्णमाला और अंक लिखने का अभ्यास करो।

इससे पूर्व की कक्षा में हम अक्षरों के अवयव, घुमाव आदि का अभ्यास कर चुके हैं। आओ इस वर्ष संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों का अभ्यास करें। साथ में दिए गए अक्षर देखो और उनका अभ्यास तुम्हारी कॉपी में करो।

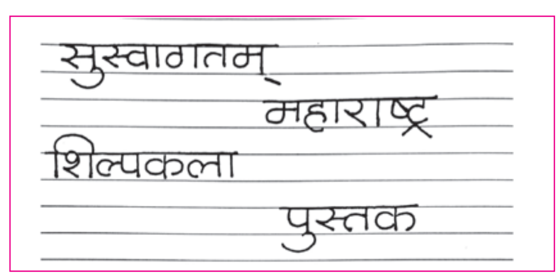

- विविध प्रकार के अक्षर लेखन का अभ्यास करवा लें।
- विद्‌यार्थियों को प्रत्यक्ष अक्षर अवयव एवं अक्षर लेखन के नमूने दिखाएँ।

CG -1
C- 1.2
LO-04AE05

आओ, विविध माध्यमों से अक्षर लेखन करें।

विविध माध्यमों का उपयोग करके अक्षरों का अभ्यास करें।

१. हवा में उँगलियों से अक्षराकृति निकालकर मित्रों/सहेलियों से पहचानने के लिए कहो।

२. बालू या मिट्‌टी पर अक्षर बनाओ।

३. पेन, पेन्सिल की सहायता से लेखन का अभ्यास करो।

४. स्केच पेन, रंगीन खड़ियों की सहायता से अक्षर लेखन करके देखो।

पेन्सिल लेखन ⟶ SAVE WATER

पेन लेखन ⟶ SAVE WATER

स्केच पेन लेखन ⟶ SAVE WATER

रंगीन खड़िया लेखन ⟶ SAVE WATER

आओ, सुविचार पट्‌टियाँ तैयार करें।

कई बार हम कक्षा में बड़े चार्टस या सुविचार पट्‌टियाँ लगी हुई देखते हैं। उनपर लिखे अक्षर बड़े और सुवाच्य होने आवश्यक हैं। इसे आकर्षक पद्‌धति से कैसे तैयार करें। इसकी अगली कृति समझकर आओ, इसका अभ्यास करें।

१. एक तैलीय खड़िया लेकर उसके सिरे को तिरछा काट दो।

२. खड़िया हाथ में पकड़कर चित्र में दिखाए अनुसार लिखने का अभ्यास करो।

३. अभ्यास हो जाने पर कक्षा के लिए सुविचार पट्‌टी अथवा चार्ट हेतु लेखन करो।

- विविध माध्यमों का उपयोग करके अक्षर लेखन का अभ्यास करवा लें।

CG -1
C- 1.2
LO-04AE05
LO-04AE06

म

अक्षर बनाओ और सजाओ!

तुम्हारे नाम का आरंभिक अक्षर बनाकर उसे मनपसंद माध्यम से सजाओ। इसके लिए धागा, फूल-पत्ते, बीज, रंगोली, मणि, सुतली, या अपनी पसंद की सामग्री का उपयोग करो।

मुक्तहस्त रेखाटन

- **आओ, अंक-अक्षरों की रचना करो।**
- **रेखा के बायीं ओर दिया हुआ आकार देखकर दायीं ओर रेखाटन करो एवं रँगो।**

- अक्षरों के आकार, ऊँचाई और अंतर का प्रात्यक्षिक दिखाएँ।

CG -1
C- 1.2
LO-04AE07

आओ, अक्षर एवं अंक से चित्र बनाओ!

अक्षर और अंकों का उपयोग करके चित्र रेखाटन करें।

१. आओ, नीचे दिए वाक्य अनुपातबद्ध लिखने का अभ्यास करें।

- मेरे अक्षर ही मेरी पहचान।

....

- प्रकृति अपनी गुरु है।

....

- भारत मेरा देश है।

....

- INDIA IS MY COUNTRY.

....

- SAVE TREES, SAVE EARTH.

....

मेरी कृति

१) पाठ्यपुस्तक का कोई भी परिच्छेद/कविता पेन, पेन्सिल, स्केच पेन इनमें से किसी भी साधन से लिखो।
२) भेंट कार्ड तैयार करके उसमें उपयुक्त वाक्य लिखो।
३) एकाध घोष वाक्य की पट्टी तैयार करो।
४) श्यामपट्ट पर सुंदर बड़े अक्षरों में सुविचार लिखो।

- सुंदर और स्पष्ट अक्षर लेखन के लिए पेन्सिल को उचित ढंग से पकड़ने की आदत डालें।
- भरपूर अभ्यास करवा लें। श्यामपट्ट पर लिखने के लिए प्रोत्साहन दें।
- विविध शैलियों से अक्षर लेखन करने का प्रयत्न करने के लिए कहें।

CG -1
C- 1.2
LO-04AE05
LO-04AE06

३ . वस्तुओं की दुनिया में...

वस्तु चित्र से तात्पर्य है अपने परिसर में दिखाई देने वाली वस्तु का निरीक्षण करके ज्यों का त्यों चित्रण करना। फूल, फल, बरतन, खिलौना अथवा शालेय वस्तुओं के चित्र इनमें निकाले जा सकते हैं। वस्तु चित्र निकालते समय वस्तु का आकार, प्रमाण, रंग, छाया, प्रकाश और पोत की ओर ध्यान देना होता है। वस्तु का चित्र बनाते समय रंगों का उपयोग करके चित्र को अधिक सुंदर बनाया जा सकता है।

वस्तु चित्र के अभ्यास से निरीक्षण शक्ति और आत्मविश्वास बढ़ता है।

आओ, आकारों से वस्तुओं के चित्र बनाओ।

हमने रेखा से आकार बनाना सीखा। अब मूल आकार से दैनिक उपयोग की वस्तुओं के चित्र बनाए जा सकते हैं। आओ यह अगली कृति से देखें।

नीचे दिए गए आकारों में से एक या अनेक आकारों का उपयोग करके अधिक-से-अधिक वस्तुओं के चित्र तैयार करो।

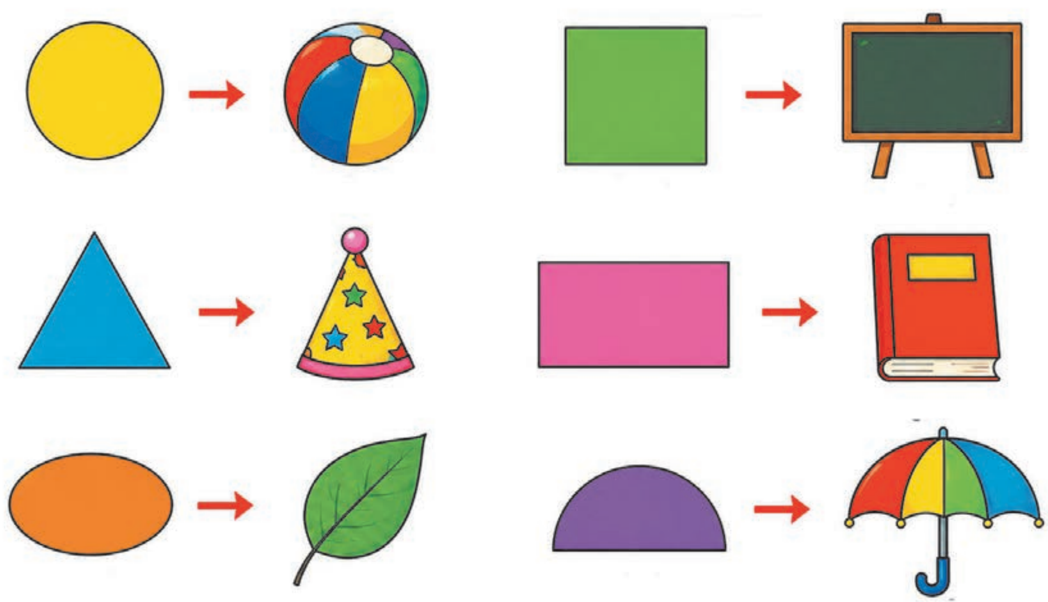

- विद्‌यार्थियों को प्रत्यक्ष वस्तुएँ दिखाएँ। वस्तुओं का निरीक्षण कर उनके आकार पहचानने के लिए कहें।
- आसान आकारों की वस्तुओं के रेखाटन से शुरुआत कराएँ।

CG -2
C- 2.1
LO-04AE09

आओ, आस-पास की वस्तुओं का रेखाटन करे।

- तुम्हारे बस्ते की किन्हीं दो वस्तुओं का रेखाटन करके रँगो।

बस्ते की वस्तुओं की सूची बनाओ और उनमें से किन्हीं दो या तीन वस्तुओं का प्रत्यक्ष रेखाटन नीचे दिए गए स्थान पर करो। वे वस्तुएँ किन मूल आकारों से मिलती-जुलती हैं, बताओ।

वस्तुओं का रेखाटन करते समय किसी भी यांत्रिक साधन का उपयोग मत करो।

आओ, वस्तुओं के आकारों का अंतर जानो।

- चित्र की वस्तुओं के नाम पहचानो।
- सबसे बड़ी वस्तु कौन-सी है?
- चित्र में समान दिखने वाली वस्तुओं के नाम लिखो।
- कौन-सी वस्तुएँ गोलाकार दिखती हैं?
- बाल्टी और डिब्बे में क्या अंतर है?
- सेब और गेंद में कौन-सा साम्य दिखता है?
- उपर्युक्त चित्र अपनी कॉपी में बनाओ।

- दैनिक उपयोग की वस्तुओं का निरीक्षण करके चित्र बनाने के लिए कहें।
- कक्षा में प्रत्यक्ष वस्तु (फल, बरतन, खिलौना) रखकर, निरीक्षण करके चित्र बनाने के लिए कहें।

CG -2
C- 2.1/2.2
LO-04AE10
LO-04AE11
LO-04AE12

आओ, वस्तुओं का रेखाटन करो।

हमें प्रकति से कुछ घटक मिलते हैं, उन्हें 'प्राकृतिक घटक' कहते हैं। कुछ वस्तुएँ मानव तैयार करता है, उन्हें 'मानव निर्मित वस्तु' कहते हैं। यह हम पिछली कक्षा में सीख चुके हैं।

- पसंद के अनुसार प्राकृतिक अथवा वस्तुओं का प्रत्यक्ष निरीक्षण करके कॉपी में रेखाटन करो। (जैसे बाल्टी, कप, गिलास, गेंद, पेड़ का पत्ता, फूल, नारियल, केला आदि।)

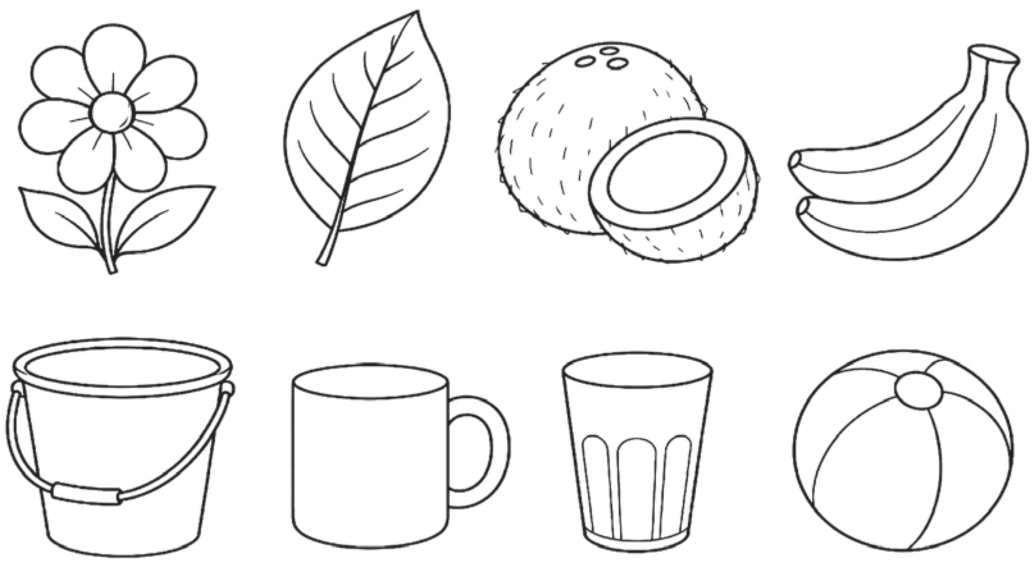

मेरी कृति

१) घर की किन्हीं दो वस्तुओं की रचना करके उनका चित्रण करो और रँगो।

२) परिसर की किन्हीं पाँच वस्तुओं का स्वतंत्र रूप से रेखाटन करो।

- पहले पेन्सिल से हल्का रेखाटन करके फिर रँगने का क्रम रखें।
- विद्यार्थियों को भिन्न-भिन्न कोणों से वस्तु देखने के लिए कहें।
- चित्र की बारीकियाँ ध्यान में रखने की आदत लगाएँ।

CG -2
C- 2.1/2.2
LO-04AE10
LO-04AE12

४. मेरे चित्र एवं मेरी कल्पना...

रेखाटन : रेखाटन से तात्पर्य है रेखाओं की सहायता से चित्र की शुरुआत करना। हमारी देखी हुई घटना, प्रसंग याद करके चित्र बनाने के लिए रेखाटन हमारी सहायता करता है। रेखाटन के फलस्वरूप चित्र के घटकों की योग्य रचना, आकार और प्रमाण ठीक रखा जा सकता है। इस कारण चित्र की रूपरेखा स्पष्ट और समझने में आसान हो जाती है। पहले हल्के हाथ से रेखाचित्र बनाओ इससे त्रुटियों को सुधारना आसान हो जाता है।

स्मरण चित्र और कल्पना चित्र बनाने के लिए रेखाटन का अभ्यास आवश्यक होता है।

स्मरण चित्र : हम जब देखे हुए, सुने हुए प्रसंगों और अनुभवों की घटनाओं के चित्र स्मृति के आधार पर बनाते हैं तो ऐसे चित्रों को स्मरण चित्र कहा जा सकेगा ।

- उदाहरणार्थ– पुस्तक की कहानियों पर आधारित प्रसंग चित्र बनाना।

आओ, स्मरण से चित्र बनाओ।

- पाठशाला आते समय कौन–से पेड़ दिखे? प्रकृति में कौन–कौन–से घटक दिखाई दिए? परिसर के पेड़ कैसे थे? पेड़ पर क्या–क्या दिखा? इसी तरह परिसर के लोगों की हलचल भी हमने देखी। आओ, इनमें से प्रमुख घटकों के रेखाटन का अभ्यास हम पेन्सिल की सहायता से अपनी कॉपी में करें।

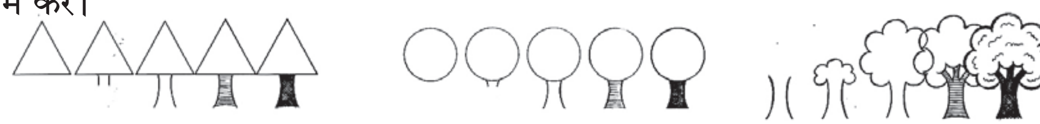

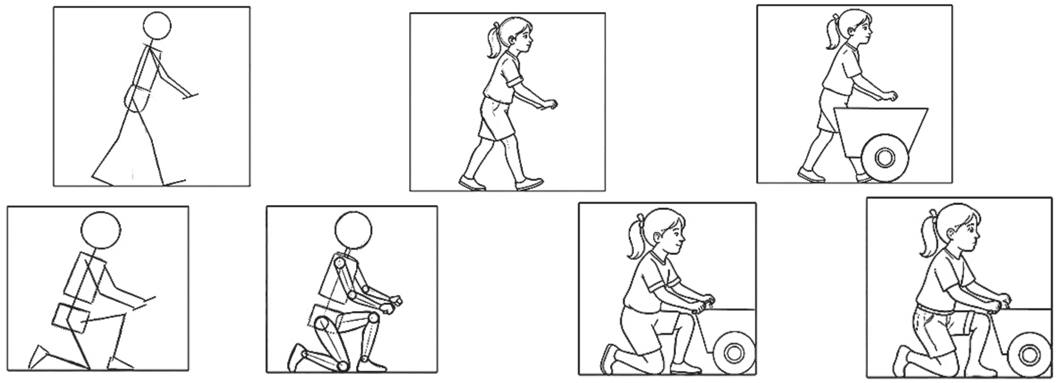

- प्रत्येक विद्यार्थी के चित्र की प्रशंसा करके उनका आत्मविश्वास बढ़ाएँ।

CG –1
C– 1.1
LO–04AE01

स्मरण से चित्र बनाओ।

गुट 'अ'	गुट 'ब'	गुट 'क'
प्राकृतिक घटक पत्ते, फूल, पक्षी, पेड़, नदी, पहाड़, वर्षा।	**पारंपरिक घटक** त्योहार, उत्सव, पारंपरिक खेल, रंगोली, बंदनवार (तोरण)।	**आधुनिक घटक** संगणक, टी. वी., मोबाइल, पार्क, मेट्रो।

उपर्युक्त किसी भी एक गुट के कुछ घटक चुनकर उनके आधार पर याद करके कॉपी में स्मरण चित्र बनाओ ।

- चुने हुए घटकों का पेन्सिल से धुँधला रेखाटन करो।
- चित्र रचना ऐसी करो कि कागज पर सुंदर लगे। चयनित घटकों की अधिक-से-अधिक बारीकियों के रेखाटन का प्रयत्न कर चित्र रँगो।

आओ, देखे हुए दृश्य के आधार पर चित्र बनाओ।

- परिसर में देखा दृश्य याद करो। उसकी बारीकियाँ स्मरण करके रेखाटन करो।

घर या पाठशाला के परिसर में तुम मित्र के साथ विविध खेल खेल रहे हो। ऐसा प्रसंग याद करके चित्र का रेखाटन करो और रँगो।

आओ, प्रसंग के वर्णनानुसार चित्र बनाओ।

- अजय बाग में गया। उसे ऊँचे छायादार पेड़ पर एक पक्षी डाल पर बैठकर फल खाता हुआ दिखा। आस-पास रंगीन फूल खिले थे। उनपर रंग-बिरंगी तितलियाँ आनंद से उड़ रही थीं।

इस प्रसंग का चित्र अपनी कॉपी में बनाकर रँगो।

- विद्यार्थियों को अनुभव के आधार पर प्रसंग चित्र रेखाटन के लिए प्रोत्साहित करें।
- योग्य या अयोग्य का बंधन न डालकर उन्मुक्त होकर चित्र बनाने दें।

CG -1
C- 1.1
LO-04AE01
LO-04AE04

कल्पना चित्र

आँखों को जो दिखता है, उसके उस पार मन को जो सूझता है, उसे दृश्य स्वरूप में प्रस्तुत करना ही 'कल्पना चित्र' है। **'कल्पना चित्र'** के कारण नवीन सृजनशीलता और विचार करने की क्षमता में वृद्धि होती है। इसी तरह चित्रकला के प्रति रुचि एवं आत्मविश्वास भी बढ़ता है। इसी कारण कल्पना चित्र, चित्रकला की एक महत्त्वपूर्ण और आनंददायी प्रक्रिया है।

कल्पना चित्र बनाते समय नवीन कल्पना करो। जैसे कि उड़ने वाली साइकिल या चंद्र पर पाठशाला। हमें पसंद आई कल्पना, रेखा और रंगों की सहायता से कल्पना चित्र के रूप में कागज पर बनाना संभव होगा।

आओ, कल्पना से चित्र बनाओ।

जैसे : आकाश में घर, सपनों का गाँव, मुझे पंख होते तो..., रंगीन बादल आदि।

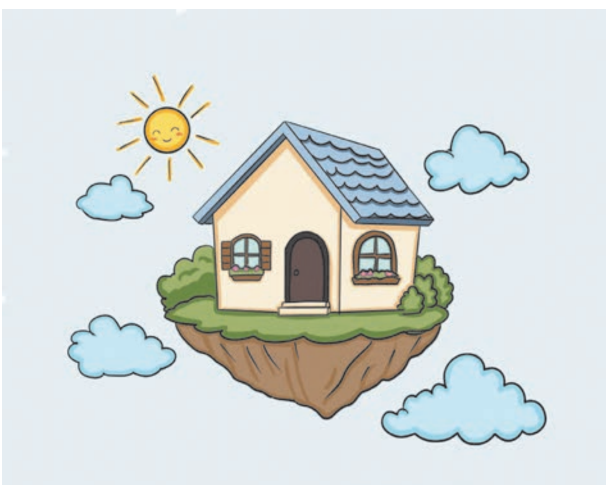

- **कल्पना करो और चित्र बनाओ।**

१. तुम्हारी कल्पना से अस्तित्वहीन नये प्राणी का चित्र कॉपी में बनाओ।

२. 'चंद्रमा की सैर' ऐसी कल्पना करके कागज पर चित्र बनाओ।

- कक्षा में विद्‌यार्थियों की कल्पनाशक्ति को बढ़ावा मिले, ऐसे वातावरण की निर्मिति तैयार करें।

CG- 1
C- 1.1
LO-04AE02
LO-04AE13

मेरी कृति

१. बाजार में देखे किसी प्रसंग का चित्र बनाकर रँगो।
२. 'पतंग उड़ाने वाले बच्चे' इस विषय पर स्मरण चित्र बनाओ।
३. 'रोबोट के साथ खेलते हुए' ऐसी कल्पना करके चित्रकला की कॉपी में चित्र बनाओ।
४. 'चॉकलेट का घर' ऐसी कल्पना करके चित्रकला की कॉपी में चित्र बनाओ।
५. हवा में उड़ने वाली गाड़ियों की कल्पना करके चित्रकला की कॉपी में चित्र बनाओ।

- कोई भी कल्पना गलत नहीं होती है, यह विद्यार्थियों को बताएँ।
- कल्पना चित्र बनाते समय त्रुटियाँ न बताएँ। कल्पना को प्रोत्साहन दें। चित्र की प्रशंसा करें।

CG- 1/2
C- 1.1/2.2
LO-04AE01
LO-04AE02
LO-04AE04
LO-04AE13

५ . त्रिविमीय कलाकृति...

शिल्पकला से तात्पर्य है मिट्‌टी, कागज, लकड़ी अथवा अन्य माध्यमों का उपयोग करके कलाकृति साकार करने की कला। शिल्पकला से निर्मित वस्तुओं का आनंद हर तरह से लिया जा सकता है। ऐसी वस्तुओं में लंबाई, ऊँचाई, चौड़ाई और मोटाई होती है इसीलिए उन्हें 'त्रिविमीय वस्तु' या 'शिल्प' कहते हैं।

शिल्पकला में मिट्‌टी के माध्यम से हम प्राणी, फल, फूल या विविध वस्तुएँ तैयार कर सकते हैं। त्रिमिति के कारण वस्तुओं के आकार और रचना समझने में सहायता होती है। इस कारण शिल्पकला हमारे लिए आनंददायी और उपयुक्त कला है।

आओ, उपलब्ध मिट्‌टी से (क्ले) प्रतीकात्मक चिह्न तैयार करो।

१. सबसे पहले नरम और स्वच्छ मिट्‌टी लो।
२. मिट्‌टी हाथ से मसलकर नरम करो।
३. कोई आसान-सा प्रतीकात्मक चिह्न चुनो। उदाहरणार्थ - सूर्य, पेड़, पुस्तक, मछली।
४. मिट्‌टी का छोटा गोला बनाकर हाथ से या किसी साधन से आकार दो।
५. चयनित चिह्न के अनुसार मिट्‌टी को दबाकर या मोड़कर उचित आकार तैयार करो।
६. तैयार किए गए चिह्न पर उँगली या सींक से लघु विवरण दो।
७. तैयार किए गए चिह्न धीरे से समतल सतह पर सूखने के लिए रखो।
८. मिट्‌टी के चिह्न सूखने के बाद उनपर रंग लगाकर अधिक आकर्षक बनाओ।

इस कृति के कारण कल्पनाशीलता, कल्पना शक्ति और हस्तकला विकसित होती है।

- विद्‌यार्थियों की हस्तकला को प्रोत्साहन दें।
- सरल आकार से आरंभ करके वस्तु तैयार करना सिखाएँ।

CG -3
C- 3.2
LO-04AE17
LO-04AE18

प्राकृतिक घटकों की कलात्मक विशेषताएँ –

चित्र अथवा शिल्प तैयार करने से पहले हमें परिसर के प्राकृतिक एवं भौतिक घटकों का बारीकी से निरीक्षण करना चाहिए। विविध प्राकृतिक घटकों की कलात्मक विशेषताएँ निरीक्षण के माध्यम से ध्यान में रखना आवश्यक होता है। जैसे पानी की लहरें- लयात्मक , पेड़ –छायादार, अशोक का पेड़ –शंकु का आकार, नीचे से ऊपर सिकुड़ते हुए, सूर्य– उत्सर्जन, प्रखरता आदि। इसके अनुसार प्रकृति के अन्य घटकों की विशेषताओं पर चर्चा करो।

आओ, उपलब्ध साधनों से प्रतिकृति तैयार करो।

एक छोटा गाँव, बाग, घर आदि में से कोई एक प्रतिकृति तैयार करो। (जैसे पेड़ के पत्ते, शाखाएँ, घर के खाली डिब्बे, रास्ता या सजावट के लिए पत्थर, बालू का उपयोग कर सकोगे।)

- विद्यार्थियों को स्वावलंबन की आदत डालें।
- सुरक्षा की सावधानी के साथ साधनों के उपयोग समझाकर बताएँ।
- प्राकृतिक घटकों का निरीक्षण करके उनकी कलात्मक विशेषताओं पर चर्चा करने के अवसर दें।

CG –3
C– 3.2
LO–04AE17
LO–04AE18
LO–04AE19

त्रिविमीय कलाकृति के विश्व में

अपने परिसर के आस-पास हम विविध प्रकार की त्रिविमीय रचनाएँ देखा करते हैं।

- दैनिक उपयोग की छोटे आकार की वस्तुओं का उपयोग करके तैयार की गई त्रिविमीय रचनाएँ देखो और उनकी सूची बनाओ।

अपने परिसर में अथवा घर में देखी हुई किन्हीं चार त्रिविमीय रचनाओं के नाम बताओ। उन वस्तुओं का वर्णन करो।

१) .... २) ....

३) .... ४) ....

प्राकृतिक सामग्री से कलाकृति

पर्यावरणपूरक सामग्री से तात्पर्य है प्रकृति को हानि न पहुँचाने वाले घटक और वस्तु।

- आओ, प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके रचना करो।
  जैसे : पत्ते, फूल, बीज, पेड़ की सूखी हुई शाखाएँ, रंगोली, पत्थर, मिट्टी आदि।

ऊपर दिखाए अनुसार तुम्हारे परिसर में उपलब्ध साधनों का उपयोग करके भिन्न-भिन्न कलाकृतियाँ तैयार करो।

- त्रिविमीय आकार की संकल्पना प्रत्यक्ष वस्तु दिखाकर स्पष्ट करें।
- विद्यार्थियों के प्रोत्साहनार्थ उनके द्‌वारा तैयार की गई वस्तुओं की प्रदर्शनी लगाएँ।

CG -3
C- 3.2
LO-04AE17

चलो, त्रिविमीय अक्षर तैयार करो।

- मिट्‌टी से अपने नाम का पहला अक्षर तैयार करो।

मेरी कृति

१. प्राकृतिक घटकों का उपयोग करके रंगोली बनाओ।
२. परिसर में उपलब्ध मिट्‌टी का उपयोग करके पसंद के अनुसार गहने बनाओ।
३. परिसर के पर्यावरणपूरक घटकों का उपयोग करके एक आकर्षक त्रिविमीय रचना तैयार करो।
४. मिट्‌टी से परिवहन के नियमों के चिह्न तैयार करो।
५. मिट्‌टी से कोई प्राणी या पक्षी तैयार करो।

- प्रत्यक्ष संग्रहीत वस्तु के नमूने दिखाएँ। विद्‌यार्थियों की कल्पनाओं को बढ़ावा दें। आसान वस्तुओं से शुरुआत करें। स्वच्छता और सुरक्षा की ओर ध्यान दें।

CG -3
C-3.2
LO-04AE18

रंगमंच

६. चलो, अभिनय करें...

हम अपने आस-पास की अनेक आवाजें सुनते हैं। तुमने किन-किन की आवाजें सुनी हैं? पशु-पक्षी, व्यक्तियों की आवाजें हमने सुनी हैं। उनमें से कुछ व्यक्तियों की आवाजें इस ध्वनिफीति से सुनो। तुम कुछ देर आँखें बंद करो तो!

"प्याज - आलू - हरा धनिया.....लो ताजी मेथी..ऽऽ"

"रद्दी... पेपर... पुराना लोहा लाओ... पुराना कबाड़ लाओ, आया कबाड़ीवाला..ऽऽ"

"टिंग-टिंग-टिंग-टिंग... कुल्फी लो कुल्फी..ऽऽ ठंडी, मलाई कुल्फी..ऽऽ"

"बच्चो, आँखें खोलो और बताओ, तुम्हारे परिसर में ऐसी आवाजें कभी आती हैं क्या? ये आवाजें किनकी होंगी?"

बिल्कुल सही, जो लोग ये व्यवसाय करते हैं, उन्हीं की ये आवाजें हैं।

आओ, अब थोड़ा विचार करो।

१. सब्जीवाला कैसे आवाज देता है?

२. रद्दीवाला कैसे आवाज देता है?

३. कुल्फीवाले की आवाज के साथ घंटी की आवाज आती है, क्या?

प्रत्येक व्यवसायी की आवाज और बोलने की पद्धति भिन्न-भिन्न है। उनकी आवाज निकालने की पद्धति भी भिन्न होती है। उन्हें हम उनकी आवाज सुनकर दूर से ही पहचान लेते हैं।

चलो, नकल करें!

किसी व्यवसायी की नकल करने पर उस व्यक्ति के व्यवसाय, पहनावा और आवाज का विचार करना पड़ता है। हमें सब्जीवाली की नकल करते समय सब्जीवाली सिर पर 'टोकरी' रखकर "सब्जी..लो ताजी -ताजी सब्जी..ऽऽ" ऐसे चिल्लाती है, यह हमें पता है। फिर हमें नकल करते समय सब्जीवाली सिर पर 'टोकरी' कैसे पकड़ती है, वैसी कृति करके "सब्जी लो ताजी-ताजी सब्जी..ऽऽ" ऐसी आवाज निकालनी पड़ेगी।

तो चलो फिर पहले हम सब्जीवाली की नकल करें।

बहुत बढ़िया! सबने बहुत सुंदर नकल की।

- विद्यार्थियों को ज्यों की त्यों आवाज़ निकालकर अभिनय करने के अवसर दें।
- प्रत्येक विद्यार्थी का सहभाग लेकर उनके स्वयं के निरीक्षण में किए गए अभिनय की प्रशंसा करें।
- प्रथम पृष्ठ का क्यू. आर.कोड स्कैन करके दृक-श्रव्य माध्यम द्वारा स्पष्टीकरण करें।

CG - 1
C - 1.2
LO-04AE23

अब तुम निम्नलिखित व्यवसायियों की नकल करके देखो, तो।

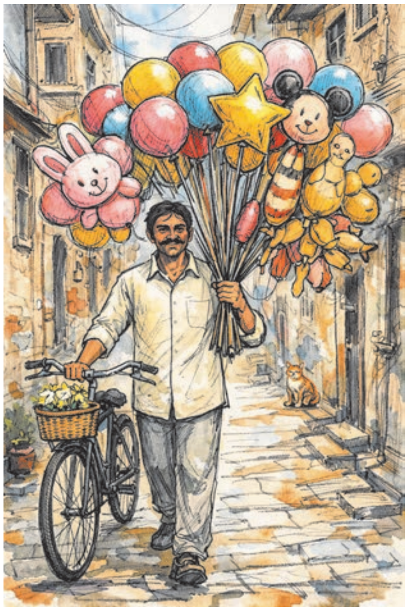

साथ में दिए चित्रों में दिखाए व्यक्तियों की आवाजों की नकल करो।

विविध व्यवसायियों की आवाजों के चढ़ाव -उतारों का अभ्यास करके कक्षा के सामने प्रस्तुत करो। प्रस्तुतीकरण में और क्या करने पर प्रस्तुतीकरण और अधिक अच्छा हुआ होता, इसपर सभी विद्‌यार्थी चर्चा करो और पुनः प्रस्तुतीकरण करो।

आवाज किसकी ?

चलो, खेलो खेल!

एक लड़का या लड़की आँख बंद करके खड़ी रहे। उसके पीछे दूसरे एक मित्र या सहेली को खड़ा करो। पीछे खड़ा मित्र या सहेली परिसर के किसी व्यवसायी की केवल आवाज निकालेगा। सामने आँख बंद करके खड़ा लड़का या लड़की पहचानेगा कि यह किस व्यवसायी की आवाज थी और इस आवाज की नकल करने वाला उनका कौन मित्र या सहेली है। आवाज पहचान न पाने पर उसे पुनः दो मौके दो। फिर भी पहचान न पाने पर वह शिक्षक द्‌वारा कही गई और कोई अन्य नकल करके दिखाएगा।

- विद्‌यार्थियों के प्रस्तुतीकरण की प्रशंसा करके उनके आत्मविश्वास की सराहना करें। वे आवाज का चढ़ाव-उतार कैसे बदलते हैं, इस ओर ध्यान दें।

CG – 1/2
C – 2.1/1.2
LO-04AE24/28

निरीक्षण के आधार पर वर्णन करो।

हम अपने घर के व्यक्तियों की आवाज या उनकी हलचल से पहचान सकते हैं कि वे नाराज हैं या खुश, सही है कि नहीं? प्राणी या पक्षी आनंदित हैं या नाराज, यह समझने के लिए हम ऐसी दुनिया में जाने वाले हैं जहाँ मनुष्य नहीं, प्राणी बोलते हैं! प्राणी तो बोलते ही नहीं! बिल्कुल सही। फिर भी हम उनकी हलचल तथा आवाज से ही समझ सकते हैं कि वे चिढ़े हुए हैं या खुश।

अब नीचे दिए गए चित्र देखो तो!

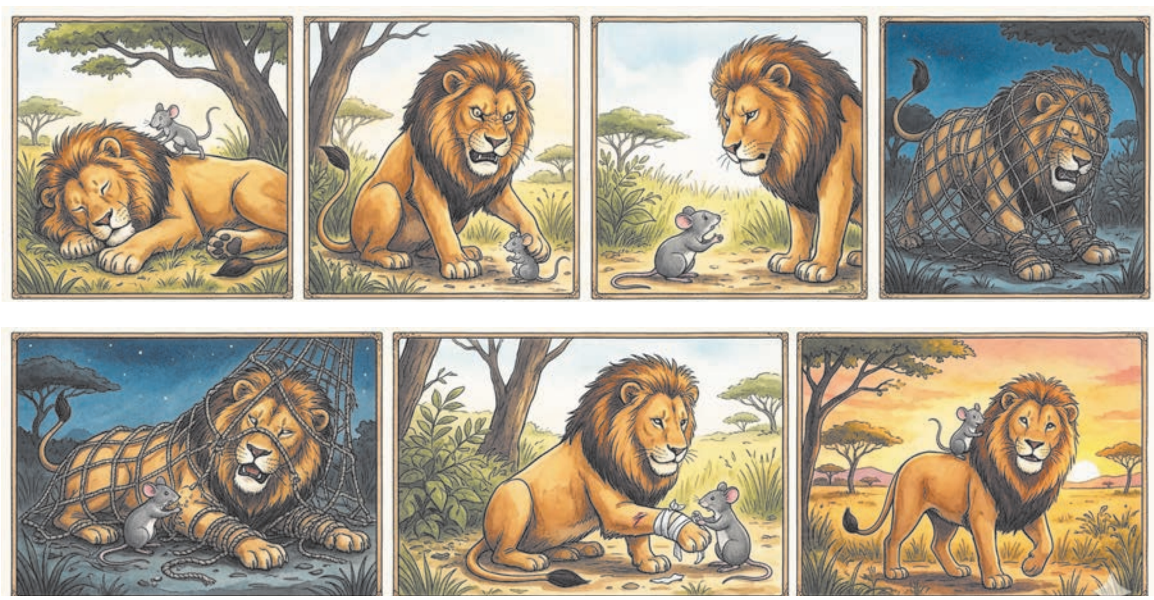

चित्र देखकर चित्र के प्रसंगों पर विचार करो और संवाद न बोलते हुए केवल हलचल तथा हावभाव से प्रसंग प्रस्तुत करो। इस प्रकार के अभिनय को 'मूक अभिनय' कहते हैं।

आओ, करके देखो!

१. मूक अभिनय के लिए दो या तीन प्राणियों या पक्षियों की चित्रफीति देखकर उनकी हलचल का अभ्यास करो।

२. निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर पाठशाला की तैयारी का प्रसंग मूक अभिनय से दिखाओ।

- बस्ते में कॉपियाँ-पुस्तकें भरना, बाल सँवारना, भोजन का डिब्बा लेना, पानी की बोतल भरना, जूते या चप्पल पहनकर पाठशाला जाने के लिए निकलना।

- विविध प्राणियों - पक्षियों की हलचल की नकल करने के अवसर दें। ऐसी हलचलें मूक अभिनय से प्रस्तुत करने के लिए कहें।
- दमशेरा जैसे विविध खेल, चित्र वाचन या पारिवारिक प्रसंगों के मूक अभिनय करवा लें।

CG -1
C - 1.1
LO-04AE22

चलो खेलो खेल!

मैं तेरा आईना

दो-दो की जोड़ियाँ बनाओ। एक 'अभिनेता' होगा और दूसरा 'आईना'। अभिनेता कोई कृति करेगा। 'आईना' बना मित्र या सहेली ज्यों की त्यों कृति और चेहरे के हावभाव एक ही समय में एक साथ प्रस्तुत करना है।

निम्नलिखित चित्र देखो। चित्र का निरीक्षण करके पात्रों का चयन करो। कागज के मुखौटों का उपयोग करके संवाद के साथ समूह में प्रस्तुतीकरण करो।

जंगली मित्रों की सैर

(पात्र - पेड़, मोर, हाथी, खरगोश, हवा, वर्षा, पहाड़, सूर्य, जंगल)

पहाड़ : मैं अनेक वर्षों से बिना हिले यहाँ खड़ा हूँ।

सूर्य : मैं सूर्य हूँ। मेरे उगते ही सर्वत्र प्रकाश फैलता है।

पेड़ : मैं बड़ा पेड़ हूँ। मैं सभी को छाया देता हूँ।

हाथी : रास्ते में आए पत्थर, डालियाँ अपनी सूँड़ से बाजू में सरकाकर सबकी सहायता करता हूँ।

मोर : मैं अपने सुंदर पंखों को फैलाकर नृत्य करता हूँ और जंगल की शोभा बढ़ाता हूँ।

खरगोश : मैं तेज गति से दौड़ता हूँ। मुझे गाजर खाना पसंद है।

हवा : मैं ठंडा झोंका लाती हूँ। सबको आनंद देती हूँ।

वर्षा : मैं पानी देता हूँ। इसके कारण जंगल हरे-भरे रहते हैं।

जंगल : जंगल अपना है और हम सब एक-दूसरे के मित्र हैं।

- विविध प्रसंगों के संवाद तैयार करके मुखौटों के साथ समूह में प्रस्तुतीकरण करने के अवसर दें।
- पशु-पक्षियों के अभिनय के लिए भिन्न-भिन्न मुखौटों की निर्मिति हेतु विद्‌यार्थियों को प्रोत्साहन दें।
- पशु-पक्षियों की आवाजों और हलचलों की ज्यों की त्यों नकल करने हेतु मार्गदर्शन करें।

CG -3/4
C - 3.1/4.1
LO-04AE31/32/37

इसके लिए जन्मदिन के मिलने वाले कागजी मुखौटे उपयोग में लाए जा सकेंगें। आवश्यकतानुसार कागज या कार्ड शीट से मुखौटे तैयार करो।

प्राणी, पक्षी पर आधारित चयनित कहानियों का प्रस्तुतीकरण मुखौटों के साथ करो।

मेरी कृति

- पाठ्‌यपुस्तक के किसी भी एक विषय पर संवाद तैयार करके पात्रों का चयन करो और संवादों तथा वेशभूषा के आधार पर प्रस्तुतीकरण करो।
- तुम्हारे परिसर के व्यवसायियों का निरीक्षण करके उनका अभिनय करो।
- व्यवसायियों के संदर्भ के प्रसंगों का चयन करके मूक अभिनय प्रस्तुत करो।

७. आओ, नाटक की तैयारी करें...

अब तक तुमने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया होगा, हाँ कि ना। हमने कक्षा में भी प्राणी, पक्षी, पारिवारिक व्यक्तियों की आवाजों और हलचलों की नकल तथा मूक अभिनय का प्रस्तुतीकरण किया है। अब हम किसी प्रसंग का प्रस्तुतीकरण करने वाले हैं। तुम तैयार हो न?

प्रस्तुतीकरण के सोपान

अरे हाँ! पर उससे पहले प्रसंग प्रस्तुतीकरण की तैयारी करनी चाहिए। जिस प्रकार हम घर या पाठशाला में कोई कार्यक्रम आयोजित करते हैं तो घर के सारे लोग एकत्रित होकर कार्यक्रम के लिए क्या-क्या सामग्री लगेगी? क्या-क्या तैयारी करनी पड़ेगी? और कौन क्या काम करेगा? कार्यक्रम में कौन-से कपड़े पहनने हैं? ऐसा बहुत कुछ नियोजन करते हैं और उसके बाद कार्यक्रम की शुरुआत करते हैं। नियोजन के अनुसार सब कुछ हो जाने के बाद कार्यक्रम का आयोजन भी बहुत बढ़िया हो जाता है। यह कार्यक्रम जन्मदिन का हो या विवाह का, नियोजन और तैयारी करनी ही पड़ती है।

ठीक उसी तरह हमें नाट्यीकरण के किसी प्रसंग को प्रस्तुत करना हो तो उसके लिए शुरुआत में पहले प्रसंग चुनना पड़ता है। प्रसंग के विषय पर विचार करके पात्र तय करने पड़ते हैं। कौन-सा पात्र कौन करेगा, यह भी निश्चित करना पड़ता है। पात्रों के लिए उचित वेशभूषा, प्रसंगानुरूप सामग्री इकट्ठा करना भी तैयारी का ही एक भाग है।

इसी के साथ संवाद याद करके उसका अभ्यास करना भी बहुत आवश्यक होता है। पर्याप्त अभ्यास के बाद हम प्रत्यक्ष रंगमंच पर प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण कर सकते हैं।

ये सारे नियोजन और पूर्व तैयारी प्रसंग प्रस्तुतीकरण के सोपान ही हैं। साथ में दी गई आकृति से तुम्हें यह अधिक स्पष्ट हो जाएगा।

तो चलो, इसके लिए हम एक प्रसंग चुनें और प्रसंग प्रस्तुतीकरण के सभी सोपानों का उपयोग करके प्रस्तुत करें।

- प्रसंग प्रस्तुतीकरण के विविध सोपान स्पष्ट करें।

CG -2/3
C - 2.1/3.1
LO-04AE25/30

हमारे दैनिक जीवन में हम अनेक लोगों से संवाद करते हैं। बाजार जाने पर सब्जी बेचने वाली का ग्राहकों के साथ संवाद होता है। इस संवाद से हमें वस्तु की कीमत पूछना, निश्चित करना और विनम्रता से बोलना, सीखने को मिलता है। आज हम सब्जीवाली और ग्राहक के बीच के संवाद देखने वाले हैं।

प्रसंग : सब्जी बाजार (सब्जीवाली अलग-अलग सब्जियाँ लेकर बैठी है।)

(पात्र : सब्जीवाली और ग्राहक)

ग्राहक : अरे मौसी! बैंगन कैसे दिए?

सब्जीवाली : एकदम ताजे बैंगन हैं! ३० रुपये में पाव किलो, ले लो, सुबह ही तोड़कर लाई हूँ।

ग्राहक : अरे बाप रे! कल तो भाव २० रुपया था। आज एकदम इतना बढ़ गया? जरा कम करो ना?

सब्जीवाली : अरे भैया, बरसात देखो कितनी हो रही है। खेत से बैंगन निकालना मुश्किल होता है, इसीलिए थोड़े महँगे हैं।

ग्राहक : वह ठीक है, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे पास से ही लेता हूँ। मुझे ५० रुपये में आधा किलो दो और १० की हरी धनिया भी दे दो।

सब्जीवाली : (हँसते हुए) अरे भैया ६० रुपये में तो मुझे भी नहीं पड़ता! चलो तुम्हारा और मेरा मिलाकर १५ रुपये में एक जूड़ी धनिया और ५५ रुपये में बैंगन लगाती हूँ। कुल ७० रुपये दे दो।

ग्राहक : ठीक है। ये लो ७० रुपये। अच्छा ये भिंडी कैसे दी?

सब्जीवाली : भिंडी ६० रुपये किलो। भिंडी बिल्कुल नरम है। लेना हो तो नख लगाकर देखो।

ग्राहक : आधा किलो भिंडी दे दो और हाँ हरी मिर्च और कड़ी पत्ता डालना मत भूलना!

सब्जीवाली : बिल्कुल - बिल्कुल! तुम्हारे माँगने से पहले ही मैंने थैली में हरी मिर्च और कड़ी पत्ता डाल दिया है। ये लो तुम्हारा सब सामान।

ग्राहक : धन्यवाद मौसी। आता हूँ मैं!

सब्जीवाली : आओ, फिर से अवश्य आओ!

- प्रसंग प्रस्तुतीकरण के लिए चुने हुए प्रसंग का वाचन करवा लें।

CG -1
C -1.2
LO-04AE23

पात्र और पात्रों का चयन –

अब यह प्रसंग प्रस्तुत करना है तो पहले इसका विचार करना होगा कि इस प्रसंग में पात्र कितने हैं। इस प्रसंग में सब्जीवाली और ग्राहक दो मुख्य पात्र हैं। इन पात्रों का चयन करते समय सब्जीवाली एक वृद्‌ध महिला है, ग्राहक मध्यम आयु का पुरुष है, यह हमें प्रसंग के संवादों से ध्यान में आएगा। अर्थात एक लड़की और एक लड़का दो विद्‌यार्थियों का इन दो पात्रों के लिए चयन करना पड़ेगा। तो चलो, तुममें से सब्जीवाली मौसी और ग्राहक कौन बनेगा, यह तय करो और अपने-अपने संवाद याद करो तो। आओ, तब तक हम अगली तैयारी करें।

इन पात्रों ने संवाद अच्छी तरह याद करना अपेक्षित है। तभी तो अत्यंत सहजता से वे संवाद बोल पाएँगे।

वेशभूषा –

अब पात्र तय हो गए पर उनकी आयु और भूमिका पर विचार करना चाहिए। सब्जीवाली ग्राहक की अपेक्षा उम्र में बड़ी महिला हो, यह ध्यान में रहे। सब्जीवाली छहवारी या नौवारी साड़ी पहनी हो। माथे पर बड़ा-सा कुंकुम का गोल टीका, कमर पर पैसे की छोटी थैली या बटुआ, सामने सब्जियों की टोकरियाँ।

ग्राहक कोई मध्यम आयु का पुरुष, पतलून कमीज पहना हुआ, हाथ में बाजार के लिए कपड़े की थैली लिए। ऐसे प्रसंगानुरूप कपड़े निश्चित करने होंगे। इसी को नाटक की भाषा में वेशभूषा कहते हैं।

रूप सज्जा –

प्रसंग प्रस्तुतीकरण बिल्कुल वास्तविक लगे इसके लिए वेशभूषा के साथ ही रूप सज्जा भी महत्वपूर्ण होती है। जैसे कि चयनित सब्जीवाली, यह पात्र बड़ी उम्र की है। अर्थात बाल थोड़े सफेदी लिए हुए आदि। अब तुम्हारे ध्यान में आया ही होगा कि पात्रों का उनकी भूमिका के अनुसार मेकअप करना ही रूप सज्जा है।

अब तक हमें पात्र के अनुसार वेशभूषा अर्थात कपड़े, रूप सज्जा के लिए कुछ सामग्री आवश्यक होगी। तो चलो फिर, प्रसंग प्रस्तुतीकरण के लिए सामग्री का चयनकर एकत्रित करें।

- प्रसंग प्रस्तुतीकरण के लिए चयनित प्रसंग के अनुसार पात्रों का चयन पर चर्चा करवा लें।
- प्रसंगानुरूप वेशभूषा तथा रूप सज्जा का चयन कैसे करें, इसपर चर्चा करें।
- प्रसंगानुरूप वेशभूषा तथा रूप सज्जा के चयन का अवसर दें।

CG -3
C -3.1/3.2
LO-04AE31/34

चयन करें सामग्री का

अब सब्जीवाली और ग्राहक के इस प्रसंग के प्रस्तुतीकरण हेतु हमें कौन-कौन-सी सामग्री लगेगी भला ?

तराजू, सब्जियाँ, छोटी टोकरियाँ, थैली, पैसे, बटुआ, साड़ी आदि। बढ़िया सूची बनाई है।

चलो फिर इस सामग्री को एकत्रित करने की शुरुआत करो।

नीचे दी गई सामग्री का नाट्य प्रसंग के अनुसार उपयोग करो।

उपर्युक्त सामग्री का निरीक्षण करके निम्नांकित प्रसंगों में वर्गीकरण करो।

१. अस्पताल के प्रसंग	२. रसोईघर के प्रसंग	३. कक्षा के कमरे का प्रसंग
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

- प्रसंग प्रस्तुतीकरण के लिए चयनित प्रसंग के अनुसार आवश्यक सामग्री की सूची बनाने के लिए कहें।
- सामग्री का चयन करते समय वह प्राकृतिक या पर्यावरणपूरक हो, इस संबंध में जानकारी दें।

CG -2/4
C - 2.1/4.1
LO-04AE25/36

पर्यायी सामग्री का उपयोग

अब देखो, हमने लगभग सारी तैयारी कर ली किंतु अपने प्रस्तुतीकरण के लिए क्या सब्जियाँ, तराजू, थैली, पैसे सब कुछ लाना संभव होगा? नहीं ना? तो फिर आओ हम उसके लिए पर्याय खोजें।

अब सब्जी बेचने वाली मौसी के पास भिन्न-भिन्न सब्जियाँ दिखानी होगी तो वे कैसे दिखा पाएँगे, इसके लिए विचार करो।

सब्जियों के लिए अपने परिसर के पेड़ों के रंगीन पत्ते, फूल, फल्लियाँ, घास का सब्जियों के रूप में उपयोग किया जा सकेगा। छुट्टे पैसे के रूप में छोटे-छोटे चपटे पत्थर जमा करेंगे, नोटों के लिए कागज के टुकड़ों का उपयोग करेंगे यानी हो गई कि नहीं सामग्री तैयार? है कि नहीं मजेदार! हम गुड्डे-गुड़ियों के 'घर-घर' खेल में भी इसी तरह सामग्री जमा करते हैं, सही है ना!

सामग्री निर्मिति

अरे! बहुत-सी सामग्री परिसर में मिल गई तो कुछ पर्यायी सामग्री उपयोग में लाने का निश्चय किया गया। लेकिन तराजू के रूप में कौन-सी पर्यायी सामग्री का उपयोग करें, यह नहीं सूझ रहा है ना!

चलो, तो फिर हम एक तराजू तैयार करें!

आसान है। हमने बाजार में तराजू देखा है। दोनों ओर दो पलड़े होते हैं और उनके समतोल एक डंडी होती है। अब पलड़ों के लिए दो कागजी प्लेट लो। डंडी के लिए एक लकड़ी लो। अब चित्र में दिखाए अनुसार चरणबद्ध तरीके से कृति करके तराजू तैयार करो। वजनों के लिए छोटे-बड़े हल्के पत्थरों का उपयोग करो। अर्थात जब प्रसंग प्रस्तुतीकरण हेतु आवश्यक सामग्री उपलब्ध न हो, पर्यायी सामग्री भी उपलब्ध न हो तो ऐसे समय में कुछ सामग्री तैयार करके उपयोग में लाई जा सकती है।

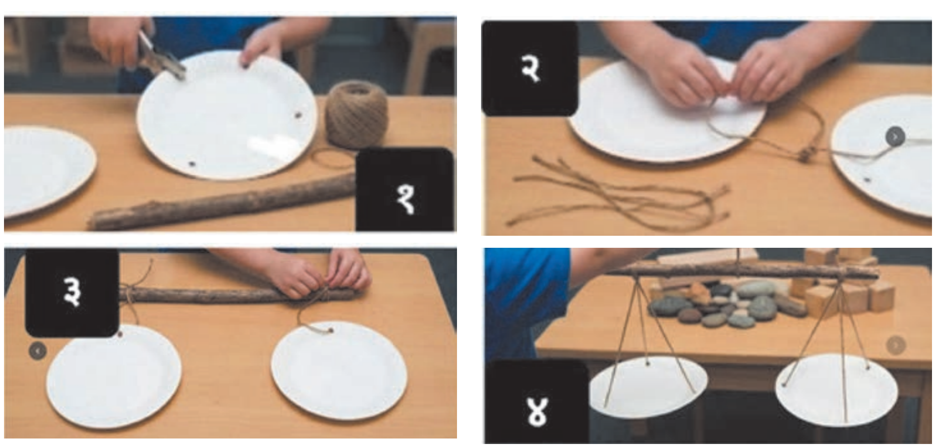

- प्रसंगानुसार आवश्यक सामग्री उपलब्ध न होने पर पर्यायी सामग्री का विचार करने के लिए कहें। प्रसंग के अनुरूप कौन-कौन-सी पर्यायी सामग्री का उपयोग किया जा सकता है, इसपर चर्चा करें।
- पर्यायी सामग्री चुनते समय वह प्राकृतिक या पर्यावरणपूरक हो, इस संबंध में जानकारी दें।

CG -2/3/4
C - 2.1/3.1/4.1
LO-04AE/25/30 /36

सामग्री की रचना करते हुए

प्रसंग या नाटक प्रस्तुत करते समय उसके लिए लगने वाली सामग्री का चयन, समूह में चर्चा करके किया है। जो सामग्री मिल गई है, उसे जमा करके अभ्यास शुरू करें। नहीं तो प्रस्तुतीकरण के समय कुछ गड़बड़ न हो इसके लिए सब क्या ध्यान में रखें और क्या टाल दें, आओ यह देखें।

- सामग्री उपयोग में आसान और हल्की होनी चाहिए।
- जो सामग्री हमारे पास नहीं है उसके लिए वैसी ही सामग्री कागज/बारीक लकड़ियों से बनवाएँ।
- अभ्यास के समय इस सामग्री का लगातार उपयोग होगा। इस कारण यह टूटे नहीं इसकी सावधानी रखें।
- पैनी धार या नुकीली सामग्री का उपयोग करते समय कटे या लगे नहीं इसकी भी सावधानी रखें।
- हमारे कलाकार मित्र या सहेलियाँ रंगमंच पर सामग्री व्यवस्थित ले जा पाएँ, इसके लिए उसकी व्यवस्था प्रस्तुतीकरण आरंभ होने से पहले करें।
- रंगमंच के बायीं या दायीं ओर किंतु दर्शकों को दिखाई न दे, ऐसे स्थान पर उसे रखें। सामग्री के साथ अभ्यास करते समय शिक्षक और अन्य मित्र सहेलियाँ जैसा सुझाएँ वैसा आवश्यक परिवर्तन करवा लें।
- अभ्यास के बाद सारी सामग्री जमा करके योग्य स्थान पर रखें, यह महत्त्वपूर्ण बात भूलें नहीं।
- आवश्यकता न होने पर इस सामग्री के साथ खेलें नहीं।

अब तुम्हारे ध्यान में आ गया होगा कि किसी भी प्रसंग का नाट्यीकरण करना हो तो प्रसंग का चयन, पात्र, संवाद, सामग्री चयन, वेशभूषा, रूपसज्जा और अभ्यास करके अंतिम प्रस्तुतीकरण करना पड़ता है। तो चलो फिर पहले पढ़े हुए प्रसंग की पूर्व तैयारी करके प्रस्तुतीकरण करें।

कक्षा में प्रसंग का अभ्यास और प्रस्तुतीकरण करते समय कक्षा के अन्य विद्यार्थियों का निरीक्षण करके आवश्यक सुधार सुझाएँ। प्राप्त सूचना के अनुसार प्रस्तुतीकरण में आवश्यक परिवर्तन करो।

- प्रसंग के अनुसार एकत्र की गई अथवा निर्मित की गई सामग्री की व्यवस्था कैसे करें, इसकी जानकारी दें।
- सामग्री का उपयोग और देखभाल का महत्व समझाएँ।

CG -2/3/4
C -2.1/3.1/3.2/ 4.1
LO-04AE26/28/29/33/34/36

मेरी कृति

१) तुम्हारे पास राइटिंग पैड होगा ही। उसका उपयोग हम नाटक में किन-किन वस्तुओं के पर्याय के रूप में कर सकते हैं, लिखो।

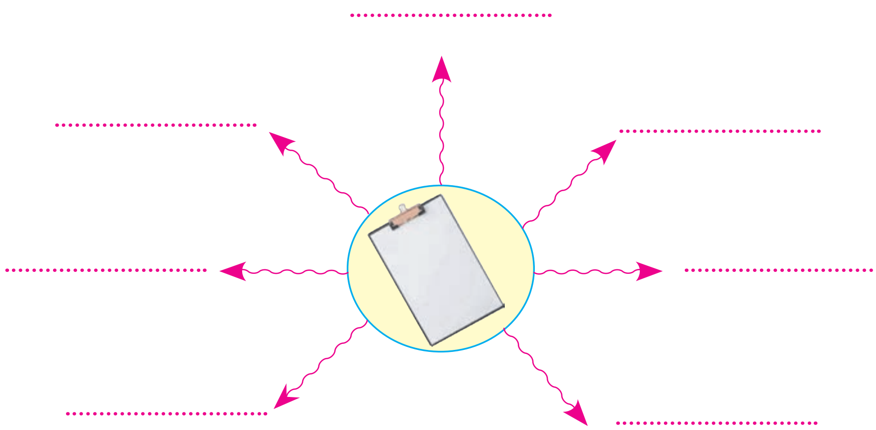

२) पाठ्‌यपुस्तक का कोई एक प्रसंग चुनो और उसपर आधारित प्रस्तुतीकरण के सोपानों की पूर्व तैयारी करके समूह में प्रस्तुतीकरण करो।

- प्रस्तुतीकरण में लगने वाली वस्तु उपलब्ध न हो तो उसके जैसी दिखने वाली एक ही वस्तु का उपयोग विविध प्रकार से कैसे किया जा सकेगा, इसपर चर्चा करके उसके अनुसार उपयोग करने का अवसर दें।.
- एक ही वस्तु का विविध प्रकार से उपयोग करने के लिए चर्चा करें।

CG –2/3
C – 2.1/3.1/3.2
LO – 04AE25/26/30/29/31/33/36

८. चलो, रंगमंच पर...

चलो, हम यह कहानी पढ़ें और प्रस्तुत करें।

भरतपुर नाम का नगर था। उस नगर में विजय सिंह नाम का राजकुमार रहता था। वह बहुत साहसी था। एक दिन उसने अकेले ही जंगल में जाने का विचार किया। भोर होते ही मुर्गे ने बाँग दी और वैसे ही राजकुमार उठ गया। स्नान करके वह तैयार हो गया। साथ में तलवार लेकर वह निकल पड़ा। घोड़े पर बैठ वह धीरे-धीरे भरतपुर के बाहर आ गया। अब नगर निकल चुका था। विजय सिंह ने घोड़े की गति बढ़ा दी। खेत समाप्त हो गया। धीरे-धीरे जंगल आरंभ हो गया। एक स्थान पर रुककर घोड़े को एक पेड़ से बाँधकर विजय सिंह जंगल में पैदल ही निकल पड़ा। सूखे पत्तों के कचरे की आवाज आ रही थी। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ रहा था, वैसे-वैसे हवा का वेग बढ़ता जा रहा था। तूफानी हवा चली। पेड़ों की शाखाएँ हिलने लगीं। सूखे हुए पेड़ गिरने लगे। बिजलियों की कड़कड़ाहट आरंभ हो गई। अचानक सामने एक भयंकर विकराल राक्षस आ खड़ा हुआ। वह बोला, "राजकुमार, मैं तुझे कोई चोट नहीं पहुँचाऊँगा लेकिन तुझे सावधान कर रहा हूँ। यह जादू का जंगल है। इसका सामना तुम नहीं कर पाओगे और तेरी तलवार भी कुछ नहीं कर सकेगी। उस जादूगर के आने से पहले तू जल्दी से लौट जा।"

लेकिन विजय सिंह घबराया नहीं। वह कुछ कहता इससे पहले राक्षस गायब हो गया और भारी वर्षा होने लगी। जंगल का एक-एक पेड़ अपने आप अदृश्य होने लगा। धीरे-धीरे पूरा जंगल नहीं के समान हो गया और वहाँ उजाड़ बंजर भूमि दिखाई देने लगी। विजय सिंह दौड़ता हुआ जहाँ घोड़ा बँधा था, उस स्थान पर आया। विजय सिंह ने घोड़े को एड़ी मारी और भरतपुर की ओर निकल पड़ा। घोड़ा जोर से हिनहिनाया और पूरे वेग से दौड़ने लगा। राजकुमार सकुशल नगर में पहुँच गया।

- समूह के विद्यार्थियों को अदल-बदलकर कहानी सुनाने का अवसर दें। इस कहानी पर आधारित प्रसंग प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- संगीत निर्माण करने वाले साधन खोजने में मार्गदर्शन करें।

CG -2
C - 2.2
LO-04AE27

क्यों बच्चो, कैसी लगी कहानी? इसके प्रसंग बारीकी से पढ़े ना? अब यह कहानी प्रस्तुत करते समय उसके प्रसंग बिल्कुल सच्चे लगें, इसके लिए उसमें आई आवाजें प्रत्यक्ष निकालने का प्रयत्न करो। उससे पहले कहानी में आई आवाजों की सूची बनाओ।

कहानी में आई आवाजों की सूची

....

....

....

....

....

ये सारी आवाजें निकालने के लिए किन-किन का उपयोग किया जा सकेगा? कुछ आवाजें तो हम अपने मुँह से निकाल सकते हैं। कुछ आवाजें निकालने के लिए परिसर की वस्तुओं का उपयोग कर सकते हैं। देखो तो हम किन-किन वस्तुओं से ये आवाजें निकाल सकते हैं। उनकी अपनी कॉपी में सूची बनाओ।

समूह का एक व्यक्ति यह कहानी सबको ऊँची आवाज में सुनाएगा और समूह के अन्य लड़के-लड़कियाँ परिसर की वस्तुओं की सहायता से आवाज निकालकर कहानी और अच्छी लगे, इसके लिए सहयोग करेंगे। चलो, अभ्यास करो और मित्र सहेलियों द्‌वारा सुझाई सूचनाओं के अनुसार आवश्यक परिवर्तन करो। प्रस्तुतीकरण के लिए पुनः तैयार हो जाओ।

ये सारी बातें ध्यान में रखीं तो फिर सामग्री सहित अभ्यास बढ़िया होगा और प्रस्तुतीकरण सहज एवं मनोरंजक होगा।

- विविध प्रकार के प्रसंग देकर समूह में प्रस्तुतीकरण कक्षा में करवा लें। अन्य बच्चों को उसपर प्रतिक्रिया देने के लिए कहें। आई हुई सूचनाओं का पालनकर पुनः प्रस्तुतीकरण करने का अवसर दें।
- प्रस्तुतीकरण के सोपानों का महत्त्व समझने के लिए विविध प्रसंगों का समूह में वैयक्तिक प्रस्तुतीकरण करने के अवसर दें।

CG -2
C - 2.1
LO-04AE27
04AE28
04AE29

पहचान तकनीकी अंगों की

कला सादर करणाऱ्याला म्हणती कलाकार,
स्टेज किंवा व्यासपीठ आता **रंगमंच** बनवणार.
नाटकांमध्ये कलाकारांना म्हणतात पात्र,
सराव म्हणजे प्रॅक्टिस करतात अहोरात्र.
वेगवेगळ्या लाईट्सने रंगमंच जातो उजळून,
प्रकाश योजना म्हणजे पहा थोडी जवळून.
जसा करायचा रोल, तसे कपडे घालू अंगात,
नाटकाच्या भाषेत त्याला **वेशभूषा** म्हणतात.
चेहऱ्यावर रंग लावू, बसू मेकअप करायला,
रंगभूषा म्हणती या नाटकापूर्वीच्या कृतीला.
केशभूषा म्हणजे हेअर स्टाईल करून पाहू,
केसांचा टोप म्हणजे डोक्यावर विग लावू.
संवाद म्हणताना मागे संगीत ऐकू येते जरा,
पार्श्वसंगीतामुळे तर प्रसंग वाटतो खराखुरा.
रंगमंचावर नाटकात जे जे साहित्य वापरतो,
त्या सगळ्याच वस्तूंचा समावेश **नेपथ्यात** होतो.
अभिनयाला जोड असते या साऱ्या गोष्टींची,
आता ओळख झाली आम्हां **तांत्रिक अंगाची**.

– अमोल जाधव

भावार्थ

कला प्रस्तुत करने वाले को कहते हैं कलाकार,
रंगमंच बनेगा अब स्टेज या **मंच** का आधार।
नाटकों में कलाकारों को कहते हैं पात्र,
अभ्यास अर्थात प्रैक्टिस करते हैं दिन-रात ।
विभिन्न प्रकाशों से जगमगाता है रंगमंच,
प्रकाश योजना अर्थात देखो जरा नजदीक से।
भूमिका निभानी हो जैसी पहनो वैसे कपड़े,
नाटक की भाषा में उसे कहते हैं **वेशभूषा** ।
रंग लगाकर चेहरे पर करते हैं मेकअप,
नाटक से पहले की कृति कहलाती है **रंगभूषा** ।
केशभूषा अर्थात हेयर स्टाइल बनाते हैं,
बालों का टोपा अर्थात सिर पर विग लगाते हैं।
संवाद के पीछे सुनाई देता है हल्का-सा संगीत,
दृश्य को वास्तविक बना देता है **पार्श्व संगीत**।
जो-जो सामग्री नाटक में उपयोग में आती है,
वे सभी वस्तुएँ **नेपथ्य** में समाविष्ट हो जाती हैं।
अभिनय का साथ इन सभी बातों से जुड़ा होता है,
हो गई है अब हमें रंगमंच की **तकनीकी पहचान** ।

नाटक में कौन-कौन-सी तकनीकी वस्तुओं का उपयोग किया जाता है, इसका परिचय हमें हो गया। धीरे-धीरे हम इन सब तकनीकी अंगों का उपयोग करने वाले हैं। अब एक प्रसंग देखें।

- तकनीकी अंगों की पहचान कविता के माध्यम से कराएँ।
- विद्यार्थियों को तकनीकी वस्तुओं का उपयोग करके प्रस्तुतीकरण के अवसर दें।

CG -3
C - 3.2
LO-04AE34

प्रसंग

राजू, सुलताना और रीटा मैदान पर खेल रहे थे। खेलते-खेलते उन्हें पचास रुपये की नोट पड़ी दिखाई दी। सुलताना ने वह दोनों को दिखाई। उन्होंने आस-पास देखा तो कोई भी दिख नहीं रहा था। इस कारण वह नोट किसकी है, यह समझ में नहीं आ रहा था। राजू बोला, "कोई दिखाई नहीं दे रहा है तो ये पैसे हमारे ही समझो।" उसने रास्ते के पार स्थित दुकान में जाकर खाने के लिए कुछ लाने का विचार रखा किंतु रीटा तैयार नहीं थी। उसे डर लग रहा था। सुलताना ने भी राजू को ना कह दिया, "दूसरे किसी के पैसे क्यों लें? जो अपना नहीं उसपर अपना अधिकार नहीं", ऐसा कहते हुए सभी ने वे पैसे कक्षा में मैडम को दे दिए। दूसरे दिन प्रार्थना के समय वह नोट किसकी है यह पूछा जाना था तथा जिसकी हो वह पहचान बताकर नोट ले जाने वाला था।

इस प्रसंग में राजू, सुलताना, रीटा और मैडम ऐसे चार लोग हैं अर्थात ये चार पात्र हैं। आओ, अब इन पात्रों के लिए इस प्रसंग के संवाद तैयार करें, तभी इस प्रसंग का प्रस्तुतीकरण कर पाएँगे।

संवाद

(राजू, सुलताना और रीटा मैदान पर खेल रहे हैं।)

राजू – पकड़-पकड़ आ पकड़।

सुलताना – अरे रुक, तुझे क्या लगा मैं तुझे पकड़ नहीं सकती? लेकिन उससे पहले रीटा को आउट करती हूँ।

रीटा – ऐसा क्या? मुझे आउट करेगी क्या? करके दिखा।

सुलताना– हाँ करने ही वाली हूँ, वह भी दोनों को एकदम!

राजू– अरे इधर आओ। ये देखो मुझे क्या मिला।

रीटा – क्या रे क्या मिला?

राजू – ये देख क्या है।

सुलताना– बाप रे! पचास की नोट?

रीटा – किसकी है यह और यहाँ कैसे?

राजू – मुझे नहीं पता और आस-पास भी कोई दिख नहीं रहा है। सारे बच्चे कक्षा में भी चले गए। मुझे क्या लगता है, हम ये नोट लें और उस तरफ दुकान से कुछ खाने के लिए लाएँ।

- संवादों के आधार पर पात्र, प्रसंग और स्टेज का उचित उपयोग करने हेतु शरीराकृति परदे का उपयोग करके प्रस्तुतीकरण कराएँ।

CG –3
C – 3.2
LO–04AE33

सुलताना – ना रे बाबा, दूसरे के पैसे हम क्यों लें? जिसपर अपना हक नहीं उसे लेना क्यों? मैं तुम्हारे साथ नहीं आऊँगी।

रीटा – सुलताना जो बोल रही है वह सच है। दूसरे के पैसे से लिया हुआ पदार्थ मैं नहीं खाऊँगी।

राजू– अरे, फिर इस पचास रुपये का करना क्या है?

सुलताना– चलो, हम ये पैसे अपनी मैडम के पास देंगे।

रीटा– हाँ चलो, कक्षा में चलते हैं।

(सब मैडम के पास जाते हैं।)

मैडम– क्यों बच्चों, क्यों आए हो?

सुलताना– मैडम, ये पैसे हमें मैदान पर पड़े मिले । आपको देने के लिए आए हैं। मैडम ये किसके पैसे हैं, हमें पता नहीं। हम कल प्रार्थना के समय सब बच्चों को पूछेंगे। जिसके पैसे होंगे वह पहचान बताकर ले जाएगा।

मैडम – सच में तुम सब ईमानदार बच्चे हो। अपनी पाठशाला को तुम्हारे जैसे विद्‌यार्थियों पर गर्व है।

कक्षा में ही इसका प्रस्तुतीकरण किया जा सके अर्थात हमें नाट्‌यगृह तैयार करना होगा। इसके लिए बेंचों की रचना थोड़ी बदलकर श्यामपट्‌ट के सामने की जगह खुली कर लें जिससे पात्रों को हलचल करने तथा आने-जाने के लिए जगह मिलेगी। बच्चों की शरीराकृति का परदा बनाएँगे। वह परदा सरकाते समय लड़के बायीं ओर से दायीं ओर सरकेंगे और प्रस्तुतीकरण कर पाएँगे।

प्रकृति की प्रकाश योजना

हमने कहानी चुनी। उसपर संवाद तैयार किए। उसके पात्र चुनकर अभ्यास शुरू किया। उसे योग्य संगीत देने हेतु सामग्री भी चुनी। अब पात्रों को उचित वेशभूषा पहनाकर अभ्यास आरंभ किया। हमारे मित्रों ने जो सुधार बताए, उसके अनुसार थोड़ा परिवर्तन किया और अब कक्षा में ही अपना नाट्‌यगृह तैयार करके उसका अभ्यास आरंभ भी कर दिया किंतु अपने नाटक में या उस प्रसंग में यदि रात, सुबह, दोपहर के पहर दिखाने हों तो क्या करेंगे?

आओ, उसके लिए एक युक्ति करें।

रात दिखाने के लिए कक्षा के दरवाजे खिड़कियाँ बंद करो। अर्थात अँधेरा हो जाएगा और रात दिखने लगेगी। दरवाजे खिड़कियाँ धीरे-धीरे खोलें तो होगी भोर।

प्रकाश पूर्ण रूप से आ गया तो हो गई सुबह।

फिर से इसी तरह धीरे-धीरे दरवाजे और खिड़कियाँ बंद करेंगे तो हमारे नाटक की रात हो जाएगी।

- मानव शरीराकृति का प्रस्तुतीकरण में योग्य उपयोग करवा लें।
- रंगमंच पर प्राकृतिक प्रकाश योजना के लिए कक्षा के दरवाजे, खिड़कियों के विषय में विद्‌यार्थियों को जानकारी दें।
- संपूर्ण प्रस्तुतीकरण हेतु पाठ्‌यपुस्तक का प्रसंग चुनने का अवसर दें।

CG -3/4
C - 3.2/4.1
LO-04AE33/34 /35/36

ध्यान में रखो

ब्लैक आउट

नाटक के दो दृश्यों के बीच कुछ सेकंड के लिए अँधेरा किया जाता है और फिर पुनः रंगमंच पर प्रकाश करके अगला दृश्य आरंभ होता है। बीच के इस अँधेरे की अवधि को नाटक की भाषा में 'ब्लैक आउट' कहते हैं।

मेरी कृति

१. पाठ्‌यपुस्तक से कोई प्रसंग चुनकर उसपर आधारित संवाद तैयार करो। आवश्यक सामग्री, वेशभूषा, ध्वनि एवं प्रकाश योजना का उपयोग करके सामूहिक प्रस्तुतीकरण करो।

संगीत

९. आओ, सब मिलकर गाएँ ...

दैनिक जीवन में हम अनेक प्रकार के संगीत सुनते हैं। जैसे पाठशाला में प्रार्थना, राष्ट्रगान बोलते हैं या गानों की अंताक्षरी खेलते हैं। ऐसे ही कुछ बढ़िया गानों की पहचान करने वाले हैं। चलो, तो फिर सब मिलकर गाएँ, नाचें, आनंद उठाएँ !

परिचित संगीत

किसी भी शिक्षा कार्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम का आरंभ सरस्वती वंदना से करना भारतीय संस्कृति की प्राचीन परंपरा है। आओ, सरस्वती वंदना से हम शुरुआत करें।

नमस्ते शारदे देवी, सरस्वती मतिप्रदे ।
वस त्वं मम जिह्वाग्रे, सर्व विद्या प्रदाभव॥
नमस्ते शारदे देवी, वीणापुस्तक धारिणी।
विद्यारंभं करिष्यामि, प्रसन्ना भव सर्वदा॥

(**भावार्थ**) **:** हे शारदे देवी तुम्हें प्रणाम, बुद्धिदायिनी सरस्वती आप मेरी जीभ के अग्रभाग में निवास करें और मुझे सब प्रकार की विद्याएँ प्रदान करें। हाथ में पुस्तक और वीणा धारण करने वाली हे शारदा देवी, तुम्हें प्रणाम है। मैं अब पढ़ाई आरंभ करने वाला हूँ। इस कारण आप सदैव प्रसन्न रहना।

- सरस्वती वंदना का सुर-ताल में अभ्यास करवा लें।
- सरस्वती वंदना के प्रस्तुतीकरण में सभी का सहभाग लें।
- प्रथम पृष्ठ का क्यू आर कोड स्कैन करके सुर-ताल में अभ्यास करवा लें ।

CG – 1
C – 1.1
LO–04AE40

देशभक्ति गीत

हमारे भीतर राष्ट्रप्रेम, साहस, कर्तव्यबोध जागृत करने के लिए देशभक्ति के गीत गाए जाते हैं। चलो, फिर ऐसे ही देशभक्ति के गीत सुनें और तालियों की सहायता से सुर-ताल में गाएँ।

उठा राष्ट्रवीर हो

उठा राष्ट्रवीर हो, सज्ज व्हा उठा चला
सशस्त्र व्हा, उठा चला, उठा राष्ट्रवीर हो ॥ध्रु॥

युद्ध आज पेटले, जवान चालले पुढे
मिळून सर्व शत्रूला क्षणात चारू या खडे
एकसंघ होऊनी लढू चला, लढू चला
उठा उठा, चला चला ॥१॥

वायुपुत्र होऊनी धरू मुठीत भास्करा
होऊनी अगस्तीही पिऊन टाकू सागरा
रामकृष्ण होऊ या, समर्थ होऊ या चला
उठा उठा, चला चला ॥२॥

चंद्रगुप्त वीर तो फिरून आज आठवू
शूरता शिवाजीची नसानसांत साठवू
दिव्य ही परंपरा, अखंड चालवू चला
उठा उठा, चला चला ॥३॥

यज्ञकुंड पेटले प्रचंड हे सभोवती
दुष्ट शत्रू मारूनी तयात देऊ आहुती
देवभूमी ही अजिंक्य, दाखवू जगा चला
उठा उठा, चलाचला ॥४॥

कवि- रविंद्र भट

भावार्थ-उठो राष्ट्रवीरों

उठो राष्ट्रवीरो, तैयार हो जाओ, उठो चलो।
शस्त्र धारण करो, उठो चलो, उठो राष्ट्रवीरो। ।।ध्रु॥

भड़की आज ज्वाला युद्ध की, जवान आगे बढ़ चलें।
आओ, सब मिल शत्रु को पल भर में परास्त कर दें।
आओ, हम एकजुट होकर लड़ें, चलो लड़ें।
उठो-उठो, चलो, चलें। ॥१॥

वायुपुत्र बन सूर्य को पकड़ लें अपनी मुट्‌ठी में ।
होकर अगस्त्य पी जाएँ सागर को भी
आओ, राम और कृष्ण जैसे बनें, समर्थ बनें।
उठो-उठो, चलो, चलें। ॥२॥

वीर चंद्रगुप्त को आज फिर स्मरण करें।
शौर्य शिवाजी का अपनी नस-नस में भरें ।
इस दिव्य परंपरा को चलो निरंतर आगे बढ़ाएँ।
उठो-उठो, चलो, चलें। ॥३॥

चारों ओर यह विशाल यज्ञकुंड प्रज्वलित हो उठा है।
दुष्ट शत्रुओं का संहार करके उसमें आहुति दें।
देवभूमि यह अजेय सिद्ध कर दिखाएँ संसार को।
उठो-उठो, चलो, चलें। ॥४॥

- देशभक्तिपरक समूह गीत का सुर-ताल में गायन करवा लें।
- राष्ट्रीय एकात्मता का महत्त्व बताएँ।
- ताली के आधार पर ताल देने के लिए कहें और गायन करवा लें।
- प्रथम पृष्ठ का क्यू आर कोड स्कैन करके सुर-ताल में अभ्यास करवा लें।

CG - 1
C - 1.1/1.2
LO-04AE41/42

प्रकृति गीत

वर्षा में भीगना किस-किस को पसंद है? वर्षा होने पर मन में उत्साह निर्माण होता है तब हम क्या करते हैं। आओ आज हम वर्षा पर आधारित यह गीत अभिनय के साथ गाएँ।

धोय धोय पाऊस

धीतां ता, धीतां ता, धीतां ता धीतां
धोय धोय धोय धोय
पाऊस पडतोय रे
धीतां ता, धीतां ता
माझ्या मनीचा मोर कसा नाचतोय रे
तकिट धा, तकिट धा ॥ध्रु॥

पाऊस रानात, पाऊस पानात
पाऊस वाऱ्यात, डोंगर दऱ्यात
टेरेस, बाल्कनी भिजवून जातोय रे ॥१॥

झिम्माड पाऊस, वेल्हाळ वाटतो
नदीत तुफान दुथडी वाहतोय
रेनकोट नसताना पाऊस गाठतोय रे ॥२॥

मुसळधारांनी पडतो पाऊस
वाकडातिकडा कोसळतो पाऊस
चारही दिशांनी पाऊस झोडतोय रे ॥३॥

कवि - चारुता प्रभुदेसाई

भावार्थ-धुआँधार बारिश

धीतां ता, धीतां ता धीतां
धुआँधार-धुआँधार-धुआँधार
बारिश हो रही रे ।
धीतां ता, धीतां ता,
मेरे मन का मोर कैसे नाच रहा रे ।
तकिट धा, तकिट धा। ॥ ध्रु ॥

बारिश जंगल में, बारिश पत्तों पर,
बारिश हवाओं में, पहाड़ों घाटियों में,
टेरेस-बालकनी भिगोती चली जा रही रे। ॥१॥

झमाझम बारिश, बड़ी ही प्यारी लगती है,
नदी में वेग से दोनों किनारे उफन रहे हैं,
रेनकोट न होने पर भी बारिश आकर घेर रही रे। ॥२॥

मूसलाधार बरसती है बारिश,
टेढ़ी-मेढ़ी दिशाओं से बरसती है बारिश,
चारों दिशाओं से बारिश जोर-जोर से बरस रही रे। ॥३॥

- गीत का साभिनय अभ्यास करवा लें।
- सबके सहभाग से गीत का साभिनय प्रस्तुतीकरण सुर-ताल में करवा लें।
- प्रथम पृष्ठ पर दिया गया क्यू आर कोड स्कैन करके सुर-ताल में अभ्यास करवा लें।

CG - 1
C - 1.1
04AE40/ 41

आओ, और कुछ परिचित गीत गाएँ

प्रार्थना

तू बुद्‌धि दे, तू तेज दे, नवचेतना विश्वास दे
जे सत्य सुंदर सर्वथा आजन्म त्याचा ध्यास दे ॥ध्रु॥

हरवले आभाळ ज्यांचे हो तयांचा सोबती
सापडेना वाट ज्यांना हो तयांचा सारथी
साधना करिती तुझी जे नित्य तव सहवास दे ॥१॥

जाणवाया दुर्बलांचे दुःख आणि वेदना
तेवत्या राहो सदा रंध्रातुनी संवेदना
धमन्यांतल्या रुधिरास या खल भेदण्याची आस दे
सामर्थ्य या शब्दांस आणि अर्थ या जगण्यास दे ॥२॥

सन्मार्ग आणि सन्मती लाभो सदा सत्संगती
नीती ना ही भ्रष्ट हो जरी संकटे आली किती
पंखात या बळ दे नवे, झेपावण्या आकाश दे ॥३॥

कवि– गुरु ठाकूर

भावार्थ–प्रार्थना

तू बुद्‌धि दे, तू तेज दे, नई चेतना का हमें विश्वास दे।
जो सत्य सुंदर है, जीवन भर उसी की आस दे। ।।ध्रु।।

खो गया आकाश जिनका बन तू उनका ही साथी ।
मार्ग जिन्हें नहीं मिलता, बन जा उनका तू सारथी ।
करते हरदिन साधना, उन्हें तेरा सदा साथ दे। ।।१।।

दुर्बलों के दुख और पीड़ा का एहसास हो सके,
भीतर सदा संवेदनाएँ जागृत और प्रज्वलित रहें।
धमनियों में रक्त को दुष्टता को भेदने की चाह दे,
शब्द को सामर्थ्य जीवन को अर्थ का एहसास दे।।२।।

सुपथ और सुमति के संग मिले सदैव सत्संगति।
संकटों से हारकर भ्रष्ट न हो कभी हमारी सुनीति।
पंखों को नई शक्ति दे और उड़ान को आकाश दे।।३।।

- विविध प्रकार के गीत सुनाकर उनकें अंतर समाझाएँ ।
- विविध गीतो का अभ्यास करावाएँ और प्रत्येक को प्रस्तुतीकरण करने का अवसर दें।
- प्रथम पृष्ठ का क्यु आर कोड स्कैन करके सुर–ताल में अभ्यास करवा लें।

CG – 1
C – 1.1
LO–04AE40

बालगीत– शाळेला छान छान बनवायचं

साऱ्यांनी मिळून ठरवायचं
शाळेला छान छान बनवायचं ॥ध्रु॥
करायचा नाही कागद कचरा
शाळेचा चेहरा ठेवायचा हसरा
झाडा फुलांनी नटवायचं ॥१॥
थेंब थेंब पाण्याचा वाचवायचा
जपायचा आणि साचवायचा
ताई – दादाला सांगायचं
शाळेला छान छान बनवायचं ॥२॥

कवि – राजेंद्र सोमवंशी

भावार्थ–बालगीत

विद्यालय को सुंदर–सुंदर बनाना है,
सब मिलकर मन में निश्चय कराना है।
विद्यालय को सुंदर–सुंदर बनाना है ॥ ध्रु ॥
नहीं करना है कागज–कचरा,
विद्यालय का हँसता चेहरा,
पेड़ों, फूलों को सजाना है ॥१॥
पानी की हर एक बूँद बचाकर
उसे जतनकर संचय करना है।
दीदी, भैया को भी बताना है,
विद्यालय को सुंदर–सुंदर बनाना है। ॥२॥

अभंग

वृक्षवल्ली आम्हा सोयरी वनचरे। पक्षी ही सुस्वरे आळविती॥ ध्रु ॥
येणे सुखे रुचे एकांताचा वास। नाही गुणदोष अंगा येत ॥१॥
आकाश मंडप पृथ्वी आसन। रमे तेथे मन क्रीडा करी॥२॥
कंथा, कमंडलू देह उपचारा, जाणवितो वारा अवसरु॥३॥
हरिकथा भोजन परवडी विस्तार। करोनि प्रकार सेवु रुची॥४॥
तुका म्हणे होय मनासी संवाद। आपुलाचि वाद आपणासी॥५॥

– संत तुकाराम

भावार्थ

पेड़–पौधे और वनचर हमारे संबंधी।
पक्षी भी मधुर स्वर में गान करते हैं। ॥ ध्रु ॥
इस सुखद एकांतवास में आनंद है आता ।
किसी के गुण–दोष का प्रभाव न आने पाता। ।।१।।
आकाश मेरा मंडप है और पृथ्वी मेरा आसन,
वहाँ मन आनंदपूर्वक है क्रीड़ा करता ॥२॥
कंबल और कमंडल तन की आवश्यकता के साथी,
हवा समय–समय पर है अपना स्पर्श कराती। ।।३।।
हरि कथा ही भोजन के समान प्रिय और पर्याप्त,
अनेक तरह आनंदपूर्वक कर लेता हूँ उसे प्राप्त। ।।४।।
तुकाराम कहते हैं कि मन का मन से होता है संवाद
मनुष्य स्वयं ही अपना मित्र और स्वयं ही विवाद। ।।५।।

गीत के विविध प्रकारों के विषय में समूह में चर्चा करो और उनके अंतर पहचानो।

- गीतों में चढ़ाव–उतार कैसे होते हैं इस संबंध में विद्यार्थियों में चर्चा करवाएँ।
- प्रथम पृष्ठ को क्यू आर कोड स्कैन करके सुर–ताल में अभ्यास करवा लें।

CG –1/2
C – 1.1/2.2
LO–04AE40
/45

मेरी कृति

१) पाठ में अध्ययन किए गीत प्रकारों के नाम लिखो।

अ. .... ब. .... क. ....

ड. .... इ. .... ई. ....

२) अपनी पसंद का गीत लिखो।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

- विविध प्रकार के गीतों की जानकारी देकर उस विषय पर समूह में चर्चा कराएँ।
- प्रथम पृष्ठ पर दिया क्यू आर कोड स्कैन करके सुर-ताल में अभ्यास करवा लें।

CG -2
C - 2.2
LO-04AE
45

१०. एकल, युगल एवं समूह गीत...

चित्र का गीत प्रकार पहचानो।

जब हम अकेले गाते हैं तो उसे 'एकल गीत' कहते हैं। दो लोग जब गाएँ तो उसे 'युगल गीत' कहते हैं।

आओ, हम ऐसे ही कुछ एकल और युगल गीतों का आनंद लें।

एकल गीत

मारू बेडूकउडी गड्यांनो, घालू या लंगडी
लपाछपी खेळता देऊ या, झाडामागे दडी!
सुट्‌टी लागली सरली शाळा
कोण पहाटे उठतो खुळा !
"अभ्यासाला बसा!" कुणी ना ओरडते घडीघडी ॥१॥

गावाबाहेर वाहे नदी
झाडे बघती पाण्यामधी
सळसळणाऱ्या लाटांमध्ये, घेईल कोणी बुडी? ॥२॥

कुणी पाडतील चिंचा बोरे
एक आकडा मलाही दे रे
झाडाखाली कुणी बापडा, लावील लाडीगोडी ! ॥३॥

गीत – शांता शेळके

भावार्थ–एकल गीत

मारो मेंढक–सी छलांग दोस्तों, चलो लँगड़ी खेलें।
लुका–छिपी खेलते हुए, पेड़ के पीछे हो लें!
छुट्‌टी लग गई, बंद हो गई पाठशाला,
अब कौन पागल सुबह उठेगा !
"पढ़ने बैठो !" बार–बार अब कौन डाँटेगा। ।।१।।

गाँव के बाहर बहती नदी,
पेड़ झाँकते पानी में,
सरसराती लहरों में डुबकी कौन लगाएगा। ।।२।।

कौन तोड़ेगा इमली–बेर,
एक हिस्सा मुझे भी दे दो।
कोई बेचारा पेड़ के नीचे सबको बहुत मनाएगा। ।।३।।

ध्यान रखो :
एक व्यक्ति के गाए गीत को एकल गीत और दो व्यक्तियों के गाए गीत को युगल गीत कहते हैं।

- एकल और युगल गीतों के संदर्भ में विद्‌यार्थियों से चर्चा करो।
- प्रथम पृष्ठ का क्यू आर कोड स्कैन करके सुर–ताल में अभ्यास करवा लें।

CG –2
C – 2.1
LO–04AE43

एकल गीत

चंदाराणी, चंदाराणी,
का गं दिसतेस थकल्यावानी ॥ध्रु॥

शाळा ते घर, घर ते शाळा
आम्हां येतो कंटाळा,
रात्रभर तू चाल चालसी,
दिवसा तरी मग कोठे निजसी ? ॥१॥

वारा वादळ छप्पन वेळा,
थारा नाही आभाळा,
कसा गडे तू तोल राखिसी,
पुढती पुढती पाय टाकिसी, ॥२॥

काठी देखील नसते हाती,
थोडी नाही विश्रांती,
चढती कैसी, कशी उतरसी,
निळ्या डोंगरी अखंड फिरसी ॥३॥

वाडा घरकुल घरटे नाही,
आई नाही अंगाई।
म्हणुनीच का तू अवचित दडसी,
लिंबामागे जाऊन रडसी ॥४॥

कवि – ग. दि. माडगूळकर

भावार्थ–एकल गीत

चंदा रानी, चंदा रानी,
क्यों लगती हो इतनी थकी–सी? ॥ध्रु॥

विद्‌यालय से घर, घर से विद्‌यालय
हम ऊब जाते हैं।
तुम तो सारी रात चलती रहती हो,
फिर दिन में भी कहाँ जाकर सोती हो ? ॥१॥

आँधी–तूफान छप्पन बार आएँ,
आसमान में तुम्हारा कोई ठिकाना
कैसे तुम अपना संतुलन बनाए रखती हो,
और आगे ही आगे कदम बढ़ाती रहती हो। ॥२॥

हाथ में कोई लाठी भी नहीं,
जरा–सा भी विश्राम नहीं,
इतनी ऊँचाई पर कैसे चढ़ती हो, कैसे उतरती हो,
नीले पर्वतों में निरंतर घूमती रहती हो। ॥३॥

न कोई महल, न घर, न घोंसला,
न माँ है जो लोरी सुनाए।
क्या इसी कारण तुम अचानक छिप जाती हो,
नीम के पेड़ के पीछे जाकर रोती हो ? ॥४॥

एकल गीत के उदाहरण –

१) मछली जल की रानी है ।
२) आलू कचालू बेटा
३) तोता हूँ– तोता हूँ
४) चंदा मामा दूर के

- एकल गीत का तालियाँ बजाकर ताल और सुर में अभ्यास करवाएँ।
- पहले पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके ताल और सुर के साथ अभ्यास करवाएँ।

CG –1/2
C – 1.1/2.1
LO–04AE41
/43

युगल गीत – ''आला आला वारा''

आला आला वारा संगे पावसाच्या धारा
पाठवणी करा सया निघाल्या सासुरा ॥धृ॥

नव्या नवतीचं बाई लकाकतं रूप
माखलं ग ऊन जणू हळदीचा लेप
ओठी हसू पापणीत आसवांचा झरा ॥१॥

आजवरी यांना किती जपलं जपलं
काळजाचं पाणी किती शिंपलं शिंपलं
चेतवून प्राण यांना दिला गं उबारा ॥२॥

येगळी माती आता गं येगळी दुनिया
आभाळाची माया बाई, करील किमया
फुलंलं बाई पावसानं मुलख गं सारा ॥३॥

कवि – सुधीर मोघे

भावार्थ – युगल गीत ''आया–आया पवन''

आया आया पवन, संग लाया वर्षा की धारा।
विदा करो सखियाँ, निकलीं ससुराल। ॥ (ध्रु) ॥

नई नवेली दुल्हन का रूप कितना दमक रहा है।
मानो धूप ने हल्दी का लेप लगा दिया हो।
होठों पर मुस्कान है, पलकों में आँसुओं की धारा। ॥१॥

आज तक इन्हें कितने प्यार से सँभाला
अपने हृदय का स्नेह कितना इन पर लुटाया।
अपने प्राणों की ऊष्मा देकर दिया इन्हें सहारा। ॥२॥

अब यह मिट्टी अलग है दुनिया थी अलग
आकाश की ममता थी अपना चमत्कार दिखाएगी
वर्षा से पूरा देश फूला नहीं समा रहा है। ॥३॥

- युगल गीत का अभ्यास कराकर उसका प्रस्तुतीकरण करवाएँ।
- विद्यार्थियों के साथ युगल गीत के बारे में चर्चा करें।
- सबसे पहले प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके ताल और सुर के साथ गीत का अभ्यास करवाएँ।

CG –2
C – 2.1/2.2
LO – 04AE44/45

युगल गीत

नाही खर्चली कवडीदमडी, नाही वेचला दाम
विकत घेतला श्याम, बाई मी विकत घेतला श्याम!
॥ध्रु॥

कुणी म्हणे ही असेल चोरी
कुणा वाटते असे उधारी
जन्मभरीच्या श्वासाइतुके मोजियले हरिनाम!

बाळ गुराखी यमुनेवरचा
गुलाम काळा संताघरचा
हाच तुक्याचा विठ्ठल आणि दासाचा श्रीराम।

जितके मालक तितकी नावे
हृदये तितकी याची गावे
कुणी न ओळखी तरीही याला दीन अनाथ अनाम!

गीत– ग. दि. माडगूळकर

भावार्थ–युगल गीत

नहीं खर्च की एक भी कौड़ी,
नहीं चुकाया कोई दाम।
मैंने खरीद लिया है श्याम,
अरी, मैंने खरीद लिया श्याम! ॥ध्रु॥

कोई कहे है यह चोरी,
कोई समझे यह उधारी।
जन्मभर की साँसों जितना,
मैंने हरि नाम का मूल्य चुकाया।

यमुना तट का बाल ग्वाला,
संतों के घर का साँवला सेवक।
यही तुकाराम का विठ्ठल
और दास का श्रीराम।

जितने मालिक, उतने नाम,
जितने हृदय, उतने इसके धाम।
अपने फिर भी कोई इसे पहचान न पाए
दीन, अनाथ अनाम।

युगल गीत के उदाहरण :

१) अटकन–चटकन
२) हम भारत माँ की संतानें
३) गणपति बाप्पा मोरया
४) सजाओ क्रिसमस ट्री

- युगल गीत का ताल और सुर के साथ अभ्यास कराकर उसका प्रस्तुतीकरण करवाएँ।
- सबसे पहले प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके ताल और सुर के साथ अभ्यास करवाएँ।

CG –1/2
C – 1.1/2.1
LO–04AE40 /44

समूह गीत

हम विद्यालय में प्रतिदिन प्रार्थना सभा के समय प्रार्थना, राष्ट्रगान और राज्यगीत गाते हैं। उस समय हम सभी एक ही सुर और लय में गाते हैं, है न!

तीन या तीन से अधिक व्यक्तियों द्‌वारा मिलकर गाए गए गीत को 'समूह गीत' कहते हैं। समूह गीत से सहयोग की भावना बढ़ती है तथा आत्मविश्वास भी बढ़ता है। तो आइए, हम भी कुछ समूह गीतों का आनंद लें।

शूर आम्ही सरदार...

शूर आम्ही सरदार आम्हांला काय कुणाची भिती?
देव देश अन् धर्मापायीं प्राण घेतलं हाती! ।।ध्रु।।

आईच्या गर्भात उमगली झुंजाराची रित
तलवारीशी लगीन लागलं जडली येडी प्रीत
लाख संकटं झेलून घेईल अशी पहाडी छाती! ॥१॥

जिंकावे वा कटुन मरावं हेंच आम्हांला ठावं
लढून मरावं, मरून जगावं हेंच आम्हाला ठावं
देशापायी सारी विसरू माया ममता नाती! ॥२॥

गीत – शांता शेळके

भावार्थ–शूर हम सरदार...

शूर हम सरदार, हमें किसी का भय नहीं?
देव, देश और धर्म हेतु प्राणों की परवाह नहीं। ॥ध्रु॥

माँ के गर्भ में ही वीरता की रीति जानी,
तलवार से प्रीति हो गई, बन गई वह जीवन संगिनी
लाखों विपदा झेल सके ऐसी छाती पर्वत जैसी है। ॥१॥

हम जीतेंगे या मरेंगे, यह हमें मालूम है।
लड़ते–लड़ते मरें या जीवित रहें,
देश के प्रति प्रेम और अपनापन कभी नहीं भूलेंगे। ॥२॥

या भारतात बंधुभाव...

या भारतात बंधुभाव नित्य वसू दे, दे वरचि असा दे
हे सर्व पंथ संप्रदाय एक दिसू दे, मतभेद नसू दे॥

नांदोत सुखे गरीब–अमीर एक मतांनी
मग हिंदू असो ख्रिश्चन वा हो इस्लामी
स्वातंत्र्य–सुखा या सकलांमाजि वसू दे
दे वरचि असा दे॥

गीत – राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज

भावार्थ–इस भारत में बंधुभाव...

इस भारत में भाईचारा सदा बना रहे, हे प्रभु!
ऐसा वरदान दो।
सभी पंथ और संप्रदाय एक दिखें, आपस में कोई मतभेद न रहे।

गरीब और अमीर सभी एक मत होकर सुखपूर्वक रहें।
चाहे कोई हिंदू हो, ईसाई हो या मुसलमान,
स्वतंत्रता, सुख और समानता का वरदान हम सबको प्राप्त हो।

- समूह गीतों के बारे में विद्यार्थियों से चर्चा करें।
- विभिन्न समूह गीतों का ताल और सुर के साथ अभ्यास कराएँ।
- सबसे पहले प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके ताल और सुर के साथ अभ्यास करवाएँ।

CG –2
C – 2.1
LO–04AE44

मेरी कृति

१) अपनी पसंद के एकल गीतों की सूची बनाओ। उनमें से अपना मनपसंद गीत अभ्यास करके कक्षा में प्रस्तुत करो ।

....

....

....

....

....

....

....

....

२) मनपसंद युगल गीत लिखो। कक्षा के अपने सहपाठियों की सहायता से उस युगल गीत का अभ्यास करो और उसे ताल एवं सुर के साथ प्रस्तुत करो ।

....

....

....

....

....

....

....

....

११. गीत परंपरा के...

लोगों द्‌वारा लोगों के लिए रचा गया संगीत लोक संगीत कहलाता है।

तेरे द्‌वार खड़ा भगवान
भगत भर दे रे झोली

आयो–रे, आयो–रे सावन
आयो–रे

चढ़ गयो पापी बिछुआ कोई
उतारो बिछुआ

डगमग–डगमग डोले नैया
पार करो तो जानूँ खेवैया।

काली कमली वाला मेरा यार
मेरे मन का मोहन है दिलदार

कक्षा में निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करो :

क्या तुमने उपर्युक्त गीत–प्रकार सुने हैं? इन्हें आपने किस अवसर पर सुना है? इन गीतों में कौन–कौन–से वाद्‌य बजाए गए हैं? तुम्हारे गाँव में कौन–कौन– से पर्व–उत्सव मनाए जाते हैं? उन अवसरों पर कौन–कौन–से गीत गाए जाते हैं?

आज हम ऐसे ही कुछ गीतों का परिचय प्राप्त करेंगे। हमारे गाँव में त्योहारों, उत्सवों या आनंद के अवसरों पर जो गीत गाए जाते हैं, उन्हें लोक संगीत कहते हैं। उदाहरण : वासुदेव गीत, गोंधळ, भारूड़, भोंडला के गीत आदि।

- लोक संगीत के बारे में विस्तार से जानकारी दें तथा उसपर चर्चा करें।
- लोक गीतों में लोकजीवन और संस्कृति पर चर्चा करें।
- सबसे पहले प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके ताल और सुर के साथ अभ्यास करवाएँ।

CG –4
C – 4.1/4.2
LO–04AE51/53

कोंकण के विभिन्न उत्सवों के अवसर पर प्रारंभ में गाया जाने वाला नमन गीत

गणा धाव रे मला पाव रे॥ध्रु॥	गणपति दौड़कर आओ मुझे मिल जाओ । ॥ध्रु॥
तुझ्या प्रेमाचे किती गुण गाऊ रे	तुम्हारे प्रेम के कितने गुण गाऊँ ?
तू दर्शन आम्हाला दाव रे ॥१॥	हमें अपना दर्शन कराओ। ॥१॥
तुझ्या कृपेची छाया असू दे	तुम्हारी कृपा की छाया बनी रहे।
ध्यानी-मनी नाम तुझे ठसू दे ॥२॥	मन और ध्यान में तुम्हारा नाम बसा रहे। ॥२॥
माझी वादलात सापडली नाव रे	मेरी नाव तूफान में फँस गई है।
दूर किनारी हाय माझा गाव रे ॥३॥	दूर किनारे पर मेरा गाँव है। ॥३॥

क्या तुम जानते हो ?

यह गीत मुख्य रूप से कोकण में विभिन्न उत्सवों की शुरुआत में नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इस नृत्य को जाखड़ी नृत्य कहा जाता है। नर्तकों के समूह के बीच में ढोलकी, मृदंग और झांझ बजाने वाले तथा गायक बैठते हैं।

नर्तक (बाल्या) : उनके चारों ओर नर्तक (बाल्या) पैरों में घुंघरू बाँधकर गोल घेरा बनाकर नृत्य करते हैं।

- गीत का अभ्यास करवाएँ तथा गीत के लिए आवश्यक वाद्यों और गीत की जानकारी दें।
- कोंकण के विभिन्न उत्सवों पर चर्चा करें तथा उन उत्सवों में जाखड़ी नृत्य और गायन में बजाए जाने वाले वाद्यों के बारे में चर्चा करें।
- पहले पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके ताल और सुर के साथ अभ्यास करवाएँ।

CG -4
C - 4.1/4.2
LO-04AE51
/52/53

गोंधळ गीत महाराष्ट्र की एक प्राचीन और लोकप्रिय लोक कला है। यह गीत प्रकार आदिशक्ति देवी की उपासना के लिए गाया जाता है।

गोंधळ

होऊ दे सर्वदिशी मंगळ
झडवितो रात्रंदिन संबळ
खुलवितो दिवटी दीप कळी,
आम्ही अंबेचे गोंधळी
(उधे गं अंबे उधे)
घरोघरी हिंडतो न् गोंधळ आईचा मांडतो
आईचा मांडतो न् गोंधळ देवीचा मांडतो
भवानी बसली ओठीगळी
आम्ही अंबेचे गोंधळी॥

कवि – शाहीर साबळे

भावार्थ–गोंधळ

होने दो सब दिशाओं में मंगल,
रात–दिन हम बजाते हैं संबल।
दीपक की लौ प्रज्ज्वलित करते,
हम अंबा माँ के गोंधळी हैं।
(जय हो अंबे माँ जय हो)
घर–घर घूमते हैं और माँ का गोंधळ सजाते हैं।
माँ का गोंधळ सजाते हैं और देवी का गोंधळ सजाते हैं।
भवानी होंठों पर विराजे
हम अंबा माँ के गोंधळी हैं।

गोंधळ गीत में मुख्य रूप से हार्मोनियम, तुनतुना, संबल, मंजीरा, झांझ और डिमडी जैसे वाद्यों का उपयोग किया जाता है।

कोळीगीत

चांदवा आला नभांगणी .. दर्या उसळला।
धुंद पिठोरी पुनव हासली .. आनंद गो झाला
चंदेरी दुनिया चमकती.. दर्याला भाषा उमगती ।
वल्हव सारंगा.. नाव दे लोटून, सोडून जाऊ बंदराला
मनात लाटा फेसाळती तुषार सुखात भिजवती।
गार गार वारा.. जीव बावरां.. आलीया भरती किनाऱ्याला।
माखून घेऊ चांदण्याला.. पिठोरी एकांत संगतीला
खर्जात लाटा– जुळलंय गाणं.. लागंल मासळी जाल्याला

कवि – राजेंद्र अत्रे

भावार्थ–कोळी गीत

चाँद आ गया आकाश में, समुद्र उमड़ पड़ा।
मदमाती पूनम मुस्कराई, आनंद उमड़ आया।

चाँदी–सी दुनिया चमके है, समुद्र की भाषा समझे है।
अरे सारंगा, नाव खेओ, नाव को धक्का देकर बंदरगाह छोड़ चलें।

मन में लहरें झाग बन रही हैं, जल की फुहारें सुख में भीगतीं।
ठंडी–ठंडी हवा चल रही है, मन बावरा हो गया।
किनारे पर ज्वार आ गया।

आओ चाँदनी में नहा लें, पूनम के एकांत का साथ पाएँ।
गहरी लहरों में गीत जुड़ गया है, मछली जाल में फँस गई है।

कोळी गीत के लिए ढोलकी, घुँघरू, हार्मोनियम और झाँझ जैसे वाद्यों का उपयोग किया जाता है।

क्या तुम जानते हो ?
कोकण के कोळी (मछुआरा) समुदाय के लोग अपनी बोलीभाषा में त्योहारों तथा आनंद के अवसरों पर ये गीत गाते हैं।

- ऊपर दिए गए गीतों का अभ्यास कराएँ।
- विभिन्न लोक गीतों के प्रकारों पर चर्चा करें।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके ताल और सुर के साथ अभ्यास कराएँ।

CG –4
C – 4.1/4.2
LO–04AE51/52/53

वासुदेव महाराष्ट्र की एक अत्यंत प्राचीन और विशिष्ट लोकपरंपरा है। यह परंपरा मुख्य रूप से समाज प्रबोधन तथा भक्ति का प्रसार करने के लिए जानी जाती है।

वासुदेव गीत

वासुदेव आला
वासुदेव आला...

पहाट झाली स्वारी आली
अहो सूर्य देव हा जागा झाला....
वासुदेव आला वासुदेव आला.....

गळा घालून तुळशीची माळ,
हाती घेऊन चिपळ्या टाळ
म्हणे मुखाने हरिनाम बोला....
वासुदेव आला वासुदेव आला....

जगण्याचं देई भान
मागतो पसाभर दान
चला देऊ या दूधभात काला
वासुदेव आला वासुदेव आला...

गीत– राजेंद्र सोमवंशी

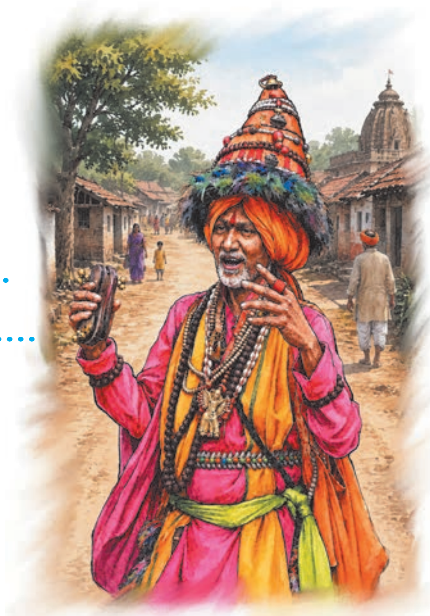

भावार्थ–वासुदेव गीत

वासुदेव आया
वासुदेव आया...

भोर हुई, सवारी आई,
अरे! सूर्यदेव भी जाग गए...
वासुदेव आया वासुदेव आया...

गले में तुलसी की माला पहनकर,
हाथ में करताल और मंजीरा लेकर,
कहता है – मुख से हरि–नाम बोलो...
वासुदेव आया, वासुदेव आया...

जीवन का सच्चा बोध कराता है,
मुट्ठीभर दान माँगता है।
आओ, उसे दूध–भात का काला दें...
वासुदेव आया, वासुदेव आया...

वासुदेव गीत के लिए करताल, मंजीरा, बाँसुरी, पैरों के घुंघरू आदि वाद्‌यों का उपयोग किया जाता है।

- **उपलब्ध सामग्री का उपयोग करके वासुदेव गीत गाएँ।**

- वासुदेव गीत के बारे में जानकारी बता दें ।
- लोक गीतों के विभिन्न प्रकारों पर चर्चा करें।
- सबसे पहले पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके ताल और सुर में गीत का अभ्यास कराएँ।

CG –3/4
C – 3.1/4.2
LO–04AE48 / 52/53

लोक गीत का एक और लोकप्रिय प्रकार अर्थात भारूड़। समाज में गीतों के माध्यम से साक्षात्कार, अंधश्रद्धा आदि विषयों का प्रबोधन करने हेतु यह भारूड़ प्रस्तुत करते हैं।

भारूड

(चाल– या शेजारणीनं बरं नाही केलं गं बया..)
ह्या शाळेमंदी शिकलो आम्ही बया।
या शाळेनं मला मोठं केलं बया॥
शिकू या सारे शिकू या
लिहा वाचाया! शिकू या!
ज्ञानाच्या वाटेवर आपण सारे चालू या ॥१॥
शाळेत खेळू, शिकू, अन् बागडू या
वाचन, लेखन सारं हास–हासत शिकू या ॥२॥
ज्ञान हेच खरे धन आहे
हे साऱ्यांना समजून सांगू या।
सुंदर आपुला देश घडवू
पुढे पुढे जाऊ या, हुशार होऊ या,
मोठे मोठे होऊ या .... ॥३॥

भावार्थ–भारूड़

(धुन – "इस पड़ोसन ने अच्छा नहीं किया रे बहना...")
इस स्कूल में हमने पढ़ना सीखा, बहना।
इस स्कूल ने हमको बड़ा किया, बहना ॥
आओ मिलकर पढ़ें सभी,
लिखना पढ़ना सीखें सभी।
ज्ञान की राह पर हम सब मिलकर आगे बढ़ें।।१।।
स्कूल में खेलें, पढ़ें और खुशियाँ मनाएँ,
हँसते–हँसते पढ़ना–लिखना सब सीख जाएँ ।।२।।
ज्ञान ही सबसे बड़ा धन है,
यह बात सबको समझाएँ ।
अपने प्यारे देश को सुंदर बनाएँ,
आगे बढ़ते जाएँ, होशियार बन जाएँ,
बड़े–बड़े काम करें और नाम कमाएँ।।३।।

भारूड़ के लिए हार्मोनियम, मृदंग, मँजीरा, ढोलक आदि वाद्य उपयोग में लाए जाते हैं ।

क्या तुम जानते हो ?

संत एकनाथ महाराज ने सोलहवीं शताब्दी में भारूड़ काव्य प्रकार को सही अर्थों में लोकप्रियता प्राप्त करवा दी तथा इस माध्यम से समाज प्रबोधन का कार्य किया।

- विद्‌यार्थियों के साथ भारूड़ गीत प्रकार के संबंध में चर्चा करें।
- प्रथम पृष्ठ का क्यू आर कोड स्कैन करके सुर–ताल में अभ्यास करवा लें।

CG –4
C – 4.2
LO–04AE52

लोकवाद्‌यों का परिचय

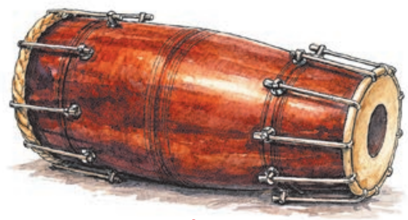

ढोल ढोलक मंजीरा

तारपा डफली लेजीम संबल

तुनतुना/ एक तारा करताल खंजरी

चित्र में दिखाए गए वाद्‌य तुमने कौन-कौन-से लोक गीतों में देखें हैं ? उनमें से कौन-कौन-से वाद्‌यों की ध्वनियाँ तुमने सुनी हैं, चर्चा करो।

नीचे दर्शाए संगीत वाद्‌यों का निरीक्षण करो और उनके नाम लिखो ।

....

....

....

....

....

- चित्रों में दर्शाए वाद्‌यों की जानकारी देकर उनकी ध्वनियाँ सुनवाएँ ।
- उपर्युक्त वाद्‌य कौन-कौन-से गीत प्रकारों में बजाए जाते हैं, इसपर चर्चा करें।

CG - 3
C - 3.2
LO-04AE 49

मेरी कृति

१) लोक संगीत में उपयोग किए जाने वाले वाद्यों के नाम लिखो।

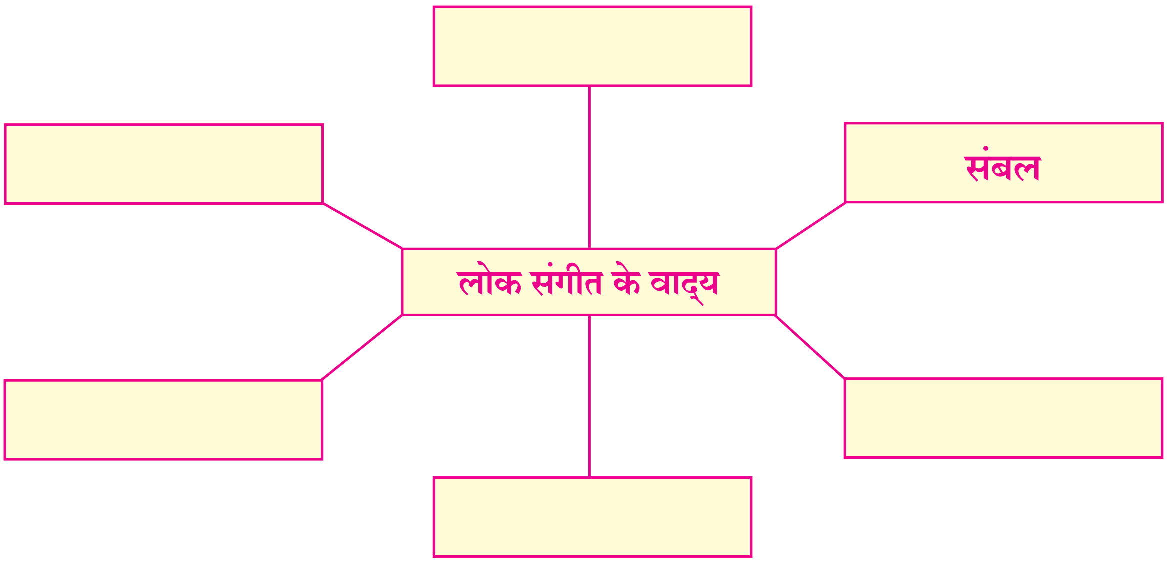

२) परिसर में गाया जाने वाला पसंद का लोक गीत लिखो ।

....

....

....

....

....

३) नीचे दिए गए लोक संगीत में कौन-कौन-से वाद्यों का प्रयोग किया जाता है, लिखो ।

अ. अभंग-भजन ....

ब. पोवाड़ा ....

क. भारूड़ ....

ड. वासुदेव गीत ....

- लोक संगीत वाद्यों की चर्चा करते हुए उनके नाम बताएँ।
- अपनी पसंद का लोकगीत लिखने के लिए कहें ।

CG -3
C - 3.2
LO- 04AE49

१२. स्वरों की लता...

प्रकृति की ध्वनियाँ विभिन्न स्वरों और तालों से भरे एक विशाल वाद्‌यवृंद के समान हैं। हम अपने परिसर में अनेक प्रकार की आवाजें सुनते हैं, जैसे – पक्षियों की चहचहाहट, पशुओं की आवाजें, वर्षा की ध्वनि, बहते पानी की आवाज, पत्तों की सरसराहट आदि।

नीचे दिए गए चित्रों में प्राकृतिक तथा मानव निर्मित ध्वनियाँ कौन–सी हैं, बताओ एवं लिखो।

....

इसके अतिरिक्त तुमने अपने परिसर में जो आवाजें सुनी हैं, उनमें से कौन–सी आवाजें मधुर लगीं और कौन–सी कर्कश लगीं ? उन्हें नीचे दी गई सारिणी में लिखो।

मधुर आवाजें	कर्कश आवाजें

उपरोक्त में से तुम्हें जो आवाज सबसे अधिक पसंद आई हो, उसकी नकल करो।

ध्यान रखो :

हम अपने परिसर में जो अनेक प्रकार की आवाजें सुनते हैं, उनमें से कई आवाजें संगीत के स्वरों से मेल खाती हैं। जो ध्वनि कानों को मधुर लगे और जिसका नाद कुछ समय तक निरंतर बना रहे, उसे **संगीतोपयोगी ध्वनि** कहा जाता है।

संगीतोपयोगी ध्वनियाँ

शंखध्वनि, घंटानाद, बाँसुरी का वादन तथा ढोल–ताशे की ध्वनि संगीतोपयोगी ध्वनियों के उदाहरण हैं। इनके अतिरिक्त और कौन–कौन–सी ध्वनियाँ संगीत में उपयोग की जाती हैं या की जा सकती हैं, उनकी सूची बनाकर उसपर चर्चा करो।

- मधुर एवं कर्कश ध्वनियों के बारे में चर्चा कराएँ।
- विद्‌यार्थियों से विभिन्न प्रकार की ध्वनियों के बारे में चर्चा करने के लिए कहें।
- संगीतोपयोगी ध्वनियों के उदाहरण देकर उनपर चर्चा कराएँ।

CG –3/4
C – 3.1/4.1
LO–04AE47/50

स्वर और स्वरों के प्रकार

ध्यान रखो :
जो ध्वनि कानों को मधुर लगे और जिसकी कंपन संख्या निश्चित हो उस नाद को 'स्वर' कहते हैं।

तुम अ, आ, इ, ई आदि अक्षरों से परिचित हो।

जैसे हिंदी भाषा को पढ़ने और लिखने के लिए चौदहखड़ी की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार संगीत में सात स्वर होते हैं। इन सात स्वरों के समूह को 'सप्तक' कहते हैं।

सा रे ग म प ध नि

संगीत में इन सात स्वरों के अतिरिक्त पाँच और स्वर भी होते हैं।

स्वरों के प्रकार – स्वरों के तीन प्रकार होते हैं–

१) शुद्ध स्वर : मूल सात स्वरों को 'शुद्ध स्वर' कहते हैं। **सा रे ग म प ध नि**

२) कोमल स्वर : जो स्वर अपनी मूल स्थिति से आधा स्वर नीचे गाए जाते हैं उन्हें 'कोमल स्वर' कहते हैं। कोमल स्वर लिखते समय स्वर के नीचे एक आड़ी रेखा '_' का चिह्न लगाया जाता है। **रे ग ध नि**

३) तीव्र स्वर : जो स्वर अपनी मूल स्थिति से आधा स्वर ऊपर गाया जाता है उसे 'तीव्र स्वर' कहते हैं। तीव्र स्वर की पहचान के लिए स्वर के ऊपर एक खड़ी रेखा (|) का चिह्न लगाया जाता है। **'म**

सात शुद्ध + चार कोमल + एक तीव्र = कुल बारह स्वर होते हैं।

शुद्ध, कोमल, एवं तीव्र ऐसे बारह स्वरों का क्रम निम्नानुसार –

सा	रे	रे	ग	ग	म	'म	प	ध	ध	नि	नि
शुद्ध	कोमल	शुद्ध	कोमल	शुद्ध	शुद्ध	तीव्र	शुद्ध	कोमल	शुद्ध	कोमल	शुद्ध

स्वर अलंकार

स्वरों की नियमित क्रमबद्ध रचना को स्वर अलंकार कहते हैं।
नीचे दिए गए शुद्ध स्वर अलंकारों का अभ्यास करो।

१) स्वरों का चढ़ता क्रम (आरोह) – सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां
स्वरों का उतरता क्रम (अवरोह) – सांनिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा

२) आरोह – सारेगम रेगमप गमपध मपधनि पधनिसां
अवरोह – सांनिधप निधपम धपमग पमगरे मगरेसा

इसी प्रकार स्वरों के विभिन्न क्रम बनाकर अन्य अलंकार तैयार करो ।

- स्वरों के चढ़ते क्रम (आरोह) और उतरते क्रम (अवरोह) पर चर्चा करें ।
- स्वर तथा स्वरों के प्रकारों के बीच का अंतर समझाएँ।
- पहले पृष्ठ पर दिए गए क्यु आर कोड को स्कैन करके ताल और सुर के साथ अभ्यास कराएँ।

CG –2
C – 2.2
LO–
04AE46

ध्यान रखो :

संगीत में सप्तक को पूर्ण करने के लिए तार सप्तक का 'सां' प्रयोग किया जाता है।

सा और **प** – अचल स्वर हैं। (इनपर कोई चिह्न नहीं लगाया जाता।)

रे ग ध नि – स्वरों के नीचे रेखा लगाने पर वे कोमल स्वर कहलाते हैं।

ˈम – स्वर के ऊपर खड़ी रेखा लगाने पर वह तीव्र स्वर कहलाता है।

मेरी कृति

अ] रिक्त स्थान पूर्ति करो ।

१. ----------- कोमल स्वर हैं ।

२. ----------- तीव्र स्वर है।

३. संगीत में ----------- शुद्ध स्वर होते हैं।

ब] अलंकार पूरा लिखो एवं सुर में गाने का अभ्यास करो।

१. आरोह – सारेग रेगम...

अवरोह – सांनिध निधप ....

२. आरोह – सारेगम रेगमप ....

अवरोह – सांनिधप निधपम ....

क] स्वरों के प्रकार लिखो।

१. .... २. .... ३. ....

ड] नीचे दिए चौखट में बारह स्वर पूरे करो।

सा		रे		ग	म		प	ध			नि

- विद्यार्थियों से अलंकारों का नियमित अभ्यास कराएँ।
- उपलब्ध वाद्य या हारमोनियम ऐप की सहायता से अलंकारों का अभ्यास कराएँ।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके ताल और सुर के साथ अभ्यास कराएँ।

CG –2
C – 2.2
LO–04AE46

१३. आओ, ताल मिलाएँ...

जब हम अपनी पसंद का गीत सुनते हैं तो अनजाने में हमारे पैर ताल पकड़ने लगते हैं। कभी हम बेंच पर हाथ से ताल देते हैं तो कभी ताली बजाकर ताल पकड़ते हैं।

अब हम एक खेल खेलेंगे ।

थाली–चम्मच या कटोरी–चम्मच लेकर एक, दो, तीन, चार... एक, दो, तीन, चार... इस प्रकार ताल पकड़ते हैं । या फिर प्लास्टिक की खाली बोतल में रेत या दाल भरकर एक, दो, तीन, चार... एक, दो, तीन, चार... इस प्रकार ताल का अभ्यास करेंगे ।

ध्यान रखो :
गायन, वादन और नृत्य में समय की गणना करने की व्यवस्थित पद्‌धति को **'ताल'** कहते हैं।

संगीत में अनेक प्रकार के ताल होते हैं। प्रत्येक ताल में मात्रा, विभाग, सम और काल (खाली) ऐसे प्रकार होते हैं। इनके बारे में संक्षेप में जानकारी प्राप्त करेंगे।

१) **मात्रा –** ताल गिनने के लिए प्रयुक्त प्रत्येक एक ठेका (बीट) **'मात्रा'** कहलाता है।

२) **विभाग –** ताल की मात्राओं के छोटे–छोटे समूह को **'विभाग'** कहते हैं।

३) **सम –** ताल की पहली मात्रा को 'सम' कहते हैं। पहली मात्रा पर जोर से ताली बजाकर सम दिखाया जाता है। सम को 'X' चिह्न से दर्शाया जाता है।

४) **काल (खाली) –** ताल की जिस मात्रा पर ताली नहीं बजाई जाती, बल्कि हाथ को हवा में बगल की ओर घुमाकर दिखाया जाता है, उसे **'काल (खाली)'** कहते हैं। काल को '०' चिह्न से दर्शाया जाता है।

आज हम संगीत के दो तालों की जानकारी लेकर ताली बजाकर अभ्यास करेंगे।

कहरवा ताल

मात्राएँ : ८ विभाग : २ (४ – ४ मात्राओं के)

सम : पहली मात्रा पर काल (खाली) : पाँचवीं मात्रा पर

मात्राएँ	१	२	३	४	५	६	७	८
ठेका	धा	गे	न	ती	न	क	धी	न
चिह्न	X				O			

पाठ्यपुस्तक का 'चंदाराणी, चंदाराणी...' मराठी गीत कहरवा ताल में है। ताल के साथ ताली बजाकर इस गीत का अभ्यास करो।

- गिनती बोलते हुए ताली बजाकर ताल का अभ्यास करवाएँ।
- ताल में स्वर–अलंकारों का अभ्यास करवाएँ।
- कहरवा ताल में ताली देकर गीतों का अभ्यास करवाएँ।
- विद्‌यार्थियों को खेल कैसे खेलना है, यह अच्छी तरह समझाएँ।

CG –1/3
C – 1.1/3.2
LO–04AE41
/43

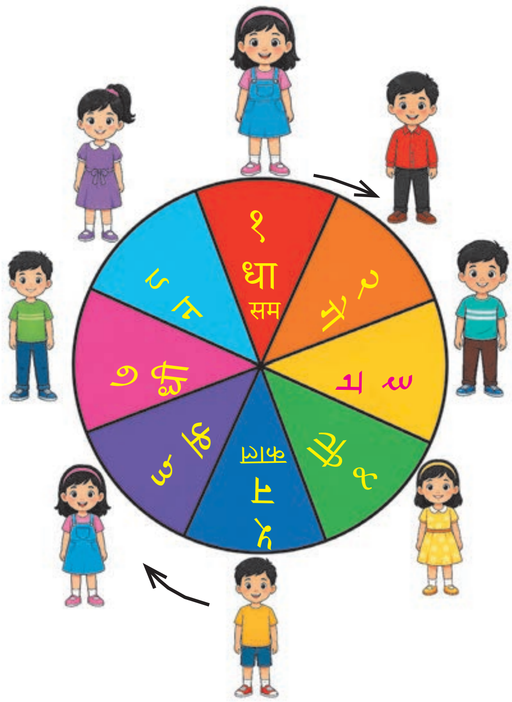

कहरवा ताल का वृत्त

- मैदान या कक्षा में चॉक से एक बड़ा वृत्त बनाओ।
- चित्र में दिखाए अनुसार उस वृत्त को ८ समान भागों में बाँटो और उन्हें क्रमशः १ से ८ तक क्रमांक दो।
- १ क्रमांक वाले भाग पर बड़े अक्षरों में 'धा' (सम – X) लिखो।
- ५ क्रमांक वाले भाग पर बड़े अक्षरों में 'न' (काल/खाली – O) लिखो।

- समूह बनाओ : इसके लिए कक्षा के ८ विद्यार्थियों को वृत्त के ८ भागों में खड़ा करें (जैसा चित्र में दिखाया गया है)। शेष विद्यार्थी वृत्त के बाहर खड़े होकर गतिविधि का निरीक्षण करो।
- क्रिया और गतिविधि : प्रत्येक अंक (मात्रा) को वृत्त में खड़े प्रत्येक विद्यार्थी अपनी-अपनी मात्रा (बीट) के अनुसार निम्नलिखित क्रिया करेगा–
- १ मात्रा (सम – धा): १ क्रमांक पर खड़ा विद्यार्थी दोनों हाथ ऊपर उठाकर जोर से "धा" बोलते हुए उछले। (बाकी सभी विद्यार्थी भी जोर से ताली बजाएँगे।)
- २, ३, ४ मात्रा (गे, ना, ती): क्रमशः २, ३ और ४ क्रमांक पर खड़े विद्यार्थी अपनी-अपनी जगह पर एक हल्की ताली बजाकर अपना-अपना बोल बोले।
- ५ मात्रा (काल/खाली – न): ५ क्रमांक पर खड़ा विद्यार्थी "न" बोलते समय ताली न बजाए बल्कि दोनों हाथ बगल में फैलाकर काल (खाली) का संकेत दें।
- ६, ७, ८ मात्रा (क, धि, न): क्रमशः ६, ७ और ८ क्रमांक पर खड़े विद्यार्थी अपनी-अपनी जगह पर हल्की ताली बजाकर अपने बोल पूरे करे।

खेल का दूसरा चरण (घूमता हुआ वृत्त)

जब सभी विद्यार्थियों को अपनी-अपनी जगह के बोल अच्छी तरह याद हो जाएँ तब संगीत या तालियों की ताल पर घड़ी की सुई की दिशा (Clockwise) में वृत्त के चारों ओर घूमते हुए गतिविधि करें।

- शिक्षक द्वारा '१' या 'धा' कहे तब जो विद्यार्थी १ क्रमांक वाले स्थान (सम) पर हो वह तुरंत उछलकर जोर से ताली बजाए।
- जब शिक्षक '५' या 'काल' (खाली) कहने पर जो विद्यार्थी ५ क्रमांक वाले स्थान पर हो वह ताली न बजाकर दोनों हाथ फैलाकर काल (खाली) का संकेत दे। इसी प्रकार इस खेल का अभ्यास करो।
- कक्षा के सभी विद्यार्थी समूह बनाकर बारी-बारी से इस ताल के खेल को खेलें।

ताल दादरा

मात्राएँ : ६ विभाग : २ (३-३ मात्राओं के)

सम : पहली मात्रा पर काल (खाली) : चौथी मात्रा पर

मात्र	१	२	३	४	५	६
ठेका	धा	धी	ना	धा	ती	ना
चिह्न	X			O		
	सम			काल/खाली		

१	२	३	४	५	६
धा	धी	ना	धा	ती	ना
x			o		
सम			काल		

पाठ्यपुस्तक का 'या भारतात बंधुभाव नित्य वसू दे...' गीत दादरा ताल में है। ताल के साथ ताली बजाकर इस गीत का अभ्यास करो।

दादरा ताल की रेलगाड़ी

दादरा ताल में ६ मात्राएँ होती हैं तथा ३ – ३ मात्राओं के २ विभाग होते हैं। पहली मात्रा पर 'सम' (ताली) तथा चौथी मात्रा पर 'काल' (खाली) होता है।

- कक्षा के ६ विद्यार्थियों को चित्र में दिखाए अनुसार एक सीधी पंक्ति में एक-दूसरे के पास खड़ा करो।
- उन्हें क्रमशः १ से ६ तक क्रमांक दो।
- प्रत्येक विद्यार्थी को उसका एक निश्चित 'बोल' (ठेका) दो –

- १ क्रमांक = धा (सम)
- २ क्रमांक = धी
- ३ क्रमांक = ना
- ४ क्रमांक = धा (काल/खाली)
- ५ क्रमांक = ती
- ६ क्रमांक = ना
- चरण १ : धीमी गति से अभ्यास : शिक्षक या कक्षा के अन्य विद्यार्थी धीमी गति में १ से ६ तक गिनो। जिस विद्यार्थी का जो क्रमांक आए वह अपना बोल बोलते हुए निम्नलिखित क्रिया करो।
- १ क्रमांक (धा – सम): यह विद्यार्थी जोर से "धा!" बोलते हुए दोनों हाथों से जोरसे ताली बजाए और अपनी जगह पर हल्की-सी कूद लगाए।
- २ और ३ क्रमांक (धी, ना): ये विद्यार्थी अपना-अपना बोल बोलते हुए हल्की चुटकी बजाएँ या पैर से जमीन पर हल्की थाप दें।
- ४ क्रमांक (धा – काल/खाली) : यह ताल का काल (खाली) है इसलिए ४ क्रमांक वाला विद्यार्थी "धा!" बोलते समय ताली नहीं बजाएगा, बल्कि दोनों हाथ को हवा में बगल की ओर फैलाकर सिर हिलाएगा (ताकि खाली का संकेत मिले।)
- ५ और ६ क्रमांक (ती, ना): ये विद्यार्थी भी २ और ३ क्रमांक की तरह हल्की चुटकी बजाते हुए अपना बोल पूरा करें।
- चरण २ : गति बढ़ाना : जब विद्यार्थियों को क्रम अच्छी तरह याद हो जाए तब शिक्षक ताल की गति धीरे-धीरे बढ़ाएँ। १ से ६ तक के आवर्तन लगातार चलाते रहें। इससे बच्चों के बीच एक सुंदर लय तैयार होगी– "धा (ताली) – धी – ना | धा (हाथ फैलाना/खाली) – ती – ना"।

नि:शुल्क वितरण के लिए

मेरी कृति

१) रिक्त स्थानों में उचित चिह्न लिखो।

अ] सम को .... चिह्न से दर्शाया जाता है।

ब] काल (खाली) को .... चिह्न से दर्शाया जाता है।

२) नीचे दिए गए आकृतिबंध पूर्ण करो।

अ]

धा	गे			|	न	क		

ब]

धा	धी	ना	|			

३) नीचे दिए गए तालों के जानकारी की सारिणी पूर्ण करो।

ताल	मात्राएँ	विभाग/खंड	सम	काल
कहरवा				
दादरा				

- विद्यार्थियों को खेल कैसे खेलना है, यह अच्छी तरह समझाएँ।
- ताल के साथ ताली बजाकर गीतों का अभ्यास कराएँ।
- प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड को स्कैन करके ताल और सुर के साथ अभ्यास कराएँ।

CG –1/2
C – 1.1/2.1
LO–04AE41 / 43

नृत्य

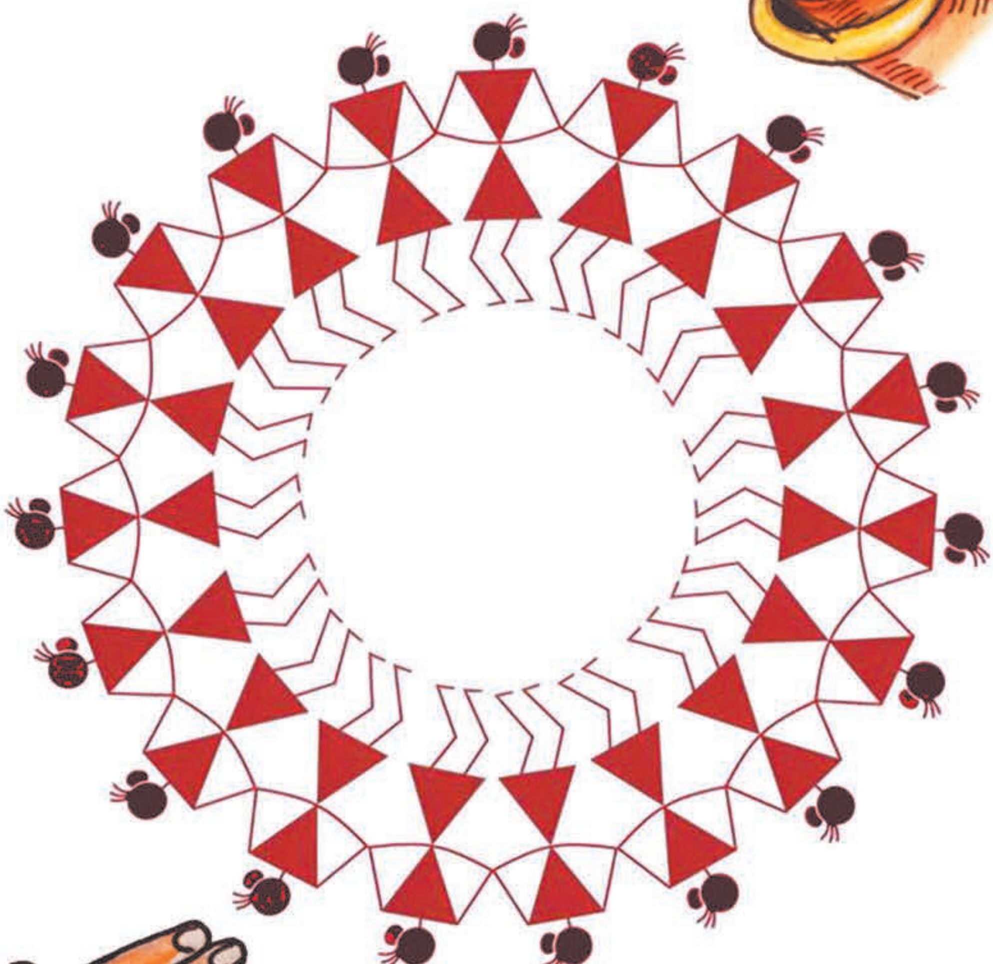

१४. नृत्य करो आनंद से...

बच्चो, हमारा शरीर लचीला है ही, लेकिन शरीर में अलग-अलग खेलों और नृत्य की गतिविधियाँ करने की क्षमता होती है। उदाहरण के लिए उछलना, कूदना, झुकना, मुड़ना आदि। इन्हीं गतिविधियों में जब हम लय और ताल को जोड़ते हैं तब उनका नृत्य में रूपांतरण होता है।

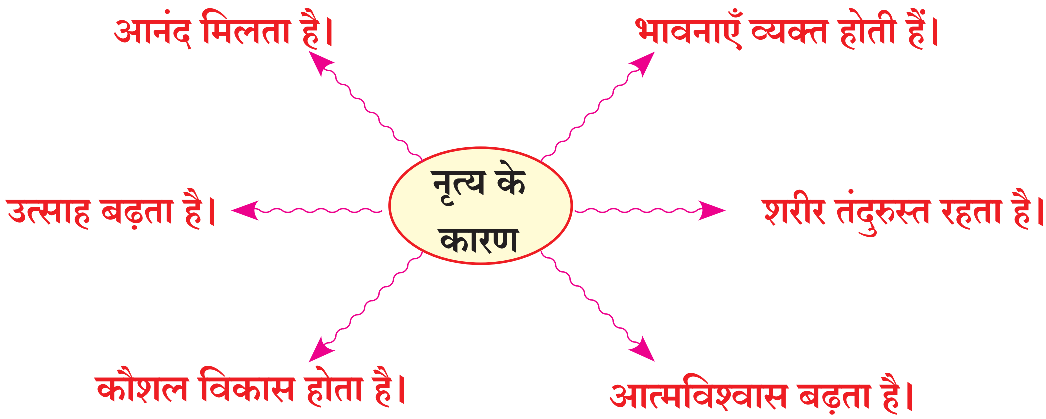

नृत्य

संपूर्ण शरीर का उपयोग करके संगीत और ताल के आधार पर की जाने वाली भावनाओं की अभिव्यक्ति को नृत्य कहते हैं।

बच्चो, आनंद व्यक्त करने के लिए नृत्य किया जाता है।

नृत्य के अनेक फायदे हैं।

तुम्हे नृत्य करना क्यों पसंद है, लिखो।

- नृत्य की परिभाषा और उसके फायदे कक्षा में समझाकर बताएँ।
- मानव जीवन में नृत्य के महत्व पर कक्षा में चर्चा करें और १-२ वाक्य लिखने के लिए प्रेरित करें।

CG - 1
C - 1.1
LO - 04AE54

एकल नृत्य करके देखो

तुम सभी को खेल खेलना पसंद है ना ? इन खेलों में नृत्य की गतिविधियाँ कैसे छिपी हुई हैं, यह देखते हैं!

नीचे दी गई गतिविधियों का निरीक्षण करो और उन्हें करके देखो !

(लंगड़ी खेल से तैयार हुई नृत्य की गतिविधि को बायी और दायी ओर उछलकर देखो।)

(तैरने की क्रिया से तैयार हुई नृत्य की गतिविधि को बायीं और दायीं ओर करके देखो।)

बच्चो, मजा आया ना ? तो चलो, अब इसी तरह कुछ खेल खोजते हैं और उन्हें नृत्य की गतिविधियों में कैसे बदला जा सकता है, इसकी कल्पना करते हैं और उसकी क्रिया देखते हैं।

- गतिविधि में दिए गए चित्रों का निरीक्षण करने के लिए कहें और उन्हें प्रत्यक्ष रूप से करने के लिए प्रेरित करें।
- कक्षा में विभिन्न गतिविधियों के बारे में चर्चा करने तथा उन्हें प्रत्यक्ष करके देखने के लिए प्रोत्साहित करें।

CG – 1
C – 1.1
LO – 04AE54

आओ, देखें–सीखें–नाचें

अब तक हमने नृत्य की कुछ गतिविधियाँ अकेले करना सीखी हैं, लेकिन यदि हम सभी मित्र–सहेलियाँ मिलकर नाचें तो और भी ज्यादा मजा आएगा, है ना ?

समूह में नाचते समय हम एक–दूसरे के साथ ताल मिलाते हैं, एक जैसी गतिविधियाँ करते हैं और आनंद से नृत्य प्रस्तुत करते हैं तब उससे एक अलग ही ऊर्जा मिलती है। अब हम इसी विषय के बारे में अधिक जानने वाले हैं।

जब दो या दो से अधिक व्यक्ति एक साथ मिलकर एक ही ताल और लय में नृत्य प्रस्तुत करते हैं, तो उसे 'समूह नृत्य' (Group Dance) कहते हैं।

समूह नृत्य के क्या–क्या फायदे हैं, देखते हैं।

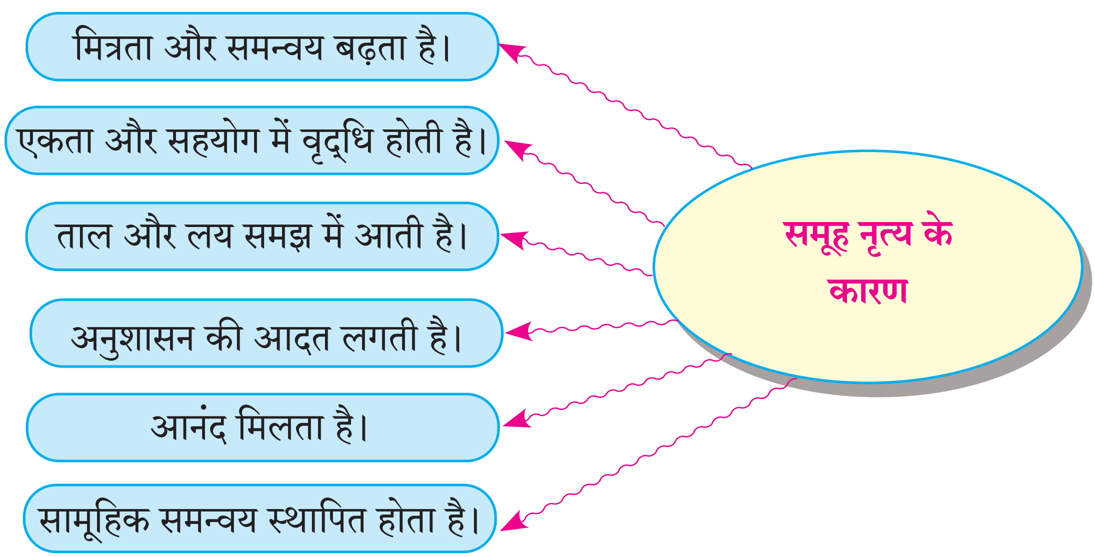

समूह नृत्य में लोकनृत्यों का समावेश होता है। त्योहार और उत्सवों का आनंद मनाने के लिए सभी लोग एक साथ आकर नृत्य करते हैं। इसी से लोकनृत्य का निर्माण होता है।

परिचित नृत्य का प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू.आर. कोड में वीडियो देखो। वीडियो में दिए गए नृत्य का निरीक्षण करो, उसमें दी गई गतिविधियों का अनुकरण, अभ्यास और प्रस्तुति करो।

- परिचित नृत्य का वीडियो दिखाएँ और उसका अनुकरण, अभ्यास तथा प्रस्तुति करने के लिए प्रोत्साहित करें।

CG – 1
C – 1.1, 1.2
LO–04AE54/55

सब मिलकर नाचेंगे !

दिए गए समूह नृत्य के चित्रों का निरीक्षण करके उस नृत्य को प्रत्यक्ष रूप से करके देखो।

१. धनगर नृत्य

धनगर / गड़रिया नृत्य महाराष्ट्र के धनगर समाज का पारंपरिक लोकनृत्य है। यह नृत्य मुख्य रूप से त्योहार, यात्रा और उत्सव के अवसरों पर प्रस्तुत किया जाता है। ढोल, डफ और तुरही की ताल पर उत्साह के साथ यह नृत्य किया जाता है।

धनगर (गड़रिया) नृत्य गतिविधि १

धनगर (गड़रिया) नृत्य गतिविधि २

२. लेजीम

लेजीम महाराष्ट्र का पारंपरिक लोकनृत्य है। हाथ में लेजीम लेकर तालबद्ध गतिविधियाँ, कूदना और संगीत की ताल पर यह नृत्य किया जाता है।

लेजीम गतिविधि १

लेजीम गतिविधि २

- लेजीम और गड़रिया नृत्य का प्रदर्शन विद्यार्थियों से करवाएँ।

CG – 1
C – 1.1, 1.2
LO–04AE54
/55

३. लावणी

लावणी महाराष्ट्र का अत्यंत लोकप्रिय लोक नृत्य है। यह नृत्य मुख्य रूप से ढोलकी की ताल पर प्रस्तुत किया जाता है। लावणी में अभिनय, मुखाभिनय और भावपूर्ण गतिविधियों को महत्त्व दिया जाता है।

लावणी गतिविधि १

लावणी गतिविधि २

४. वारली नृत्य

वारली नृत्य वारली आदिवासी समाज का पारंपरिक लोक नृत्य है। यह नृत्य त्योहार, विवाह और आनंद के अवसरों पर किया जाता है। प्रकृति, एकता और सामूहिक जीवन का दर्शन इस नृत्य के माध्यम से होता है। सरलता और उत्साह वारली नृत्य की विशेषताएँ हैं।

वारली गतिविधि १

वारली गतिविधि २

ऊपर दिए गए नृत्यों के प्रथम पृष्ठ पर दिए गए क्यू आर कोड में वीडियो देखो। वीडियो में दिए गए नृत्य का निरीक्षण करो और उसमें दी गई गतिविधियों का अनुकरण, अभ्यास और प्रस्तुति करो!

मेरी कृति

कक्षा में विविध समूह बनाकर प्रत्येक समूह को लोक नृत्य का अभ्यास करके उसे कक्षा में प्रस्तुत करो।

- चित्रों के आधार पर नृत्य की गतिविधियाँ करने में सहायता करें।
- परिचित नृत्यों का वीडियो दिखाएँ और उसका अनुकरण, अभ्यास तथा प्रस्तुति करने के लिए प्रोत्साहित करें।

CG – 1
C – 1.1, 1.2
LO–04AE54/55

१५. नृत्यमय जीवन...

गतिविधियों से नृत्य

हम अपने दैनिक जीवन में अनेक प्रकार की गतिविधियाँ करते हैं। जैसे– चलना, दौड़ना, झुकना, कूदना, हाथ हिलाना आदि। इन दैनिक गतिविधियों का उपयोग नृत्य में भी किया जाता है लेकिन जब इन्हें लय, ताल और भावनाओं के साथ किया जाता है तब ये दैनिक गतिविधियाँ नृत्य की मुद्राओं जैसी दिखाई देने लगती हैं। आओ, ऐसी ही कुछ गतिविधियाँ करके देखेंगे और इनके माध्यम से नृत्य का आनंद अनुभव करेंगे।

नृत्य हमारे आस–पास!

नीचे दी गई गतिविधियों का निरीक्षण करो और उन्हें स्वयं करके देखो !

करके देखो !

दैनिक जीवन में होने वाली ऐसी अन्य गतिविधियों की कक्षा में चर्चा करो और गीत के आधार पर उन क्रियाओं को कक्षा में करके देखो।

- दिए गए चित्रों का निरीक्षण करने के लिए कहें और उन गतिविधियों को प्रत्यक्ष रूप से करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- कक्षा में विभिन्न क्रियाओं और गतिविधियों के बारे में चर्चा करने तथा उन्हें प्रत्यक्ष रूप से करके देखने के लिए प्रोत्साहित करें।

CG – 4
C – 4.1
04AE56/59/61

• हस्त मुद्रा

दैनिक जीवन में हम अपनी हथेलियों और उँगलियों का विविध तरीकों से उपयोग करते हैं। इन गतिविधियों में नृत्य छिपा होता है। आओ ऐसी नृत्यात्मक गतिविधियों का परिचय करते हैं।

आओ, हस्त मुद्राओं की भाषा बोलें!

नीचे दी गई हस्तमुद्रा का दैनिक जीवन में हम किस प्रकार उपयोग करते हैं, इसपर कक्षा में चर्चा करो। उन गतिविधियों का प्रत्यक्ष प्रस्तुतीकरण करके देखो और उसकी एक सूची दिए गए स्थान पर लिखो।

१. अलपद्म हस्त मुद्रा

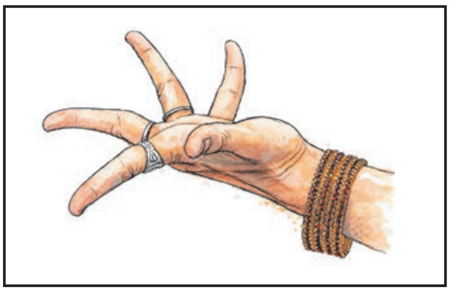

२. सूची हस्त मुद्रा

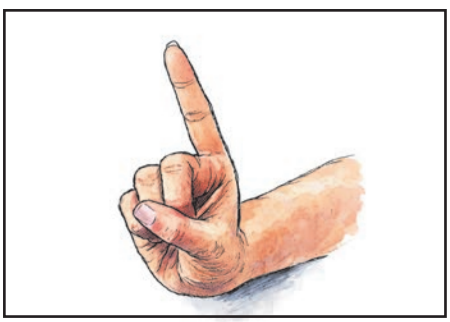

३. शिखर हस्त मुद्रा

• चौखट में दी गई हस्त मुद्राओं का दैनिक जीवन में किस प्रकार उपयोग होता है, इसपर कक्षा में चर्चा करने और उन्हें स्वयं करके देखने के लिए प्रेरित करें।

CG – 4
C – 4.1
04AE56/59/61

चलो, जोड़ियाँ मिलाओ!

अब हमने कुछ हस्त मुद्राएँ देखीं। आगे कुछ चित्र दिए गए हैं, सोचिए कि उनका उपयोग किस लिए किया जा सकता है। अब उलटी कृति करके देखते हैं– दी गई हस्त मुद्राओं से आपको यह पहचानना है कि वे दिए गए चित्रों में से किस चित्र के अनुरूप हैं। रेखा खींचकर उचित जोड़ियाँ मिलाओ।

१.

२. 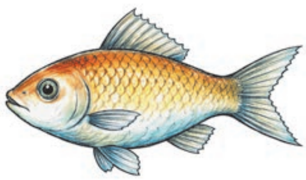

३.

४.

५.

- उचित जोड़ियाँ मिलाने में सहयोग करें।

CG – 4
C – 4.1
04AE59/61

प्रकृति में नृत्यात्मक गतिविधियाँ

प्रकृति में अनेक सुंदर गतिविधियाँ दिखाई देती हैं। पेड़ों के पत्ते और फूल हवा में झूमते हैं, बारिश की बूँदें गिरती हैं, नदी बहती है। इन गतिविधियों में लय, गति और सौंदर्य होता है। नृत्य की गतिविधियाँ भी इसी प्रकार लयबद्ध और सुंदर होती हैं। इसलिए प्रकृति की गतिविधियों से नृत्य की प्रेरणा मिलती है।

प्रकृति में खोजो नृत्य !

नीचे दिए गए चित्रों में दिखाई गई गतिविधियों को पहचानकर उन्हें नृत्यमय तरीके से करके देखो।

१.

२.

३.

- नीचे दिए गए चित्रों में दिखाई गई गतिविधियों को पहचानकर उन्हें नृत्यमय तरीके से करके देखने के लिए प्रेरित करें।

CG – 4
C – 4.1
LO– 04AE59, 04AE61

४.

५.

चर्चा करो!

प्रकृति में देखी गई अन्य क्रियाओं और उन क्रियाओं की नृत्यात्मक गतिविधियों के बारे में चर्चा करो। उनका वर्णन करो और तुलना करो।

करके देखो!

अब तक सीखी विभिन्न गतिविधियों का उपयोग करके पाठ्यपुस्तक में अपनी पसंद की कविता या गीत पर नृत्य की गतिविधियाँ करो।

मेरी कृति

१. प्रकृति के विभिन्न घटकों (नदी, फूल, पक्षी, पेड़, इंद्रधनुष) के सुंदर चित्र बनाओ। प्रत्येक घटक की गतिविधियों को अपनी शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से दिखाने का प्रयास करो। कक्षा में अपनी गतिविधियाँ प्रस्तुत करो और मित्र/सहेलियों की प्रस्तुतियों का निरीक्षण करो।

२. पाठ्यपुस्तक में दिए गए मनपसंद प्रकृति गीत पर नृत्य प्रस्तुत करो।

- प्रकृति में देखी गई क्रियाओं और उन क्रियाओं की नृत्यात्मक गतिविधियों के बारे में चर्चा, वर्णन, तुलना तथा प्रत्यक्ष गतिविधियाँ करके देखने के लिए कहें।
- प्रकृति पर आधारित गीत का चयन करने और उसपर नृत्य प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करें।

CG – 4
C – 4.1
04AE59/61

१६. नृत्य के साथी...

नृत्य करने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण चीजों का साथ होना बहुत आवश्यक होता है। इनके बिना नृत्य का आनंद नहीं लिया जा सकता।

तो चलो, फिर समझते हैं कि नृत्य के कौन-कौन-से साथी होते हैं।

अ. ताल

गाना गाते समय और नृत्य करते समय जो नियमित ठेका सुनाई देता है और जो शरीर की गतिविधियों को गति और दिशा देता है, उसे 'ताल' कहते हैं।

ताल के कारण नृत्य लयबद्ध और सुंदर बनता है, साथ ही उसे एक निश्चित गति से प्रस्तुत किया जा सकता है।

दादरा ताल का खेल खेलेंगे!

सभी ने तळ्यात-मळ्यात (तालाब-मैदान) का खेल खेला होगा। उसी खेल में ताल की मजेदार गतिविधि करके देखेंगे ।

तालाब में कूदते समय ताली बजाएँ और 'धा धिं ना' बोलो। मैदान में कूदते समय कमर पर हाथ रखो और 'धा तू ना' बोलो। इसी प्रकार ताल के बोल बोलते हुए अपनी पसंद की नृत्य गतिविधियाँ करो।

तालाब में कूदते समय ताली बजाना	मैदान में कूदते समय कमर पर हाथ रखना
धा धी ना १ २ ३	धा ती ना ४ ५ ६

ताल में अंतर पहचानो!

ताल के ठेके के अनुसार नृत्य की गतिविधियाँ बदलती हैं। यह समझने के लिए पहले सीखे हुए कहरवा ताल और इस वर्ष सीखे हुए दादरा ताल, दोनों तालों और उनके अंतर पर चर्चा करो। इसके लिए कहरवा और दादरा ताल का प्रथम पृष्ठ पर दिए गए वीडियो क्यू आर कोड की सहायता से देखो और उनमें अंतर समझो।

- कक्षा में कहरवा और दादरा ताल के बारे में चर्चा करने के लिए कहें तथा वीडियो के आधार पर ताल के कारण नृत्य की गतिविधियों में हुए अंतर को विद्यार्थियों को स्पष्ट करें।
- ऊपर दिए गए खेल और ताल के अंतर को क्यू आर कोड की सहायता से दिखाएँ।

CG – 2
C – 2.2
04AE57

ब. वाद्य

आओ, नृत्य में वाद्यों के उपयोग को संक्षेप में समझते हैं।

अलग–अलग प्रकार के नृत्यों के अनुसार अलग–अलग वाद्यों का उपयोग किया जाता है।

कुछ गतिविधियाँ गोलाकार और प्रवाहपूर्ण होती हैं। ये गतिविधियाँ मधुर संगीत पर की जाती हैं। ऐसे समय में बाँसुरी या वायलिन जैसे वाद्यों का उपयोग किया जाता है।

बाँसुरी

वायलिन

बाँसुरी या वायलिन से तैयार किए गए संगीत का ऑडियो सुनकर आँखें बंद करो और संगीत के अनुसार मुक्त गतिविधियाँ करके देखो।

कुछ गतिविधियाँ ताल और ठेके पर की जाती हैं।

ऐसे समय में तबला या मृदंग जैसे ताल वाद्य बजाए जाते हैं। इन गतियों में पैरों के ठेके और पैरों की चाल से निश्चित लय दिखाई देती है।

मृदंग

तबला

- प्रवाहपूर्ण और ठेके पर की जाने वाली गतियों को कक्षा में करके देखने का अवसर दें।
- प्रवाहपूर्ण गति करने के लिए बाँसुरी या वायलिन का संगीत ऑडियो सुनकर आँखें बंद करके मुक्त गतिविधियाँ करने का अवसर दें।

CG – 3
C – 3.1
LO–04AE58/59/60

क्या तुम्हें पता है?

वाद्यों के प्रकार

वाद्य मुख्यतः ४ प्रकार के होते हैं –

- **तंतु वाद्य** – तारों से ध्वनि उत्पन्न होती है। उदाहरण – वीणा, सितार, तंबूरा, सारंगी।
- **ताल वाद्य** – थाप देकर बजाए जाते हैं। उदाहरण – तबला, ढोल, मृदंग, नगाड़ा।
- **वायु वाद्य** – फूँक मारकर बजाए जाते हैं। उदाहरण – बाँसुरी, शहनाई, शंख।
- **घन वाद्य** – दो धातुओं को एक-दूसरे पर आघात करके बजाया जाता है।
  जैसे- ताल, झाँझ-मंजीरा, घंटा, करताल आदि।

ये वाद्य संगीत को लय और मधुरता प्रदान करते हैं।

नृत्य के लिए गीत और वाद्यों का चयन

नृत्य की जानकारी लेंगे!

तुम्हे तुम्हारी पसंद की कविता पर नृत्य रचना तैयार करनी है। इसके लिए अपनी पाठ्यपुस्तक की कविताओं में से किसी एक गीत का चयन करो। इस गीत पर नृत्य करने के लिए तुम कौन-कौन-से वाद्य उपयोग कर सकते हो, इसपर कक्षा में चर्चा करो। साथ ही इस गीत पर तुम कौन-कौन-सी नृत्य गतियाँ कर सकते हैं, इसपर विचार करो और उनका अभ्यास करो।

- नृत्य रचना करने के लिए पाठ्यपुस्तक की कविताओं में से गीत का चयन करने के लिए कहें। उस गीत पर नृत्य प्रस्तुत करने के लिए वाद्यों का चयन और नृत्यात्मक गतियों की रचना करने के लिए मार्गदर्शन करें।

CG – 3
C – 3.1
LO-04AE58/59

मेरी कृति

• नामों का मजेदार खेल!

वाद्यों के नाम खोजकर उनपर गोल करो।

(तुतारी, ताल, बाँसुरी, झाँझ, तबला, डफ, मृदंग, वीणा, ढोल, ताशा)

बाँ	सु	री	ता	शा	त
तु	मा	री	वी	णा	ब
ढो	ता	मृ	प	झां	ला
र	ल	री	दं	झ	टा
ड	फ	ली	स	ग	ळ

• करके देखो

कोई सरल वाद्य तैयार करो या घर से लेकर आओ। (जैसे - मिट्टी का बर्तन, रेत से भरी बाँस की छड़ी, स्टील का गिलास और चम्मच, डमरू, ढोलक आदि।)

इसके बाद 'दादरा' ताल (धा, धि, ना, धा, तू, ना) चुनो। प्रत्येक विद्यार्थी एक अक्षर के लिए एक वाद्य चुनकर बजाए।

पहले एक-एक करके बजाकर देखो फिर सभी मिलकर ताल बजाने का प्रयास करो।

- विद्यार्थियों के समान समूह बनाएँ और सरल वाद्य बनाने के लिए मार्गदर्शन करें। इससे संगीत में तालमेल बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

CG - 3
C - 3.1
LO-04AE58/59

१७. पारंपरिक नृत्य...

नृत्य और नृत्य का गीत

गीत और कविता में शब्दों के साथ भावनाएँ, कल्पनाएँ और सुंदर चित्र छिपे होते हैं। इन भावनाओं और विचारों को हम नृत्य की मुद्राओं और गतिविधियों के माध्यम से व्यक्त कर सकते हैं।

नृत्य की प्रक्रिया को समझेंगे !

१.तुम्हारी पसंद की कोई कविता चुनो और उसे ध्यान से पढ़ो।

२.कविता का अर्थ, उसमें व्यक्त भावनाएँ और प्रसंग समझो।

३.कविता के प्रत्येक शब्द के लिए अलग-अलग अभिनय करना आवश्यक नहीं है। कविता के विचारों को सांकेतिक (प्रतीकात्मक) मुद्राओं और गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत करो।

४.हाथों की मुद्राओं, चेहरे के भावों और शरीर की गतिविधियों का उचित उपयोग करो।

५.कविता की लय और भावनाओं को ध्यान में रखते हुए नृत्य प्रस्तुत करो।

पढ़ो

सोचो

नृत्य करो

- नृत्य की प्रक्रिया को एक उपयुक्त उदाहरण के साथ समझाएँ।
- दी गई सभी सूचनाओं का पालन के लिए मार्गदर्शन करें।

CG - 3
C - 3.2
LO-04AE60

आओ, कविता पर नृत्य करके देखें!

तुम्हारी पसंद के गीत पर नृत्य रचना करने के लिए आपस में चर्चा करके नृत्यात्मक गतिविधियों का चयन करो। चुनी गई गतिविधियों का अभ्यास करो और प्रत्यक्ष रूप से नृत्य प्रस्तुत करो।

स्वर्गात आकाशगंगा,
गंगेला सोनेरी घाट
घाटाला पायऱ्या शंभर,
झाला आनंद आली बहार ॥ ध्रु ॥

घाटाशी लावीला एक,
एक स्वर्गीय कल्पतरू
तरूला फांद्या शंभर,
झाला आनंद आली बहार ॥१॥

तरूच्या फांदीवर,
फुले फुलती नक्षत्रांची
फुलाला पाकळ्या शंभर,
झाला आनंद आली बहार ॥२॥

सुटलं वारं जोरात,
फुले विखुरली पाण्यात
तरंग उठले शंभर,
झाला आनंद आली बहार ॥३॥

गंगेला आला पूर ,
अहो पुराचं पाणी चढलं
बुडाल्या पायऱ्या शंभर,
झाला आनंद आली बहार ॥४॥

– रत्नाकर मतकरी

भावार्थ

स्वर्ग है आकाशगंगा,
गंगा में स्वर्णिम घाट।
घाटों पर सीढ़ियाँ सौ–सौ
छाया आनंद, आई बहार ॥ ध्रु ॥

घाट किनारे लगा हुआ है,
एक दिव्य कल्पतरु।
तरु की शाखाएँ सौ–सौ
छाया आनंद, आई बहार ॥१॥

तरु की हर एक डाली पर,
तारों जैसे फूल हैं खिलते।
फूल की पंखुड़ियाँ सौ–सौ,
छाया आनंद, आई बहार ॥२॥

जोरों से जब हवा चली तो,
फूल बिखर गए जल के भीतर।
लहरें उठीं फिर सौ–सौ,
छाया आनंद, आई बहार ॥३॥

गंगा में फिर बाढ़ जो आई,
बढ़ता गया जल का विस्तार।
डूब गईं सीढ़ियाँ सौ–सौ
छाया आनंद, आई बहार ॥४॥

- विभिन्न पंक्तियों पर नृत्य प्रस्तुत करने के लिए गतिविधियों की कल्पना करके नृत्य रचना करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करें।

CG – 3
C – 3.2
Lo–04AE60

नृत्य एवं संस्कृति

महाराष्ट्र में अनेक पारंपरिक नृत्य प्रकार पाए जाते हैं। इन नृत्यों में उस प्रदेश की जीवनशैली, वेशभूषा और संगीत का सुंदर प्रतिबिंब दिखाई देता है। उदाहरण के लिए लावणी, कोळी नृत्य, तारपा नृत्य, लेजीम, वाघ्या मुरली, पावरा नृत्य, वारकरी नृत्य आदि।

तारपा नृत्य

लेजीम नृत्य

आओ, नृत्य पर चर्चा करें!

तुम्हारे परिसर में प्रस्तुत किया जानेवाला कोई एक नृत्य या लोकनृत्य का प्रकार खोजो। उस पर कक्षा में चर्चा करो। इसके साथ ही अपने मित्र-सहेलियों के साथ नृत्य की ४-५ सरल गतिविधियाँ करके देखो।

नृत्य का चित्र बनाओ!

किसी वारली चित्र का संदर्भ लेकर अपनी कल्पना के अनुसार 'वारली नृत्य' का चित्र बनाओ।

- वारली चित्रों में दिखाए अनुसार विद्यार्थियों को नृत्य की गतिविधियाँ करने के लिए कहें। जैसे- एक-दूसरे के हाथ पकड़कर घेरा बनाना और गोलाकार घूमते हुए नृत्य करना।

CG - 4
C - 4.2
LO-04AE62

सीखेंगे – नाचेंगे !

उपलब्ध सांस्कृतिक या पारंपरिक नृत्य का निरीक्षण करो, उसमें की जाने वाली गतिविधियों का अनुकरण, अभ्यास और प्रस्तुति करो!

मेरी कृति

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर खोजो।

१) चित्र में कौन-सा नृत्य प्रकार दिखाई दे रहा है?
२) नृत्य करते समय किन-किन वाद्यों का उपयोग किया गया है?
३) किस प्रकार खड़े होकर नृत्य किया जा रहा है?
४) वेशभूषा कैसी है?

- परिचित सांस्कृतिक / पारंपरिक नृत्य (जैसे वारकरी नृत्य) का वीडियो दिखाएँ और उसका अनुकरण, अभ्यास तथा प्रस्तुति करने के लिए प्रोत्साहित करें। ऐसे सांस्कृतिक कला प्रदर्शनों को देखने तथा संस्कृति के महत्त्व को समझने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करें।

CG – 4
C – 4.2
LO-04AE62

१८ . कला संस्कृति...

हमारी संस्कृति और परंपराएँ विज्ञान से जुड़ी हुई हैं जिनसे आनंदमय जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। ऋतुओं के अनुसार आने वाले त्योहारों, उत्सवों तथा परंपराओं के माध्यम से प्रत्येक ऋतु में हमारे स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त भोजन, वस्त्र और विभिन्न कलाओं का प्रदर्शन देखने को मिलता है। इस संस्कृति को संरक्षित रखने से लोग एक साथ आते हैं, आपसी संबंध मजबूत होते हैं और सभी मिलकर आनंद मनाते हैं। साथ ही विभिन्न कलाओं और कलाकारों का सम्मान भी बढ़ता है।

त्योहारों और उत्सवों के अवसर पर नृत्य, नाटक, सजावट, मूर्तिकला, चित्रकला, गायन, वादन आदि कलाओं का प्रदर्शन किया जाता है।

हमारे त्योहार – हमारे उत्सव

तुम्हारे परिसर में मनाए जाने वाले त्योहारों और उत्सवों की सूची बनाओ। उनमें से किसी एक त्योहार या उत्सव के चित्रों, छायाचित्रों और समाचारपत्रों की कतरनों सहित जानकारी संग्रहीत करके सुंदर सजावट करो।

पहचानो एवं प्रसंग लिखो

नीचे दिए गए चित्रों में दर्शाए गए प्रसंगों को पहचानकर उन त्योहारों एवं उत्सवों के बारे में जानकारी लिखो।

तुम्हारे परिसर में मनाए जाने वाले किसी त्योहार या पर्व का निरीक्षण करके उसमें प्रस्तुत कला-प्रसंग का समूह में प्रस्तुतीकरण करो।

- अपने राज्य की विभिन्न लोककलाओं, त्योहारों-उत्सवों, पारंपरिक खेलों तथा खाद्य संस्कृति की कलात्मक विशेषताओं को विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से समझाइएँ।

CG -4
C- 4.1/4.2
LO-
04AE20/21/39/
38

दैनिक उपयोग की विभिन्न वस्तुओं का भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसमें विभिन्न कला क्षेत्रों के कलाकार भी सहभागी होते हैं। इस अवसर पर हमें विभिन्न कलाकारों से परिचित होने का अवसर मिलता है।

मिट्टीकाम

वारली चित्रकला

नर्तकी

भारूड़ कलाकार

वासुदेव

रंगभूषाकार

गायिका

- तुम्हारे परिसर में मनाए जाने वाले त्योहारों और उत्सवों का अवलोकन करके उनमें दिखाई देने वाली कला और प्रसंग का समूह में प्रस्तुतीकरण करो।

CG –4
C–4.2
LO–
04AE39/52

क्षेत्र भ्रमण :

स्थानीय कला और संस्कृति को समझने के लिए क्षेत्र भ्रमण बहुत महत्त्वपूर्ण है। क्षेत्र भ्रमण का अर्थ है-किसी स्थान पर जाकर वहाँ की कला, कलाकारों और परंपराओं का प्रत्यक्ष अवलोकन करना। ऐसी यात्राओं से अपने आस-पास के कलाकारों के कार्य को निकट से देखने का अनुभव मिलता है।

जैसे- मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कारीगर, चित्रकला के कलाकार या हस्तशिल्प तैयार करने वाले लोगों को कार्य करते हुए प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। कलाकार मिट्टी, रंग, कपड़ा अथवा अन्य सामग्रियों का उपयोग करके सुंदर वस्तुएँ कैसे बनाते हैं, यह समझने का अवसर मिलता है।

क्षेत्र भ्रमण के समय बरती जाने वाली सावधानियाँ

जब किसी कलाकार की कार्यशाला या स्थानीय प्रदर्शनी का भ्रमण करो तब निम्न बातों का पालन करो।

- **निरीक्षण :** कलाकार अपने हाथों या औजारों का उपयोग कैसे करता है इसका शांतिपूर्वक निरीक्षण करो।
- **प्रश्न पूछना :** मन में आने वाले प्रश्न विनम्रता से पूछो।
- **अंकन बनाना :** देखी गई बातों और प्राप्त जानकारी को अपनी कॉपी में लिखो।
- **स्वच्छता एवं अनुशासन :** क्षेत्र भ्रमण करते समय बिना अनुमति किसी वस्तु को हाथ मत लगाओ तथा वहाँ गंदगी न करो।
- **कृतज्ञता :** क्षेत्र भ्रमण समाप्त होने पर कलाकार का धन्यवाद देना न भूलो।

साक्षात्कार :

परिसर में मनाए जाने वाले त्योहारों और उत्सवों के अवसर पर प्रस्तुत विभिन्न कला रूपों का अवलोकन करो।

वासुदेव, पिंगळा, नंदीबैलवाला, चित्रकार, मूर्तिकार, गायक, वादक, मिट्टी का काम करने वाले, लकड़ी का काम करने वाले, फूलों की सजावट करने वाले, नर्तक-नर्तकी तथा रंगकर्मी आदि कलाकारों में से किसी एक या अधिक कलाकार का साक्षात्कार लेकर उनकी कला के बारे में जानकारी प्राप्त करो। इसके लिए कक्षा में साक्षात्कार हेतु प्रश्न तैयार करो।

मेरी कृति

१) तुम्हारे मनपसंद त्योहार या उत्सव का चित्र बनाओ तथा उसमें दिखाई देने वाले कलात्मक तत्वों के बारे में जानकारी लिखो।

२) परिसर के कलात्मक दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करके उनके बारे में जानकारी लिखो।

३) तुम्हारे परिसर के किसी एक कलाकार से मिलकर उनकी कला एवं कार्य के बारे में साक्षात्कार लेकर उसका विवरण वृत्तांत (रिपोर्ट) के रूप में लिखो।

४) स्थानीय कलाकारों की पसंदीदा कला से संबंधित चित्र, फोटो, समाचारपत्रों की कतरनें तथा जानकारी एकत्र करके प्रकल्प बनाओ।

- स्थानीय कला और परंपराओं पर समूह चर्चा आयोजित करें तथा विद्यार्थियों को क्षेत्र भ्रमण और कलाकारों के साक्षात्कार लेने के लिए प्रोत्साहित करें।

CG -4
C- 4.2
LO-
04AE21/38/39

नोंदी

प्रिय विद्‌यार्थी मित्रो और सहेलियो,

यदि तुम्हें कोई अयोग्य ढंग से स्पर्श करता है और तुम असमंजस या असहज अनुभव करते हो तो तुम कदापि चुप मत रहो। ऐसी घटना होने पर तुम्हें निम्न बातें करना आवश्यक है।

१) स्वयं को दोष मत दो।

२) जिन लोगों पर तुम्हें विश्वास है; उनसे घटित घटना के बारे में बताओ।

३) तुम **पॉक्सो ई-बॉक्स** के माध्यम से तुम्हारे अधिकारों की रक्षा हेतु स्थापित राष्ट्रीय आयोग को भी सूचित कर सकते हो।

जब कोई तुम्हें अनुचित/अयोग्य ढंग से छूता है/स्पर्श करता है तब तुम्हें बुरा लग सकता है। तुम परेशान और भ्रमित हो सकते हो। तुम स्वयं को असहाय महसूस कर सकते हो परंतु तुम्हें 'बुरा' लगने का कोई कारण नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसी घटना में तुम्हारा कोई दोष नहीं होता है।

इस बटन को दबाओ।

POCSO यह e-box ncpcr@gov.in इस वेबसाईट पर उपलब्ध है।

यदि तुम्हारी आयु १८ वर्ष से कम है और तुम्हें किसी ने सताया है/ तंग किया है और तुम कुछ समझ नहीं पा रहे हो, चिंतित अथवा तनावग्रस्त महसूस कर रहे हो अथवा इस प्रकार की परेशानी अनुभव करने वाले किसी लड़का/लड़की को जानते हो तो तुम १०९८ (दस नौ आठ) पर संपर्क करो। ऐसा करने से तुम्हारा और तुम्हारे मित्रों/सहेलियों का जीवन बदल सकता है।

CHILD LINE
1098
NIGHT & DAY

चाइल्ड लाइन १०९८ (दस नौ आठ) : यह २४ घंटे टोल फ्री राष्ट्रीय आपातकालीन फोन सेवा है। महिला एवं बालविकास मंत्रालय द्‌वारा पीड़ित लड़कों/लड़कियों के लिए यह उपक्रम चाइल्ड लाइन फाउंडेशन ने प्रारंभ किया है।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

विद्‌यार्थियों को उनके आयुगुट के अनुसार अच्छा स्पर्श और बुरा स्पर्श पहचानने के लिए शारीरिक एवं भावनिक दृष्टि से मार्गदर्शन करें।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे –४११ ००४.

कलाशिक्षण इयत्ता चौथी (हिंदी माध्यम)

(नि:शुल्क वितरण के लिए)

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha

कलाशिक्षण इयत्ता चौथी (हिंदी माध्यम)